भेड़ियाधसान

मूल्य १॥) डेढ़ रुपया

चित्र

विरिंचि-बाबा



नौ नम्बर हबसी-बगान लेनकी 'मेस' है तो छोटीसी, पर रहती खूब साफ-सुथरी है। वजह यह कि उसके मैनेजर निवारण मास्टर पूरे मसखरे होनेपर भी सबपर कड़ी निगाह रखते हैं। 'मेस' में रहनेवालोंकी संख्या तो कुल पांच-ही-सात है, पर हैं सब घरके पक्के रईस। बैठने-उठनेके लिये अलग बैठक है, जिसमें बढ़िया फ़र्श लगा हुआ है, तरह-तरहके बाजे, ताश चौसर, तथा और-और खेलनेकी चीजें जहां-की-तहां ढंगसे रक्खी हुई हैं, कुछ पत्र-पत्रिकाएँ तथा और भी इसी प्रकारकी मनोरञ्जनकी चीजें अपनी-अपनी जगहपर सुशोभित हैं।

कलसे दुर्गा-पूजाकी छुट्टिया लग गई है, इससे 'मेस' के लगभग सभी लोग देश चले गये है। रह गये सिर्फ निवारण और परमार्थ। ये कहीं जायगे नहीं, क्योंकि दोनोंके मुसराल-वाले सब कलकत्ते ही आ रहे हैं।

निवारण कालेजमे पढाते है। परमार्थ इन्स्योरेन्सकी दलाली, हठयोग और थियोसौफीकी चर्चा करते है। आज शामको 'मेस'की बैठकमे ये दोनों, और पासवाले मकानके निताई बाबू गप्प मार रहे थे। निताई बाबू करीब-करीब रोज ही यहा आते और गप लडाया करते हैं। उम्र कुछ ज्यादा होनेके कारण 'मेस' के और-और छोकडे उनका जरा अदब करते है, यानी उनकी तरफ पीठ करके सिगरेट पिया करते है।

निताई बाबू कह रहे थे—"चित्तमे शान्ति नही है भइया। कहारिन सुसरी आती नहीं, लडकीको बुखार आता है, श्रीमतीजी कान खाये जाती है, आफिसमे जाकर ही दो मिनट सो लूं सो भी नहीं, नया छोटा-साहब क्या आया है एक बला आई है, दिन-रात चरखीकी तरह घूमता ही रहता है—"

परमार्थ बोल उठा—"क्यो। आपके आफिसमे तो बडा अच्छा इन्तजाम है?"

निताई—"वे दिन चले गये भइया, वे दिन अब नहीं रहे। हा, जमाना था तो एक मैकेन्जी साहबकी अमलदारीमे था।—बरदा-चचाको जानते हो न? श्यामनगरके मुकर्जी-साहब। चचा दो बजे

सत्यव्रतने बुँचकीको खोज निकाला, और कहा—"सुनिये, जरा चाय पिला सकेंगी ? निवारण भइया भी आते होंगे। उफ् ! गला चिर-सा गया है।"

बुँचकीने कहा—"चिरेगा नहीं ?—इतना चिल्ला रहे थे। पानी चढाये देती हूं, बैठ जाइये जरा।—अच्छा, बापूजीके सामने आपने क्या काण्ड कर डाला, कहिये तो सही ? क्या सोचते होंगे वे मनमें ?"

सत्यव्रतने मन-ही-मन कहा, तुम्हारे पिताजी तो बेहोश पड़े थे। बुँचकीसे कहा—"जरा कुछ ज्यादती हो गई, क्यों ? सचमुच बडी गलती हो गई, अब ऐसा कभी न होगा। आपके पिताजीसे माफी मांगकर, उन्हें खुश करके, तब घर लौटूंगा।"

बुँचकी—"बापूजीको काहेकी खुशी और काहेका रंज। बस, जी-भर रहे हैं, कौन क्या कहता-सुनता है, उन्हें मालूम भी नहीं पडता।"

सत्यव्रत—"न रहेगी, हमेशा ऐसी हालत न रहेगी। आप देख लीजियेगा।—लीजिये, निवारण-भइया भी आ रहे हैं।"

रात के करीब नौ बजे हैं। होम शुरू हो गया है। भक्तोंका झुंड पहलेसे ही कूच कर चुका था, होम-गृहमें हैं सिर्फ विरिंचि-बाबा,

गुरुदास बाबू, बुँचकी, मामाजी, निवारण, सत्यव्रत और गोवर्द्धन बाबू। आप एक विशिष्ट भक्त हैं, आपने बाबाजीके लिये एक तिमंजिला आश्रम बनवा देनेका वचन दिया है। होम-गृह छोटासा है, दरवाजे और जंगले सब बन्द हैं, प्रवेश-द्वारपर मामाजी खड़े हैं, किसीको घुसने नहीं देते। छोटे-महाराज, अर्थात् केवलानन्द, बाबाके नैश-आहारके लिये 'चरु' बनानेमें अन्यत्र व्यस्त हैं। घरमें एक छोटासा घृत-प्रदीप टिमटिमा रहा है। विरिंचि-बाबा योगासनमें ध्यानमग्न हैं। सामने होमकुण्ड है। पीछे गुरुदास बाबू और उनकी कन्या बुँचकी बैठी हुई है। उनके पास ही एक तरफ निवारण और सत्यव्रत, और दूसरी तरफ गोवर्द्धन बाबू बैठे हुए हैं।

बहुत देर तक ध्यानस्थ रहनेके बाद विरिंचि-बाबाने पञ्चपात्रसे जल लेकर चारो तरफ छिड़क दिया। घृत-प्रदीप बुझ गया। होमाग्निकी शिखा नहीं थी, सिर्फ कुछ अंगारे सुलग रहे थे। इतनेमें विरिंचि-बाबाने मुँहपर हाथ कपाकर बड़े जोरोंसे गाल बजाना शुरू कर दिया। उस गम्भीर 'बु-बु-बु-बु' के निनादसे क्षुद्र गृह कम्पित होने लगा।

सत्यव्रतने चुपकेसे बुँचकीके कानमें कहा—"बुँचकी, डर लगता है?"

बुँचकीने जवाब दिया—"नहीं तो।"

सहसा होमकुण्डमें से नीलाभ अग्नि-शिखा निकली। उस क्षीण अस्पष्ट प्रकाशमें सबने देखा, महादेव ही तो हैं।—होमकुण्डके पीछे

व्याघ्रचर्म-धारी अस्थिमाला-विभूषित पिनाक-डमरू-पाणि धवलकान्ति खासे महादेव ही तो है।

गुरुदास बाबू निर्वाक् निश्चल बैठे हैं। गोवर्द्धन मल्लिक अपने कारोबार और तृतीय विवाहिता पत्नी सम्बन्धी सारे अभाव-अभियोग करुण स्वरसे देवाधिदेवसे निवेदन करने लगे। गणेश-मामा शिवस्तोत्रका पाठ करने लगे,—जिसे उनकी छोटी लड़कीने महाकाली-पाठशालामे सीखा है।

निवारणने चुपकेसे सत्यव्रतसे कहा—"हाँ, अब।—"

सत्यव्रत जोरसे चिल्ला उठा—"बम्। बाबा महादेव।"

थोडी देरमे सहसा एक हल्ला-सा हो उठा। फिर चिल्लाकर किसीने कहा—"आग लग गई।"

विरिंचि-बाबाका गाल बजाना बन्द हो गया। वे चञ्चलतासे इधर-उधर ताकने लगे। मामाजी तावडतोड घबडाकर बाहर चले-गये।

"आग—आग—आग लगी है—निकल आइये जल्दी—।"

घना धुआँ कुण्डली-सी बनाकर घरमे घुसने लगा। विरिंचि-बाबा एक छलागमे घरसे बाहर निकल आये। गोवर्द्धन बाबू भी हाय-तोबा मचाते हुए बाबाके पीछे-पीछे आ पहुँचे। बुँचकीने पिताजीका हाथ पकडकर कहा—"बापूजी, बापूजी, उठो।"

निवारणने कहा—"अभी मत जाइये, बैठिये, कोई डर नहीं है।

महादेव होशमे आये। घबगये बेचारे। लगे इधर-उधर झाँकने।

निवारणने मोमबत्ती जला दी। महादेवजी पीछेके दरवाजेसे भागनेकी तैयारी ही कर रहे थे, कि इतनेमें सत्यव्रतने उठकर उन्हें जकड़कर पकड़ लिया।

महादेवजी बोले—"अरे रे। छोड़—छोड़—लगती है। सच्ची, अभी दिल्लगी अच्छी नहीं लगती—चारो तरफ आग लग रही है।—छोड़ दे, देख मान जा।"

सत्यव्रत—"अरे, इतनी जल्दी क्यो? थोड़ी बातचीत तो होने दो। जरा बताओ भी तो, कितने दिनोंसे यह देवनागीरी कर रहे हो?"

बाहरसे दो-चार आदमी होम-घरमे घुस आये। केवलानन्दको फेंकू पांडेके हाथ सौंपकर निवारण और सत्यव्रत विस्मय-विमूढ़ गुरुदास बाबू और उनकी कन्याको बाहर ले आये।

मकानमे आग नहीं लगी थी। बगलके कमरेमे किसीने भीगा पुआल सुलगा दिया था, उसीका धुआँ चारो तरफ फैल गया था। दरवान, मौलवी साहब, कोचवान तथा अमोला हवला आदि सत्यव्रतके अनुचरोंने झूठमूठकी हल्ला मचा दिया था।

बिरिचि-बाबा जलते जल गये, पर ऐंठ नहीं गई। बोले—"कहो गुरुदास, अब आशा पूरी हुई? जो नास्तिक है, उसके दिव्यदृष्टि कहासे होगी? तुम्हारे भाग्यसे देवताने दर्शन भी दिये, पर फिर भी



"अरे रे ! छोड़—छोड़—लगती है !"

वञ्चित रह गये। अन्तमे मनुष्यका रूप बनाकर परिहास कर गये।"

सत्यव्रतने कहा—"परिहास भी तो आखिर देवताका ठहरा। महादेव सड गये, निकला किवला। विरिंचि-बावा हो गये जुआचोर, तिडीबाज।"

गोवर्द्धन बाबू बोले—"बच्चू, हमारे साथ चालाकी॥ पाँच-पाँच हाउसके मुसद्दी हैं हम, बडे-बडे अगरेजोंको चराया करते हैं,—हमे ठगने आये हो तुम?—मारो सालेको, लगाओ दो थप्पड दोनो गालोपर—"

गुरुदास बाबू अब तक होशमे आ चुके थे। कहने लगे—"नहीं नहीं, जाने दो, जाने दो।—सत्यव्रत, बग्घी जुतवाकर जरा इन लोगोंको स्टेशन पहुचानेका इन्तजाम कर दो। किसीको कुछ कहने-सुननेकी जरूरत नहीं। जाने दो, छोड दो।"

बोरिया-बंधना तैयार हो जानेपर सत्यव्रतने स्वय जाकर शिष्य-सहित विरिंचि-बाबाको गाडीमे बिठा दिया। विदा करते वक्त सत्यव्रतने कहा—"प्रभु, तो आप अब जायँगे ही? अच्छा जाइये, चन्द्र-सूर्य आप हीके जिम्मे रहे, देखियेगा, कहीं चालमे फर्क न आने पावे। चाबी देना मत भूलियेगा, और बीच-बीचमे औइल भी करते रहियेगा।"

भीड घट जानेपर गुरुदास बाबू बोले—"बेटा निवारण, बेटा सत्यव्रत,



"हट"

तुम लोगोंने मुझे बचा लिया,—इस उपकारको मैं कभी न भूलूंगा। आज तुम लोग यहींपर खाओ-पीओ, रात बहुत हो चुकी है, यहीं सो रहो, अब सबेरे जाना।—यह क्या, सत्यव्रत। तुम्हारी बांहमें खून कहासे आया?"

सत्यव्रत—"कुछ नहीं, धींगामस्ती करते समय महादेवने ज़रा काट लिया था। आप चिन्ता न करें, जाकर आराम कीजिये, सब ठीक हो जायगा।"

गुरुदास—"तो तुम मेरे साथ आओ, बुंचकी टिन्चर-आयडिनसे पट्टी बांध देगी।"

खा-पीकर सत्यव्रत बोला—"उफ्। कैसी आफतमें जान है।"

निवारणने कहा—"क्यों, अब और क्या हो गया?"

सत्यव्रत—"निवारण-भइया।"

निवारण—"बतायेगा भी।"

सत्यव्रत—"निवारण-भइया।"

निवारण—"आखिर कह भी डाल।"

सत्यव्रत—"मैं बुंचकीसे व्याह करूंगा।"

निवारण—"सो तो मैं पहले ही से जानता था। पर तेरे साथ अगर न व्याहे?"

सत्यव्रत—"जरूर ब्याहेगा, बुँचकीका बाप ब्याहेगा।"

निवारण—"अच्छा, मान लिया, बाप राजी भी हो गया, पर लड़की अगर न चाहे?—तो?"

सत्यव्रत—"वह तो बड़ा गड़बड़ जवाब देती है।"

निवारण—"क्या कहती है?"

सत्यव्रत—"कहती है,—हट।"

निवारण—"अरे गधा! 'हट' के मानी ही हैं 'हाँ'।"

श्रीश्री सिद्धेश्वरी लिमिटेड



शुभ मिती मगसिर वदि १, सं० १९७९। अरमनी-गिरजाकी घड़ीमें अभी-हाल ग्यारह बजे हैं। श्याम बाबू हाथमें एक चमड़ेका बैग लटकाये जैक्शन लेनके एक तिमँजिले मकानमें दाखिल हुए। मकान बहुत पुराना था—लगातार चूने और रंगके पलस्तरसे बेचारेकी हालत

मिजाज-पसन्द बुड्ढेसे भी गई-बीती थी। नीचे उसके माल भरनेका गोदाम है। अंधेरा जरूरतसे ज्यादा रहता है। दूसरे मंजिलेपर सामनेकी तरफ 'गद्दियाँ' हैं और पीछे उसके विभिन्न जातीय अनेक गृहस्थोंका वास है। प्रवेश-द्वारके सामने ही ऊपर जानेकी काठकी सीढ़ियाँ हैं। "थूकना मना है"—नोटिस लगा रहनेपर भी सीढ़ीके आस-पासकी दीवाल पानकी पीकसे लाल हो गई है। छोटे-छोटे चूहे और तिलचट्टे परस्पर अहिंस-भाव धारणकर इधरसे उधर विचरण कर रहे हैं। आश्रम-मृगकी तरह वे निःशङ्क हैं—सीढ़ीसे चढ़ने-उतरनेवाले यात्रियोंका उन्हें जरा भी खौफ नहीं। मोरीकी दुर्गन्धने, अन्तरालवर्ती सिन्धी परिवारके रसोई-घरसे निकली हुई हींगकी तीव्र गन्धके साथ मिलकर, सम्पूर्ण स्थानको आमोदित कर रक्खा है। गद्दियोंके मालिकोंका इस तुच्छ विषयपर जरा भी ध्यान नहीं है, वे लेवा-बेची, तेजी-मन्दी और नावें-जमा आदि महत् कार्योंमें लगे हुए हैं।

श्याम बाबूने तीसरी मंजिलपर जाकर एक कमरेका ताला खोला। कमरेके बाहर, दरवाजेके पास, एक लकड़ीके बोर्डपर लिखा हुआ है—"ब्रह्मचारी ऐण्ड ब्रदर-इन-ला, जनरल मर्चेण्ट्स्।" इस कारोबारके मालिक हैं स्वयं श्याम बाबू और उनके साले विपिनचन्द्र चौधरी बी० एस-सी०। कमरेके अन्दर, कई पुरानी टेबिल-कुर्सियाँ और आलमारी वगैरह आफिसके कामकी चीजें पड़ी हुई हैं। एक टेबिलपर कई तरहके खाते और रजिस्टर, बहुतसे बाँटनेके छपे हुए विज्ञापन,

थैकर्सकी एक पुरानी डिरेक्टरी, एक 'इन्डियन कम्पनीज ऐक्ट', पृथक्-पृथक् कम्पनियोंकी कई-एक नियमावली या articles और बहुतसे फुटकर कागजात रक्खे हैं। दीवालपर लगे हुए 'स्टैन्ड' पर बहुतसी दवाईकी शीशियाँ और ताँबेके रीते तावीज पड़े हुए हैं। किसी समय श्याम बाबू स्वप्नदोप आदिकी पैटेन्ट औपधियोंका कारोबार करते थे, उसीकी यह स्मृति है।

श्यामबाबूकी अवस्था लगभग पचासकी होगी। चेहरा गहरा काला है, दाढी कुछ सफेद और कुछ काली, सिरके बाल पीछेकी तरफ गरदन तक झूल रहे हैं, देह स्थूल है और उसपर बहुतसे रोएँ हैं। छुटपनसे ही उनकी स्वाधीन व्यवसायकी तरफ लगन है, पर आज तक नाना प्रकारके व्यापार करनेपर भी विशेप सफलता प्राप्त नहीं हुई है। ई० आई० रेल्वेके आउट आफिसकी नौकरी ही उनके जीवन-निर्वाहका प्रधान उपाय है। देशमे कुछ देवोत्तर-सम्पत्ति और एक जीर्ण काली-मन्दिर है, परन्तु उसकी आमदनी काफी नहीं है। नौकरीसे छुट्टी मिलनेपर व्यवसायकी कोशिश करते है, और इस विपयमे उनके साले बिपिन ही प्रधान सहायक हैं। सन्तानादि कोई नहीं है, कलकत्तेमें किरायेपर मकान लेकर स्त्री और सालेके साथ रहते हैं। व्यवसायमे कुछ तरक्की होनेपर नौकरी छोड देंगे, ऐसी उनकी हार्दिक इच्छा है। फिलहाल आपने छ महीनेकी छुट्टी लेकर नये सिलसिलेसे "ब्रह्मचारी ऐण्ड ब्रदर-इन-ला" नामकी कम्पनी खोली है।



‘मेती — [illegible] तीन’

अफीम खाते थे, और ढाई बजेसे साढे-चार बजे तक सोते थे। हम लोग तो जब टिफिन-रूममें जाकर सुस्ती भी उतार आया करते, पर चचा कुरसी भी न छोडते थे। एक दिनकी बात है, लेजर का जोड लगाते-लगाते चचा ज्यों ही पन्ने के नीचे पहुंचे कि जब मौका आ

गया। हले भी नहीं, गरदन तक न झुकी, 'लेजर'के ठीक टोटलके पास कलम पकडे बैठे हैं। असाधारण क्षमता थी—दूरसे मजाल क्या कि कोई कह दे, चचा सो रहे हैं। इतनेमें मैकेन्जी साहब कमरेमें आ पहुचे,—सब काममे लगे हुए हैं, मानो किसीको इतनी भी फुरसत नहीं कि मुँह उठाकर किसीकी तरफ देख भी सके। साहब चचाके पास जाकर बहुत देर तक देखते रहे, फिर कंधेपर चुटकी भरकर पीछे खडे हो गये। चचा चौंक पड़े, आँख खोलनेसे पहले ही बडबडाने लगे—'सैंतीसके साथ, हाथ-लगे तीन।' साहबने हँसकर कहा—'हैव् ए कप आव् टी, बाबू।' (बाबू, एक प्याला चाय पीलो)—सो भइया, अब न वे राम ही रहे और न वह अयोध्या। संसारसे मुझे तो नफरत होने लगी है। सचमुच, कोई अच्छासा साधु-सन्यासी मिले तो सब छोड-छाडकर चल दूँ।"

परमार्थ—"जगन्नाथ-घाटमे आज एक साधुको देखा था,—भई बड़ा तअज्जुब होता है। लोग उन्हे मिरचई-बाबा कहते हैं। वे सिर्फ मिर्च ही खाते हैं,—रोटी नहीं, दाल नहीं, भात नहीं,—सिर्फ मिर्च। हजारों लाखों आदमी दवाई लेने पहुचते हैं, बाबाजी सबको एक-एक मन्त्र-भरी मिर्च देते जाते हैं, उसीसे सभीके सब रोग दूर हो जाते हैं। सुनते हैं, उनके जो गुरुजी है, उनकी साधना और भी ऊँचे दर्जेकी है। वे खाते है—सिर्फ लकडीकी बुकनी, जो आरीसे काटनेपर निकलनी है।"

निताई—"क्यों भ'ई मास्टर, तुमने तो फिलासफीमें एम० ए० पास किया है,—मिर्च, लकडीकी बुकनी, इन सबका आध्यात्मिक तात्पर्य क्या है, बतला सकते हो?—बन्द करो यार अपनी ठुमकियोंको, कानोंके कीडे निकले आते हैं।"

निवारण मास्टर पहले तो एक मासिक पत्र हाथमे लिये उसके पन्ने उलट रहे थे। उसमे चार-पाँच कहानियाँ बडी अच्छी छपी थीं, प्रत्येककी नायिका एक-एक मूर्तिमान् सती-साध्वी वाराङ्गणा थी। फिर, न मालूम क्या ध्यानमे आया, तबलेकी जोड़ी लेकर बैठ गये, और लगे ठनकाने। निताई-बाबूकी बात कानमें पडते ही थमकर बोले— "ये तो भ'ई, भिन्न-भिन्न साधनाके मार्ग हैं। जैसे ज्ञान-माग, कर्म-मार्ग, भक्ति-मार्ग,—इसी तरह मिरचई-मार्ग, बुकनी-माग, नमक-मार्ग, एकादशी-मार्ग, गोबर-मार्ग, चोटी-माग, दाढी-मार्ग, काक-मार्ग—"

निताई—"काक-मार्ग कैसा?"

निवारण—"काक-मार्ग नहीं जानते?—गई साल हरिहर-छत्रके मेलेमे गया था। देखता क्या हू, कि एक जगह बडे-भारी एक बाँसके पिंजडेमे डेढ-दो सौ कौए काँव-काँव कर रहे हैं। पास ही एक आदमी बैठा हुआ आवाज लगा रहा है—'दो-दो आने कौआ, दो-दो आने।' मैंने सोचा, शायद पेशावरी या मुल्तानी कौए होंगे, पढ़ना तो जरूर ही जानते होंगे। एक बूढे-से कौएके पास जाकर मैंने सीटी देकर कहा, पढो बेटा, चित्रकूटके घाटपर,—सीता-राम, राधा-किसन,

पर वह तो चोंच मारने आया। कौआ-वाला बोला, 'बाबू, कौआ पढ़ता नहीं।' —तो क्या करता है? कौएका मांस तो सुनते हैं, कड़ुआ होता है, शायद सुक्त बनानेके लिये खरीदते होंगे? बोला, 'नहीं, यह बात नहीं। ये कौए पिंजड़ेमें कैद हैं, दो-दो आने खर्च करके आप जितने चाहें खरीदकर, जीवोंको बन्धन-दशासे मुक्ति दिला सकते हैं, आपकी भी मुक्ति होगी।' सोचने लगा, मोक्षका मार्ग है तो बड़ा विचित्र। दूसरे लोग मुक्ति पायगे, इसलिये यह गरीब बेचारा अपना परलोक बिगाड़ रहा है। इसीको कहते हैं conservation of virtue (धर्म-रक्षा)।— बिना एकके पाप किये, दूसरेको पुण्य हो ही नहीं सकता।"

ये बातें हो ही रही थीं कि इतनेमें एक हैट-कोट-धारी बाईस-तेईस वर्षका छोकड़ा कमरेमें आ धसा, और एलेक्ट्रिक फैनके रगुलेटरको आखिर तक ढकलकर हैटको जरा जोरसे पटकता हुआ फर्शपर धमसे बैठ गया। इसका नाम है सत्यव्रत। फिलहाल आप पढ़ाई-लिखाईसे इस्तीफा देकर किसी काम-धन्धेकी फिराकमें घूम रहे हैं। सत्यव्रतने हाँफते हुए कहा—"उफ! कैसी आफतमें फँसा हूँ—'

सत्यव्रत हमेशा ही आफतमें फँसा करता है, इसलिये उसकी बातपर किसीने उत्कण्ठा जाहिर नहीं की। क्या करता बेचारा, अपने-ही-आप कहने लगा—"दिन-भर आफिसमें हड्डी-तोड़ परिश्रम करके, शामको जरा जी बहला सकूँ, इतनी भी फुरसत नहीं। मनमें आई, आज मेटिनिमें 'सीता' देख आऊँ। बस, बुआजी कह बैठीं, 'सतो,

तू बिगडा जा रहा है, चल मेरे साथ, सन्डेलजीकी वक्तृता सुनना।' क्या करता, जाना पडा। पर सब झूठ। सन्डेलजी कह रहे थे धर्म-जीवनकी मधुरता, और मैं सोच रहा था तिलचट्टा।"

निताई—"तिलचट्टा!!"

सत्यव्रत—"हाँ, तीन टन तिलचट्टा। फारवर्ड कन्ट्राक्ट है, नवेम्बर-दिसम्बरका शिपमेण्ट, चालीस पौन्ड पन्द्रह शिलिंग टन, सी-आई-एफ, हाङ्गकाङ्ग। चायनामें लडाई शुरू होनेवाली है न, उसके लिये पहले ही से रसद इकट्ठी की जा रही है। बडे साहबका हुक्म है, एक महीनेके अन्दर तमाम माल पीपेमें भरकर तैयार हो जाना चाहिये। कहाँसे मिलें, बतलाइये? उफ्! बडी आफतमें जान है।"

निताई—"क्यों भाई सत्यव्रत, तुम तो ब्राह्मजी हो न, तुम्हारे यहाँ तो झूठ बोलना मना होगा?"

सत्यव्रत—"क्यों, मना क्यों होने लगा। हाँ, बुआजीके सामने-भर नहीं बोलना चाहिये, बस, छुट्टी हुई।"

निवारण—"सत्यव्रत, तुम्हारी तलाशमें कहीं अच्छे बाबाजी-आबाजी भी हैं, या वैसे ही?"

सत्यव्रत—"कितने चाहिये?"

निताई—"इन्हें भी दो, शेखी न मारो।—तुम लोग तो मन्त्र-तन्त्र मानते ही नहीं, फिर बाबाजीकी बात ही क्या?"

सत्यव्रत—"क्यों, मानने कैसे नहीं?—उस दिन बुआजीकी बातमें

दर्द हो रहा था,—खाना-पीना छूटा, नींद गई, बोलना तक पहाड़ दिखाई देने लगा,—फूफाजीको डॉट-भर सकती थीं। घर-भर तंग आ गया। पिपरमेन्ट, एस्पिरिन, गंडा, तावीज, पीर, मियाँ, सब-कुछ कर छोड़ा, मगर किसीसे भी कुछ न बन पड़ा। आखिर फूफाजीने ऐसी जोरकी प्रार्थना शुरू की कि तीन ही दिनके अन्दर दाँत टूटकर अलग आ गिरा।"

परमार्थको गुस्सा-सा आ गया, बोला—"सुनो सत्यव्रत, तुम जिस बातको समझते नहीं, उसमें मजाक मत किया करो। प्रार्थना कहो चाहे मन्त्र-साधना, दोनों एक ही बात है। मन्त्र-साधनासे प्रचण्ड ऐनर्जी (शक्ति) उत्पन्न होती है, इसे तो शायद मानते होगे?"

सत्यव्रत—"ज़रूर, ज़रूर। गवाही भी लो, राजशाहीके तड़ितानन्द महाराज, कालेजके लड़के जिन्हें रेडियो-बाबा कहते हैं। बाबाजीके दो तो चोटियाँ हैं,—एक 'पौज़िटिव', दूसरी 'नेगेटिव'। आकाशसे इलेक्ट्रिसिटी खींच लेते हैं। एक-एक 'स्पार्क' फटकारते हैं अठारह-अठारह इञ्च लम्बी। मजाल क्या कि कोई पास जा सके,—सिल्ककी चद्दर ओढ़कर दर्शन करने पड़ते हैं।"

निवारण—"ऊँ हु। मिरचई, बुकनी, बेदान्ती, इलेक्ट्रिसिटी, इनमेंसे एक भी निताई बाबूको 'सूट' न करेगा। अगर कोई निरीह भोले-भाले बाबाजी तलाशमें हों, तो बताओ। मगर कोई करामात ज़रूर चाहिये, कोरे भक्ति-तत्वसे काम न चलेगा। क्यों, निताई बाबू?"

परमार्थ—"तो फिर दमदम चलिये, गुरुदास बाबूके बगीचेमें,—विरिंचि-बाबाके पास।"

निवारण—"कौन, अलीपुर-कोर्टके वकील गुरुदास बाबू? हमारे प्रोफेसर नवनीके ससुर? उन्हें बाबाजी कहांसे मिल गये? सत्यव्रत, तुम भी कुछ खबर रखते हो, या ऐसे ही?"

सत्यव्रत—"नवनीके मुंह सुना तो है, किसी गुरु-उरुके चक्करमें आ गये हैं। स्त्रीके मरनेके बादसे बेचारेका मन बिलकुल ही बदल गया है। पहले तो किसीको भी नहीं मानते थे।"

निवारण—"गुरुदास बाबूके एक कुँआरी लड़की है न?"

सत्यव्रत—"है न।—बुँचकी, नवनी-भइयाकी साली।"

निवारण—"हाँ, परमार्थ, बाबाजीकी तारीफ तो सुनाओ, कैसे हैं?"

परमार्थ—"भई, तअज्जुब होता है। कोई कहता है उनकी उमर पाँच सौ बरसकी है, कोई कहता है पाँच हज़ार बरस। पर देखनेमें निताई बाबू जैसे लगते हैं। बाबाजीसे कोई पूछता है तो वे ज़रा हँसकर जवाब देते हैं—'उमर नामकी संसारमें कोई वस्तु ही नहीं है। काल,—सब एक ही काल है, स्थान,—सब एक ही स्थान है। जो सिद्ध हैं, वे त्रिकाल और त्रिलोकका एक ही साथ भोग करते हैं।' जैसे मान लो,—अभी सेप्तेम्बर १९२५ है, तुम हबसी-बगानमें रहते हो। विरिंचि-बाबा चाहें तो अभी तुम्हें अकबरके टाइममें आगरा, या, फोर्थ सेन्चुरी बी० सी० में (ईस्वी सन्से ४०० वर्ष पहले) पाटलीपुत्र

नगरमे पहुचा सकते हैं। असलमे, सभी विषय अपेक्षासे सम्बन्ध रखते हैं, समझे।"

निर्वाण—"तब तो आइनस्टाइनकी मट्टीपलीद ही समझो ?"

परमार्थ—"अरे रक्खो आइनस्टाइनको, उसने सीखा कहांसे ?—सुनते हैं, विरिंचि-बाबा जब चेको-स्लोवाकियामे तपस्या करते थे, तब आइनस्टाइन वहाँ चक्कर लगाया करता था।—लेकिन उसकी विद्या रिलेटिविटीसे ज्यादा नहीं बढ़ी।"

निताई बाबू कान लगाये सब सुन रहे थे। पूछने लगे—"हा, यह तो बताओ, आइनस्टाइनकी थिओरी क्या है ?'

परमार्थ—"आप समझे नहीं,—स्थान काल और पात्र, ये तीनों परस्पर एक दूसरेपर निर्भर है। अगर स्थान बदले, तो पात्र भी बदलेगा।'

सत्यव्रत—"कहु! आपसे कहत नहीं बना। मैं आसानीसे समझाता हू, सुनिये: मान लीजिए, आप एक वजनी आदमी हैं, इन्डियन एसोसियेशनमे पहुंचे, वहा आपका वजन २ मन १० सेर हुआ। वहांसे गये आप गोंडातल्ला कांग्रेस-कमेटीमे,—वहा वजन रह गया सिर्फ ४ छटांक, फूंकसे उड़ गये।"

निवारण—"बिल्कुल ठीक। जनार्दन पॉड़ सहीसे तो लाता है ढाई सेर माल, और 'मस'मे आते ही तौलो तो सवा-दो सेर।",

निताई—'अच्छा परमार्थ, एक बात तो बताओ। विरिंचि-बाबा

खुद तो त्रिकाली सिद्ध पुरुष ठहरे, उनकी बात छोड़ दो। भक्तोंके लिये भी कुछ मुश्किल आसान कर सकते हैं ?'

परमार्थ—"क्यों नहीं, पर ऐसे-वैसेको नहीं,—होना चाहिये सत्पात्र। उस दिन तो मेकोराम अगरवालेकी तकदीर ही पलट दी। तीन दिनके लिये उसे नाइन्टीन-फोर्टीनमें (सन् १९१४ में) पहुंचा दिया—ठीक लड़ाईसे पहले। मेकोरामने पांच हजार टन लोहेके गार्डर खरीद लिये, छ रुपये मनमें। उसके बाद बाबाजीने एक मास तक उसे नाइन्टीन-नाइन्टीनमें (सन् १९१९में) रक्खा। मेकोरामने सब बेच दिया इक्कीस रुपयेके भावपर। फिर उसे वर्तमान,समझो खींच लाये। मेकोराम अब पन्द्रह लाखका आदमी है। इतमीनान न हो, जोड़कर देख लो।"

निताई बाबूसे रहा न गया। परमार्थके दोनों हाथ पकड़कर गद्गद होकर बोले—"ओ भइया परमार्थ,भइया रे,ले चल मुझे अभी विरिंचि-बाबाके पास। बाबाजीके चरणोंमें जान दे दूंगा। खर्च जितना लगे, सब मैं दूंगा; थाली-लोटा सब बेच-बाचकर, हाथ-पैर जोड़कर जैसे बने वैसे उससे दस तोलेकी हमेल लेकर गिरवी रक्खूंगा।—बाबाजीकी कृपासे अगर हफ्ते-भर भी नाइन्टीन-फोर्टीनमें चक्कर लगा आया, तो परमार्थ, तुम्हें जिन्दगी भर न भूलूंगा। टेन-पर-सेन्ट, (दस रुपया सैकड़ा)—समझे ? हा भगवान, हाय रे लोहा।"

निवारण—"गुरुदास बाबूने कुछ तरी भी जमाई है ?"

परमार्थ—"उन्हें इहलोककी चिन्ता ही नहीं,—परलोककी फिक्र

है। सुनते हैं, धन-दौलत, जमीन-जायदाद, सब गुरुको अर्पण कर देंगे।"

निवारण—"अच्छा। इतने फिसले?—क्यों भई सत्यव्रत, तुम्हारे नवनी भइया, तुम्हारी भाभी, कोई कुछ नहीं कहते-सुनते?"

सत्यव्रत—"नवनी-भइयाको तो जानते ही हो,—सनकी आदमी ठहरे, चौबीस घन्टे 'एक्सपेरिमेन्ट'—अपनी ही धुनमें मस्त रहते हैं। और भाभी बेचारी सीधी-सादी हैं, किसीसे कुछ कहती-सुनती नहीं।—उन लोगोंसे कुछ नहीं हो सकता।, हां, करें तो हम तुम कुछ कर भी सकते हैं। पर देरीका काम नहीं।"

निवारण—"तो चलो अभी प्रोफेसरके पास। सब हाल अच्छी तरह जानकर, फिर दमदम चलेंगे।"

निताई बाबू कागज़-पेन्सिल लेकर लोहेका हिसाब लगा रहे थे। दमदम चलनेकी बात सुनकर बोले—"तुम लोग भी बाबाजीके पास चलोगे? पर सबका एक साथ जाना क्या ठीक होगा? तुम सब मिलकर हुल्लड़बाजी करोगे,—बाबाजी भड़क जायँगे। सब गुड़-गोबर—कर दोगे। जिसमें सत्यव्रत एक तो समाजी, दूसरे दुनिया-भरका शरारती, उसका जाना तो बिलकुल फिज़ूल है।—अरे भई, तुम्हारे यहां तो आलीशान समाज-मन्दिर मौजूद है, वहां जाकर हाय-हत्या क्यों नहीं मचाते? हमारे देवी-देवताओंपर क्यों नज़र डालते हो?

मेरी समझसे तो पहले मैं चलूँ और परमार्थ। उसके बाद फिर किसी रोज़ निवारण हो आयेंगे।"

निवारण—"नहीं नहीं, आप डरिये मत। हम लोग जरा भी हुल्ड़ न मचायेंगे, सिर्फ ज़रासा शास्त्रालाप करेंगे, बस। मौका लगा तो कल शामको सब एक साथ चले चलेंगे।"

प्रोफेसर नवनीने आज तक कभी प्रोफेसरी नहीं की, पर डिग्रियाँ बहुतसी हासिल की हैं। आप घर ही में नाना प्रकारकी वैज्ञानिक गवेषणाएँ किया करते हैं, इसलिये मित्र-दोस्त उन्हें प्रोफेसर कहकर पुकारा करते हैं। रोज़गारकी कोई फ़िक्र नहीं, क्योंकि पिताकी जायदाद काफी है। नवनी गुरुदास बाबूके दामाद हैं, सत्यव्रतके दूरके नातेसे भाई लगते हैं और निवारणके क्लास-फ्रेन्ड।

रातको, करीब आठ बजे, निवारण और सत्यव्रत नवनीके मकानपर पहुचे। बाहरवाले कमरेमे कोई न था। नौकरने कहा—"बाबूजी और बहूजी, दोनों भीतर आँगनमे हैं।"

निवारण और सत्यव्रतने अन्दर जाकर देखा, तो आँगनके एक तरफ एक चूल्हेपर बडी-भारी डेगचीमे हरे रंगका कोई पदार्थ खौल रहा है, नवनीकी स्त्री निरुपमा उसे लकडीसे टार रही है। बगलके चबूतरे पर एक हारमोनियम रक्खा है, उसमेंसे एक रबरका नल निकल



'लकड़ीसे टार रही है।'

कर डेगचीके भीतर तक चला गया है। प्रोफेसर ननी धोती-ओर्त सम्हालकर कमरपर हाथ धरे खड़े हैं।

निवारणने कहा —"भाभी, यह क्या। इतना साग किसके लिये रांध रही हो ?"

निरुपमाने उत्तर दिया—"साग नहीं है, घास उबाली जा रही है। उनको तो धुन सवार है, कुछ नहीं तो घास ही उबलवा रहे हैं।"

निवारण—"क्यों, बिना उबाले क्या भाई साहबको कच्ची घास हजम नहीं होती ?"

नवनी—"निवारण, मजाक मत समझो। अब संसारमें अनाजकी कमी न रहेगी।"

निवारण—"पर दुनियामें सभी तो प्रोफेसर नवनी या गैंथ करनेवाले जीव नहीं हैं, जो घास खाकर जिया करेंगे ?"

नवनी—"अरे मूरख, तब तक क्या यह घास ही बनी रहेगी ? प्रोटीन सिन्थेसिस हो रहा है। घास हाइड्रोलाइज होकर कार्बोहाइड्रेट हो जायगी। उसमें दो एमिनो-ग्रुप मिलाते ही, बस। हेक्सा-हाइड्राक्सीडाइ-एमिनो—"

निवारण—"रहने दो, रहने दो।—अच्छा, हारमोनियम क्यों रख रक्खा है ?"

नवनी—"समझे नहीं ? अक्सिडाइज करनेके लिये। निरो, जरा बजा ना हारमोनियम।"

निरुपमाने हारमोनियमके पेंडल चलाये। आवाज नहीं निकली, हवा रबरकी नलीमें होकर सीधी डेगचीमें जाकर पुद्क-पुद्क करने लगी।

निवारण—"अरे, ये तो सिर्फ बुलबुले ही उठकर रह गये। मैंने समझा था कि सङ्गीत-रस हारमोनियमसे निकलकर सीधा डेगचीमें जाकर सब्ज-अमृतकी सृष्टि करेगा। खैर।—भाभी, अपने बापूजीका हाल तो सुनाओ, क्या करते रहते हैं आजकल ?"

निरुपमाने उदास मनसे कहा—"सुना नहीं आपने ? माके मरनेके बादसे न मालूम कैसी हालत हो गई है। गणेश-मामा कहींसे एक गुरू पकड़ लाये हैं, रात-दिन चौबीस घन्टे उन्हींमें तन्मय रहते हैं। ऊपरी होश-हवास तो है ही नहीं, सिर्फ गुरू-गुरू-गुरू करते रहते हैं। बहुत रोई-बिलखी, पर कुछ भी मतलब न निकला। सुनती हूँ, रुपये-पैसे, जमीन-जायदाद, सब गुरूको दे देंगे। मुझे तो बुँचकीकी फिक्र है। उन्हींके पास चलकर रहती, पर सासुजी बीमार हैं, इससे नहीं जा सकी।"

सत्यव्रत बोला—"नवनी-भइया, तुम क्यों नहीं समझाते-बुझाते ? तुम्हारा कहना तो जरूर मान लेंगे।"

नवनी—"यह कैसे हो सकता है ? ससुर-साहब समझेंगे कि जायदाद पानेके लोभसे मैं उनका धर्म नष्ट करने आया हूँ।"

सत्यव्रत—"तो हुक्म दो, 'प्रहारेण धनञ्जय' बना दूँ।"

निरुपमा—"नहीं नहीं, ज़ोर-ज़ुल्म करना एक तरहसे बापूजीको ही सताना है। बापूजीको तकलीफ न देकर उनके गुरू बाबाजीको दुरुस्त कर सको, तो करो कोशिश।"

सत्यव्रत—"यह तो टेढी खीर है। अच्छा भाभी, जरा यह तो बताओ, विरिंचि-बाबा करते क्या रहते हैं ?"

निरुपमा—"अरे, महीना-भर हो गया, न मालूम क्या किया करते हैं। बगीचेमे रहते हैं, साथमे एक चेला है—छोटे महाराज केवलानन्द। गणेश-मामा खिदमत किया करते हैं। बापूजी दिन-रात वहीं पडे रहते है। रोज दो-दो तीन-तीन सौ भक्त लोग आकर सिर रगडा करते है, विरिंचि-बाबाकी अजब-अजब बातें सुनकर दग रह जाते हैं। हर इतवारको रातको होम होता है, उसमें एक-एक दिन एक-एक देवता निकला करते हे। किसी दिन रामचन्द्र, किसी दिन ब्रह्मा, किसी दिन ईसामसीह, किसी दिन महादेव। हर किसीको वहा घुसने भी नहीं दिया जाता, जो बहुत ज्यादा भक्त हैं, वे ही भीतर जा सकते हैं। ब्रह्मा निकलनेके दिन मै तो वहा थी।"

सत्यव्रत—"अच्छा। तब तो । हा, क्या देखा वहा ?"

निरुपमा—"मे अच्छी तरह देख कहा पाई ? अधेरे घरमे होमकुण्डके पीछे परछांई-सी दीखी थी—चार मुँह थे, लम्बी-लम्बी दाढी थी। मेरी तो देखते ही दाँती मिच गई—बेहोश होकर गिर पडी। गणेश-मामाने मुझे बाहर निकाल दिया। बुँचकीको तो हिम्मत भी है, हमेशा देखती रहती है न। हां, कल सुनती हू, महादेवजी निकलेंगे।"

निवारण—"चलिये, कल हम लोग विरिंचि-बाबाके चरणोंके दर्शन

कर आवें, अगर उनकी कृपा हो गई, तो सम्भव है महादेवके भी दर्शन हो जायँ।"

निरुपमा—"पहले गणेश-मामाको वश करो,—नहीं तो, विना उनके हुक्मके, भीतर भी न जाने पाओगे।"

निवारण—"सो मैं सब भुगत लूँगा। लेकिन सत्यव्रत,—सत्यव्रतको साथ ले जानेकी हिम्मत नहीं पडती।—हाँ, तुम मुँह-फट आदमी ठहरे, झट हँस दोगे।"

सत्यव्रतने अपने सारे शरीरको हिलाकर कहा—"हरगिज नहीं।—तुम देख लेना,—हँसनेवालेकी ऐसी-तैसी "

निवारण—"अरे हैं। जीभ क्यों निकालते हो?"

सत्यव्रत—"वेरी योर पार्डन, भाभी (माफ करना भाभी), वाल-वाल वच गया। बुआजीके सामने कह देता तो आफत आ जाती।"

निवारण—"अच्छा तो अव चलते हैं। हाँ, एक वात तो रह ही गई। प्रोफेसर, कोई ऐसी चीज वताओ, जिससे खूब धुआँ निकले?"

नवनी—"कैसा धुआँ? अगर लाल धुआँ चाहो, तो नाइट्रिक ऐसिड ऐन्ड तावा, वैंगनी चाहो तो आयोडिन वेपर, हरा चाहो—"

निवारण—"अरे, नहीं-नहीं। प्लेन धुआँ चाहिये।"

नवनी—"तो ट्राइ-नाइट्रो-डाइ-मिथाइल—"

निवारणने कानपर हाथ धरकर कहा—"फिर वही शुरू कर दिया! भाभी, इनसे आपकी वनती कैसे होगी?"

निरुपमाने हँसकर कहा—"मैंने अपनी ननसालमें देखा है, ग्वाल-घरमें भीगा पुआल जला देते हैं, खूब धुआँ होता है।"

निवारण—"भाभी, अबकी बार तुम्हें ही नोबेल-प्राइज़ मिलेगा, नवनी-भइया यो ही रह जायगे।"

निरुपमा—"क्यों, धुआँकी क्यो ज़रूरत पड गई ?"

निवारण—"छछूँदर बहुत ऊधम मचा रहे हैं, देखें वे भागते हैं या नहीं।"

गुरुदास बाबूका बगीचा पहले खूब हरा-भरा था, पर उनकी स्त्रीका देहान्त होनेके बादसे उसकी सुन्दरता बिलकुल जाती रही है। हालमें विरिंचि-बाबाके अधिष्ठानके लिये मकानकी मरम्मत कराई गई है, और जगल भी कुछ-कुछ साफ करा दिया गया है, परन्तु पहलेकी-सी बात उसमे अब भी नहीं आ पाई है। गुरुदास बाबू गृहस्थीकी कुछ भी चिन्ता नहीं रखते, उनके साले गणेश ही अब उनके यहा सपरिवार आधिपत्य कर रहे हैं।

शामको पाच बजे निवारण, सत्यव्रत, परमार्थ और निताई बाबू आ पहुचे। मकानके नीचेवाले एक बडे कमरेमे जाजम बिछाकर भक्तवृन्दोके बैठनेका इन्तजाम किया गया है। पास ही एक तख्त बिछा हुआ है, तख्तपर गद्दी है और गद्दीपर व्याघ्र-छापका आसन।

यही विरिंचि-बाबाका आसन है। बगलके कमरेमें भक्त-महिलाओंके बैठनेकी जगह है। बाबाजी अभी अपनी साधना-कुटीसे उतरे नहीं हैं। भक्तोंका झुंड ऊपरको मुह किये उत्सुकतासे बैठा हुआ है, और धीमे स्वरसे बाबाजीकी महिमा बखान रहा है। एक हैट-कोट-सूट-धारी प्रौढ़ व्यक्ति अशेष कष्ट सहकर पैर समेटे बैठे हैं, और अधीर होकर बीच-बीचमें अपनी छिली हुई मूँछें ऐंठ रहे हैं। ये हैं मिस्टर ओ० के० सेन, बार-ऐट-ला। फिलहाल आपने कोयलेकी खानके काममें बहुतसा नुकसान उठाकर धरम-करममें चित्त लगाया है।

परमार्थ और निताई बाबूको भीतर बिठाकर निवारण और सत्यव्रत बाहर आये, और बगीचेमें चारो तरफ घूमते-घामते फाटकके पास पहुचे। फाटकके पास ही श्रेणीबद्ध टालीसे छये हुए गाडी, घोड़ा, कोचवान, दरवान, माली आदिके रहनेके कई-एक घर बने हुए थे। अस्तबलके सामने मौलवी बसीरुद्दीन एक टूटी बेञ्चपर बैठे हुए कोचवान झोटी मियाँ और दरवान फेंकू पाडेके साथ गप-शप कर रहे थे। मौलवी साहब फरीदपुरके रहनेवाले हैं। आप गुरुदास बाबूके प्रधान मुहर्रिर हैं। गुरुदास बाबूके वकालत छोड़ देनेसे बसीरुद्दीनकी आमदनी घट गई है, परन्तु अब भी उन्हें नियमित रूपसे तनख्वाह मिला करती है, इसलिए अक्सर वे मालिककी सलामी बजाने आया करते हैं।

सत्यव्रतने कहा—"आदाब-अर्ज, मौलवी साहब। मिजाज शरीफ? पालागन, पाँड़ेजी।—कोचवान साहब, मजेमें हैं न? इन्हें पहचानते

हैं ?—निवारण बाबू हैं, जमाई बाबूके दोस्त। पूजाके लिये कुछ भेंट लाये हैं,—कुछ ख्याल न कीजियेगा, मौलवी साहब,—आपके लिये दस रुपये, पांडेजी और कोचवान साहबके लिये पांच-पांच रुपये, सईस और माली, इनके लिये पांच अलग।"

इस भलमनसाहतसे मुग्ध होकर बसीरुद्दीन, फेंकू और झोंटीने दांत निकालकर बार-बार सलाम किया, तथा खुदा और काली-माईसे बाबुओंकी तरक्कीके लिये प्रार्थना की।

मौलवी साहब बोले—"अजी बाबूजी साहब, वे दिन न जाने कहा चले गये। जबसे मा-साहबाने बिहिश्त पाया, तबसे हमारे बाबूजी साहबकी जान ही कलेजेमें नहीं रही। इतना समझाया,—हुजूर, ऐसी चलती हुई वकालतको न बिगाड़िये। पर कौन सुनता है ?—खुदाकी मरजी। भला कैसे मिट सकती है।"

निवारणने कहा—"अरे,इस बाबाजीने ही तो सारी रेड मारी है,—जड़ तो यही है।"

फेंकू पांडेको कुछ हिम्मत-सी आगई, बोला—"विरिंचि-बाबा कोई बाबाजी थोड़े ही है। उनके न तो जनेऊ है, न जटा। मास-मछली, बकरेका गोश्त, सब खाते हैं। दोनों वखत, साझ-सवेरे चाय-बिस्कुटके बिना उनका काम ही नहीं चलता। बाबूजी, ये सब बगाली बाबा लोग लफंगे जुआचोर हैं। और छोटे महाराज जो है, वे पूरे बिच्छू है, हिम्मत तो देखिये। फेंकू पांडे पर डक मारना चाहता है।—"

फॅंकूको कुछ जोश-सा आ गया, अपनी वीरताका हवाला देता हुआ कहने लगा—"अभी बच्चूको मालूम नहीं कि इसी फॅंकू पाडेने मिउटिनीमे ग़दरमे तलवार फिराई थी (यद्यपि फॅंकूका उस समय जन्म भी न हुआ था)। एक दफे अगर मालिक हुकुम दे दें, तो मारे लट्ठोंके बाबाजी-आबाजी, सबकी हड्डियोंका चूरमा बना दिया जाय।"

मौलवी साहबने फरमाया—"हमे भी कम ज़िल्लत नहीं उठानी पडी है। मामा साहब (गणेश) हमपर रुआब दिखावें, यह हमसे बरदाश्त नहीं हो सकता। हम खानदानी आदमी है, हमारी नसोमे मुग़लोंका खून वह रहा है। अगरचे हमे लोग बसीरुद्दीन कहते है, पर हमारा असली नाम है मर्दूम खाँ। हमारे वालिदका नाम है जहाबाज खाँ और बाबाका अब्दुल जब्बर। हमारा आदि-निवास फरीदपुर नहीं, बल्कि अरब है, जिसको कि तुर्ख कहते है। वहा सभी कोई लुगी पहनते हैं और उर्दू-फारसीमे बात करते है। हमे तो सिर्फ पेटके लिये यहाकी बोली सीखनी पडी है। उस अरब देशके बीचमे इस्ताम्बूल है, उसकी बाईं ओर बगदाद शहर है। यह कलकत्ता शहर तो उसके मुकाबले महज छोटा है। बगदादके दाईं तरफ मक्का-शरीफ हैं, वहाके पवित्र कूएँका पानी आब-ए-जमजम हमारे पास शीशीमे भरा रक्खा है। मालिक अगर इजाजत दें, तो उस पानीको छिडककर दोनो बाबाजीको, मय मामा साहबके, उस—सात समुन्दरके पार—जहन्नुमके चौराहेपर पहुचा सकता हू।"

निवारणने कहा—"देखिये, मौलवी साहब, हमें इन बाबा लोगोंको भगाना ही है। अगर मौका लगा, तो आज ही। पर यह काम अकेलेसे नहीं बनेगा। आप और पाडेजी साथ रहें, तो हो सकता है।"

फेंकू—"मार-पीट होगी न ?"

निवारण—"अरे, नहीं-नहीं। उसकी जरूरत नहीं। सिर्फ जरा हो-हल्ला मचाना होगा। मचा सकोगे न ?"

फेंकू—"जरूर। अलबत। पर मालिक अगर गुस्सा हों ?"

निवारणने समझा दिया कि मालिकके गुस्सा होनेकी कोई वजह ही न रहेगी। थोड़ी देर बाद आकर वे सब बातें बता देंगे।

निवारण और सत्यव्रत विरिंचि-बाबाके दरबारकी तरफ चल दिये। रास्तेमें गणेश-मामा मिल गये,—बेचारे बड़ी जल्दीमें थे, होमके इन्तजाममें जा रहे थे। निवारण और सत्यव्रतको देखकर बोले—"अच्छा। आ गये तुम लोग ? अच्छी बात है। हे-हे—घरमें सब कुशल है न ? हें-हे—निवारण, तुम्हारे पिताजी मजेमें ? हे-हें—तुम्हारी मा अब जरा ? हे-हें—और छोटी बहन ? हें-हें—सत्यव्रत, तुम्हारे फूफाजी, बुआ सब—"

निवारणके घरके सब कोई हे-हे। सत्यव्रतके घरवाले भी हें-हे। सब-कुछ गणेश-मामाके आशीर्वादका फल है। मामाजीको मारे फिक्रके नींद नहीं आती थी, अब जरा निश्चिन्त हुए।

सत्यव्रतने कहा—"मामा, आपके छोटे दमादकी कहीं नौकरी-औकरी लगी ?—अगर न लगी हो, तो छुट्टियोंके बाद ही हमारे आफिसमें एकबार भेजियेगा, एक वेकेन्सी है।"

गणेश—"जीते रहो बेटा, जीते रहो। तुम लोग ठहरे अपने आदमी, बिना तुम्हारी कोशिशके भला कैसे कुछ हो सकता है ? आफिस खुलते ही वह तुमसे जाकर मिलेगा।"

निवारण—"मामाजी, एक बात है।—देव-दर्शन करा दीजिये।"

गणेश—"हाँ हाँ, जाओ बाबाजीके पास, सभी कोई गये हैं, जाओ।"

निवारण—"उनके तो दर्शन करेंगे ही। असली देवताके भी दर्शन करना चाहते हैं,—होम-घरमें।"

गणेश-मामा, दाँतो तले जीभ दबाकर बोले—"बाप रे। सो कैसे हो सकता है। कितनी साधना करनेके बाद तब कहीं अधिकार मिलता है भीतर जानेका, और तुम्हारा यह सत्यव्रत तो—क्या नाम—क्या कहते हैं उसे—"

निवारण—"ब्रह्मज्ञानी—समाजी है। पर अभी तक उसे ब्रह्मज्ञान नहीं हुआ है। सत्यव्रतको दैत्यकुलमें प्रह्लाद समझिये,—अपने सनातनी-पनको उसने नष्ट नहीं किया है। गीताका पाठ करता है, थियेटर देखता है, सत्यनारायणकी सिन्नी, मदनमोहनका भोग, काली-घाटका परसाद, सब खाता है, और—कहना तो नहीं चाहिये, आप

बडे-बूढे ठहरे,—इसकी दो-चार बोलियाँ सुनेंगे तो आप जान जायँगे कि यह बडे-बडे सनातनियोंके भी कान काट सकता है।"

गणेश—"कुछ भी करे, पर जाति नष्ट होनेपर फिर वह वापस नहीं आती। तुम भी तो, सुनते हैं, भक्ष्य-अभक्ष्य सब खाते हो?"

निवारण—"सो तो सभी खाते हैं। गुरुदास बाबूने भी बहुत खाया है।—तो क्या दर्शन न हो सकेंगे? बिलकुल ही निराश करेंगे? अच्छा,—तो जाता हू।"

सत्यव्रत—"प्रणाम मामाजी। हा, एक बात कहनी है,—मेरी समझसे अपने दमादको आप चार-पाँच महीने टायपराइटिंग सीखने दीजिये। अभी बिलकुल रगल्ट है,—पीछे मुझे ही साहबके सामने शर्मिन्दा होना पडेगा। नेक्स्ट वेकेन्सीमें कोशिश की जायगी।"

गणेश—"अरे, नहीं, नहीं। नौकरी एक बार जहा हाथसे निकली, तहा गई ही समझो, फिर मिलना मुश्किल ही है। नहीं सत्यव्रत, यह मौका हाथसे न जाने देना। हाँ, क्या कहते थे तुम? अब गीता-ईता पढने लगे हो? बडी अच्छी बात है। तो,—होम-घरमें जानेमें ऐसी कोई बाधा भी नहीं है। जरा गङ्गाजल सिरपर छिडककर जाना,—तुम दोनों ही जा सकते हो। अच्छा,—तो नौकरीकी याद न भूले।"

गणेश-मामाके कुछ दूर निकल जानेपर निवारणने कहा—"अब तक

तो सफलता मिलती आई है, अन्त तक मिले तब है। अमोला, हवला, वगैरह सब आ गये?"

सत्यव्रत—"हाँ, वे दरवाजे में बैठे हैं। ऐन मौकेपर हाजिर होंगे।—अच्छा हाँ, मामाका भी इसमें कुछ साझा है क्या?"

निवारण—"भगवान जानें। पर इतना जरूर है कि गुरुदास बाबू जब तक गृहस्थीसे उदासीन रहेंगे, तभी तक मामाजीके गहरे हैं।"

विरिंचि-बाबा सभा सुशोभित किये बैठे हैं। काफी लम्बा-चौड़ा चेहरा है, मुँह गोरा है, उभरे हुए गालोंकी ओटमेंसे दोनों आँखें जैसे झाँक रही हों। दो पैसेवाले समोसे-सी सुबृहत् नाक है, मृदु हास्य-मण्डित चौड़े ओठ हैं, उसके नीचे धारीदार ठोडी शोभा दे रही है। मूर्ति सचमुच ही स्वामीजी बनने क़ाबिल थी। शरीरपर गेरुआ चोगा-सा पहने हैं, मस्तकपर कनटोपा है। उमर ठीक पाँच हजारकी नहीं जचती,—पचास या पचपनके मालूम देते हैं। बाबाकी वेदीके नीचे दाईं तरफ छोटे महाराज केवलानन्द विराज रहे हैं। इनकी उमर कै शताब्दीकी है, भक्तोंने अभी तक इसका अन्दाजा नहीं लगाया है, फिर भी देखनेमें खूब जवान-से मालूम पड़ते हैं। ये भी गुरुके अनुरूप वेश-धारी हैं, हाँ, धोती सस्ते दामकी है। वेदीके नीचे, बाईं ओर शीर्णकाय गुरुदास बाबू वेदीसे सिर लगाये अर्ध-शायित अवस्थामें पड़े

हैं, जाग्रत हैं या निद्रित, कुछ समझमें नहीं आता। बगलके कमरेमें महिलाओंकी प्रथम पंक्तिमें एक सोलह-सत्रह बरसकी लडकी लाल साडी पहने, बाल बखेरे बैठी है, और बीच-बीचमें गुरुदास बाबूकी तरफ करुण नेत्रोंसे निहार रही है। यह बुंचकी है,—गुरुदास बाबूकी छोटी लडकी। भक्तवृन्दोंमेंसे बहुतसे दोनों हाथ आगेको फैलाकर बिलकुल औंधे लेट गये हैं, मानो बिना हाथ-पैर हिलाये जमीनपर तैर रहे हों। बाकी सब लोग हाथ जोडे, अपने-अपने पैरोंको सावधानीसे ढककर, बाबाजीके उपदेशामृत सुननेके लिये मुँह उठाये बैठे हैं।

सत्यव्रत साष्टाङ्ग नमस्कार करके भक्त-मण्डलीके बीचमें जा बैठा। छोटे महाराज मना ही करते रह गये, निवारणने जाकर बाबाजीके जकडकर पैर पकड ही तो लिये। बाबाजीने प्रसन्नताकी हसी हँसकर कहा—"कहीं देखा है तुम्हें, परिचित-से जान पडते हो?"

निवारण—"जी, इस अधमका नाम निवारण है।"

विरिंचि—"निवारण? अच्छा, अब तुम्हारा यह नाम पडा है? कहा देखा था तुम्हे,—नेपालमें। ऊँ-हु, मुर्शिदाबादमें। तुम्हे याद नहीं होगी। जगत्‌सेठकी कोठीमें, उसकी माके श्राद्धके दिन। बहुत आदमी जुटे थे,—राजा कृष्णचन्द्र, रायरायान् जानकीप्रसाद, नवाबके सिपहसालार खानखानान् मुहब्बत जंग, सूतानुटीके अमीरचन्द—हिस्ट्रीमें जिन्हें ओमीचन्द कहा गया है,—सब थे। तुम उनके खजाची थे, तुम्हारा नाम था—ठहरो—हाँ, मोतीराम। उफ्। सेठजीने खूब

ही खिलाया था,—सूतानुटीवालोंकी पत्तलमें जरा 'सन्देश' कम परोसे गये थे, वे खरी-खोटी सुनाकर चल दिये थे।—हाँ, मोतीराम, ऊँ-हु,—निवारणचन्द्र, तुम धूर्जटि-मन्त्रका जप करना सीखो, उससे तुम्हें बड़ा फायदा रहेगा। रोज तड़के ही उठकर एक-सौ-आठ बार कहना, धूर्जटि—धूर्जटि—धूर्जटि,—खूब जल्दी-जल्दी। अच्छा, अब बैठो जाकर।"

निवारणने फिरसे चरण-रज ली, और उसे चाटनेके बहाने मुँह तक ले जाकर, भक्तोंमें जाकर बैठ गया।

निनाई बाबूने चुपकेसे परमार्थके कानमें कहा—"देखा तमाशा! निवारणपर आते-आते ही महाराजकी नजर पड़ गई, और हम भोंदू एक घंटेसे बैठे हैं मुँह बाये। असलमें तक़दीर इसीका नाम है। अब तो जाकर पैरोंसे लिपटा जाता हूं, जो भाग्यमें बदा है सो होगा।"

भक्तिके आवेशमें जो औंधे पड़े हुए थे, उनमें एक स्थूलकाय वृद्ध भी थे। पहनावेमें जरी पाड़की धोती थी, बदनपर चुन्नटदार अद्धीका ढीला कुरता, जिसके भीतरसे पतली सोनेकी जंजीर चमक रही थी। आप हैं प्रसिद्ध मुसद्दी गोवर्द्धन मल्लिक। हालमें आप तीसरा ब्याह करके नई दुलहिन घरमें लाये हैं। गोवर्द्धन बाबूने बड़े विनयके साथ हाथ जोड़कर निवेदन किया—"बाबाजी, प्रवृत्तिमार्ग और निवृत्तिमार्ग, इनमेंसे अच्छा कौनसा है?"

बाबाजी जरा हँसकर बोले—"बस, यही बात तुलसीदासने हमसे

पूछी थी।—हम लोग भोजन करते हैं। क्यों करते हैं? भूख लगती है, इसलिये करते हैं। खाते क्या हैं? रोटी, दाल, भात, साग, फल, मूल, मत्स्य, मांसादि। भोजन करनेसे क्या होता है? क्षुधाकी निवृत्ति होती है। क्षुधा एक प्रवृत्ति है, भोजनसे उसकी निवृत्ति होती है। अतएव भोगके मूलमें है प्रवृत्ति, और भोगका फल है निवृत्ति। तुलसी था सन्यासी। मैंने कहा, बचा, बिना भोगके तो तुम्हारी निवृत्ति हो नहीं सकती।—जब रामायण लिख चुका, तो उसे राजा मानसिंह बना दिया। बहुत जमीन-जायदाद कर ली थी, पर कुछ भी न रही। उसके लड़के जगतसिंहने बंगालीकी लड़कीसे ब्याह करके सब उड़ा-उड़ा दिया। बंकिमने अपनी किताबमें इस बातका जिकर नहीं किया है।"

बैरिस्टर ओ० के० सेन बोले—"वन्डरफूल।" (आश्चर्य है।)

निताई बाबूसे रहा न गया। लपकके बाबाजीके पास पहुंच ही तो गये, बड़े विनयसे हाथ जोड़कर कहने लगे—"दया करो, प्रभु।"

बाबाजीने भौंहें सिकोड़कर कहा—"क्या चाहिये तुम्हें?"

निताई बाबू बेचारे घबड़ा-से गये, बोले—"नाइन्टीन-फोर्टीन।" (सन् १९१४)

सत्यव्रतमें एक बड़ा भारी ऐब है,—वह हंसी नहीं रोक सकता। खुद वह गम्भीर होकर मजाक कर सकता है, पर दूसरेके मुँहसे हंसीकी बात सुनते ही उसका गाम्भीर्य कूच कर जाता है। हंसी रोकनेके लिये

सत्यव्रतने मुष्टियोगसे काम लिया। बुजुर्गोंके सामने हँसीका कारण उपस्थित होनेपर वह किसी भयंकर अवस्थाकी कल्पना कर लेता है। पर हर मौकेपर उससे भी फायदा नहीं होता।

विरिंचि-बाबा—"नाइन्टीन-फोर्टीन।—वह क्या?"

निवारणने चुपकेसे कहा—"वन्-नाइन् वन्-फोर, कैलकटा। नो रिप्लाई?—ट्राइ एगेन, मिस।"

सत्यव्रत ध्यान करने लगा—बढई उसकी पीठपर रंदा चला रहा है। पीठकी चमडी छिल-छिलकर गिर रही है। उफ्। कैसी असह्य यन्त्रणा है।

निताई बाबूने कहा—"सिर्फ सात दिनके लिये। सात दिनके लिये मुझे लडाईके पहले पहुचा दीजिये, प्रभो। सस्तेमें लोहा खरीदूंगा,—दुहाई है बाबाजी।"

विरिंचि—"तुम क्या काम करते हो?"

निताई—"जी, मैं वालचर-ब्रादर्सके आफिसमें लेजर-कीपर हूं, कुल डेड सौ मिलते हैं, गिरस्तीकी गुजर भी नहीं होती।"

विरिंचि—"षडैश्वर्य सस्तेमें नहीं मिलते, बच्चा। कठोर साधना चाहिये। मूलाधार-चक्रमें धक्के देकर कुलकुण्डलिनीको आज्ञा-चक्रमें लाना होगा, उसके बाद उसे सहस्रार पद्ममें रखना होगा। सहस्रार ही हुए सूर्य। इस सूर्यको पीछे हटाना होगा। सूर्य-विज्ञान पर अधिकार हुए बिना काल-स्तम्भन नहीं किया जा सकता। उसमें बडा खर्च

है,—तुम्हारा बूता नहीं। फिलहाल तुम कुछ दिन तक मार्तण्ड-मन्त्रका जप करो। ठीक दोपहरके वक्त सूर्यकी तरफ निगाह करके एक सौ आठ बार कहना,—मार्तण्ड-मार्तण्ड-मार्तण्ड,—बहुत जल्दी-जल्दी। पर खबरदार! पलक न गिरने पावें, जीभ लभेडा न खाने पावे,—नहीं तो मौत है।

निताई बाबू उदास होकर लौट आये।

विरिंचि-बाबा बोले—"धन-दौलत सभी चाहते हैं, पर योग्य पात्र भी तो होना चाहिये। बस, इसी बात पर तो ईसाके साथ मेरा झगडा है। ईसा कहता, धनीको स्वर्ग-राज्य कभी नहीं मिल सकता। मैं कहता, सो कैसे? धनका सदुपयोग करे,—अवश्य मिलेगा। हाय, बेचारा बेमौत मारा गया।"

मिस्टर सेनने बडे आश्चर्यसे कहा—"एक्सक्यूज मी, प्रभु! (क्षमा कीजियेगा, प्रभु!) जिसस् क्राइष्ट (ईसामसीह) को जानते थे आप?"

विरिंचि—"हा हा! ईसा तो कलका लडका है।"

मिस्टर सेन—"मा ई गौऽड्!"

सत्यव्रतके कानमें अरखुट्टा घुस गया है, नाकमें गुबरैला,—लोट-लोटकर खा रहे हैं।

मिस्टर सेनने निवारणसे पूछा—"तब तो ये गौटामा-बुड्ढाको भी जानते होंगे।"

निवारण—"जरूर। गौतम बुद्धकी तो बात ही क्या, प्रभु



"माई घौऽड् !"

मनु-पराशरके साथ बैठकर एक ही चिलममे गाँजा पीते थे। सबके साथ उनका परिचय था। भगीरथ, टूटेन् ख़ामेन, नेब्रू-चाड-नाज़ार, हम्मूरब्बी, निओलिथिक मैन, पिथेक्न्थ्रोप्स्, इरेक्ट्स्, मय मिसिं लिङ्क, सबसे इनकी जान-पहचान थी।"

मिस्टर सेनने आँखें चढाकर कहा—"माई !"

सात-सात बब्बर शेर सत्यव्रतके पीछे दौडे आ रहे है। सामने तीन भालू पंजा उठाये खडे है।

विरिंचि-बाबाने कहा—"एकबार महाप्रलयके बाद वैवस्वतने मुझसे कहा, नील-लोहित कल्पमे क्या है ?—नहीं, श्वेतवराह कल्प तब शुरू ही हुआ था। वैवस्वतने कहा, मनुष्योकी सृष्टि तो कर दी, पर वे रहेंगे कहा, खायेंगे क्या ?—चारो तरफ पानी-ही-पानी भरा पड़ा है। मैने कहा, डरनेकी क्या बात है विवू, मैं तो मौजूद हू, सूर्य-विज्ञान तो मेरी मुट्ठीमे है। सूर्यका तेज बढा दिया, चटसे पानी सूख गया, वसुन्धरा धन-धान्यसे भर गई। चन्द्र-सूर्य चलानेका भार मेरे ही ऊपर है न।"

मिस्टर सेन सिर्फ मुँह फैलाकर रह गये।

सत्यव्रत मर गया है। पञ्जाब-मेल दार्जिलिंग-मेलसे लड गई है। चारों तरफ खून-ही-खून—बुआजी—

कोई भी इलाज काम नहीं आया। भीतर भरी हुई हँसी सत्यव्रतकी आँख-नाक-मुँहको फाडकर बाहर निकलनेकी कोशिश करने लगी। तब उसने विवश होकर, असीम कोशिशसे, हसीको रोनेके रूपमे परिवर्तित कर डाला, और दोनों हाथोंसे मुँह ढककर ननाविष्कृत नाद शुरू कर दिया।

विरिंचि-बाबा बोले—"क्या हुआ, क्या हुआ,—अहा, आने दो बेचारेको, मेरे पास आने दो।"

सत्यव्रतने पास जाकर कहा—"उद्धार करो बाबा। मनुष्य-जन्मसे नफरत हो गई है। बाबाजी, मुझे हरिण बनाकर उसी त्रेता-युगमे

कण्व मुनिके आश्रममे छोड दीजिये। मैं धन-दौलत नहीं चाहता, मान-प्रतिष्ठा भी न चाहिये, स्वर्ग भी नहीं चाहता। सिर्फ थोडीसी नरम-नरम घास, स्वय शकुन्तलाके हाथकी, वस। और दो वडे-वडे सींग देना प्रभु, जिससे दुष्यन्तको खदेड दिया करूं।"

निवारणने, माजरा विगडते देख, कहा—"लडकेका मगज खराव हो गया है, वावाजी। वहुत शोक उठाना पडा है, इसीसे—"

घडीमे रात वजे। दैनिक पद्धतिके अनुसार विरिंचि-वावा इस समय सहसा तुरीय-अवस्थाको प्राप्त हुए। वे आँखे मीचकर काठकी तरह बैठ रहे, सिर्फ उनके ओठ दोनो कुछ-कुछ हिलते रहे। मामाजी, चेला महाराज, और भी दो भक्त वावाजीके श्रीवपुको हाथो-हाथ उठाकर साधन-कक्षमे ले गये। सभा फिलहाल आजके लिये भङ्ग हो गई। भक्तगण क्रमश विदा होने लगे।

निताई वावूने कहा—"जहरका नाम नहीं, सूप-सा फन। ऐसे वावाजीसे काम नहीं चलेगा। कुछ शक्ति हो तो दो-चार नमूना दिखावें, सो तो नहीं, सत्ययुगमे क्या किया था, उसका व्याख्यान देने चले हैं। चलो भाई परमार्थ, सात-वीसकी गाडी मिल जायगी। निवारण और सत्यव्रतको खोजनेकी जरूरत नहीं, सव अपने-आप आ जायँगे। देखो परमार्थ, कल हो सके तो मिरचई-वावाके पास चलो।"

श्याम बाबू धर्मभीरु पुरुष है, बिना पत्रा देखे कोई भी काम नहीं करते, और अवकाशानुसार तान्त्रिक साधना भी करते हैं। वृथा—अर्थात् बिना भूखके—मास भोजन और अकारण 'कारण' पान नहीं करते। कानसे सन्यासी सोना बना लेते हैं, किनके पास वामावर्त शख या एकमुखी रुद्राक्ष है, कौन पारदकी भस्म तय्यार करना जानते हैं, इन सब बातोंकी टोह वे सर्वदा लगाया ही करते हैं। इधर कई महीनोंसे आप घरमे गेरुआ-वसन पहनते हैं, और अपने कुछ अनुरक्त शिष्य भी बना लिये हैं। श्याम बाबू कभी-कभी अपनेको 'श्रीमत् श्यामानन्द ब्रह्मचारी' कह दिया करते हैं, और शीघ्र ही यह नाम सर्वत्र प्रचारित हो जायगा, ऐसी आशा भी रखते हैं।

श्याम बाबू अपने आफिस-रूममे प्रवेश कर, कुछ देर तो एक साढ़े-तीन पैंरकी आराम-कुर्सीपर विश्राम करते रहे, फिर नौकरको पुकारने लगे—"निरजन, ओ निरजन।" निरजन बगलकी गलीमे स्टूलपर बैठा झोंके ले रहा था, मालिककी पुकार सुनकर झटपट सचेत हो गया। वहींसे चिल्लाकर बोला—"आया हुजूर।" श्याम बाबूने कहा—"चल, गगाजलकी बोतल ला, और बही-खातोको जरा झाड़-पोंछकर ठीकसे रख, बड़ी धूल जम गई है।" निरजनने एक तांबेकी लुटिया लाकर बाबूके हाथमे दी। श्याम बाबूने उसमेसे थोड़ासा गगाजल लेकर मन्त्रोच्चारण-पूर्वक कमरे-भरमे छिड़क दिया। उसके बाद एक छोटीसी सन्दूकचीमे से एक सिन्दूर-चर्चित 'रबर-स्टैम्प' निकाला और उसकी

सहायतासे १०८ वार श्रीगणेशजीका नाम लिखा। स्टॅम्पमे १२ लाइन "श्रीगणेशाय नम" वना हुआ है, उसे नौ वार लगाने-मात्रसे ही काम चल जाता है। इस श्रम-हारक यन्त्रके आविष्कारक स्वय श्रीमान् विपिनचन्द्र हैं। उन्होने इसका नाम रक्खा है—"दी औटोमैटिक श्रीगणेशग्राफ।" शीघ्र ही वे इसे 'पेंटेन्ट' करनेकी कोशिशमे हैं।

इस प्रकार नित्यक्रिया सम्पन्न कर श्याम वावूने वैगसे प्रेसका एक भीगा हुआ प्रूफ निकाला और प्रसन्न चित्तसे उसका संशोधन करने लगे। कुछ देर वाद जूतेकी मच्-मच् आवाज करते हुए अटल वावू भी आ पहुचे, कहने लगे—"कहिये श्याम वावू, क्या हो रहा है? आप तो वहुत देरसे आये मालूम देते हैं। मुझे वडी देर हो गई,—क्षमा कीजियेगा,—हाईकोर्टमे एक मोशन था। ब्रदर-इन-ला कहा है?"

श्याम वावू—"विपिन जरा वागवाजार गया है, तीनकौडी वावूके पास। आज, जैसा हो, साफ जवाव ले आयेगा।—आता ही होगा।"

अटल वावू चोगा-चपकन-धारी ताजे अटर्नी हैं। पिताके काममे अभी 'जूनियर-पार्टनर' रूपमे शामिल हुए हैं। चेहरा सुन्दर और गोरा है, देखनेमे सज्जन और प्रसन्न-चित्त मालूम देते हैं,—विपिनके वाल्य वन्धु हैं। उम्रमे छोटे होनेपर भी चातुर्यमे परिपक्व हैं। पूछने लगे—"बुड्ढा राजी हो गया क्या?—अच्छा, उसे फँसाया कैसे?"

श्याम—"अरे कुछ न पूछो, तीनकौडी बाबू शरतके चचिया-ससुर है, शरत विपिनका मौसेरा-भाई है। शरतके साथ जाकर तीनकौडी बाबूसे मुलाकात की। सहजमे थोडे ही बना है, बडी मुश्किलसे बना पाया है। बुड्ढा जितना कजूस है, उससे कहीं ज्यादा वहमी भी है। कहता है—'मैं रायसाहब हू, रिटायर्ड डिप्टी हू, गवर्मेन्टके यहा बहुत सम्मान है। कम्पनीका डिरेक्टर बनकर क्या पेन्शनसे भी हाथ धो बैठूँ ?' तब मैंने नज़ीर देकर समझाया कि बीसियो रिटायर्ड बडे-बडे अफ्सर डिरेक्टरी कर रहे है,—फिर आपको डर किस बातका ? आख़िर जब सुना कि प्रत्येक मीटिंगमे ३२) फीस मिला करेगी, तब ज़रा पसीजा।"

अटल—"शेयर कितने रुपयेके लेगा ?"

श्याम—"सो उसमे बडा होशियार है। कहता है—'तुम्हारी ब्रह्मचारी-कम्पनी लोगोंको धोखा देकर लूटेगी नहीं, इसकी गारटी क्या है ? कहीं साले-बहनोईने मैनेजिंग-एजेन्ट बनकर कम्पनी फेल कर दी, तो मेरे रुपये कौन देगा ?' मैने कहा—'रायसाहब, आप जैसे चतुर और सावधान डिरेक्टरके रहते हुए किसकी हस्ती है कि लूट मचावे। ख़र्च वगैरह तो सब आपकी नज़रोंके सामनेसे ही गुजरेगा। फेल होने क्यो देंगे ? सिर्फ दोषोंकी तरफ क्यों देखते है ? ज़रा लाभोंकी तरफ भी ध्यान दीजिये, कैसा मुनाफेका काम है। कम-से-कम अगर ५०) पर-सेन्ट भी डिविडेन्ड मिल गया, तो दो वर्षके अन्दर आपकी रक़म आपके घर आ जायगी।' अन्तमे बडे तर्क-वितर्कके बाद, कहा—

'अच्छा, मैं शेयर लूँगा, पर ज्यादा नहीं, डिरेक्टर होनेके लिये जितना रुपया देना पड़ता है, उतनेके ही लूँगा।' आज वे सोच-विचारकर आखिरी जवाब देंगे, इसीलिये विपिनको भेजा है।"

अटल—"ऐसे वहमी आदमीको मिलाकर अच्छा नहीं किया, श्याम बाबू! अच्छा, महाराजको क्यों छोड़ दिया?"

श्याम—"महाराजको फँसानेके लिये बड़े शिकारीकी जरूरत है—हमारी-तुम्हारी हस्ती नहीं। इसके सिवा, पाँच भूतोंने मिलकर उन्हें चूस लिया है—कुछ है नहीं।"

अटल—"मारवाड़ी तो तैयार है न? कब, आयेगा कब?"

श्याम—"वह तो मुँह बाये बैठा है, किसी तरह मौका लगे भी। अब तक उसे आ जाना चाहिये था। हाँ, 'प्रौस्पेक्टस्' तुम लोगोंको सुनाकर आज ही छापने देना है। तीनकौड़ी बाबूको आनेके लिये कहा तो था,—पर गठियावाय हो गई है, तकलीफमें हैं, आ नहीं सकेंगे।"

"राम-राम बाबूजी सा'ब।"

आगन्तुक महाशय मारवाड़ी हैं, अधेड़ अवस्था है, चेहरेका रंग पक्का गेहुँआ, पहनावेमें सफेद धोती, काली बनातका नीचा कोट, पैरोंमें वार्निशदार बूट जूता, सिरपर पीली हातकी बँधी हुई पगड़ी, दाहिने



"राम-राम बाबूजी सा'ब !"

हातकी उँगलियोंमें कई अगूठियाँ, एक कानमें पन्नाकी बाली और ललाटपर तिलक है।

श्याम बाबूने कहा—"आइये, आइये।—अरे निरंजन, एक कुर्सी और डाल दे।—बैठिये, आ-आप-ही अटल बाबू हैं, जिनकी मैं जिक्र

करता था, आप हमारे सालिसिटर दत्ता-कम्पनीके पार्टनर हैं।—और आप हैं हमारे परम मित्र बाबू गण्डेरीराम पटपरिया।"

गण्डेरी—"राम-राम बाबूजी सा'ब। आपका नाम तो हम सुणा था, अब जाण-पिछांण होनेसे बडा आणन्द रया।"

अटल—"राम-राम, आपके लिये ही हम लोग बैठे हैं, आप जैसे सेठ जब हमारे सहायक हैं, तो कम्पनीको अब परवाह किस बातकी है?"

गण्डेरी—"हे-हे—सब भगवाणकी इंच्छा है जी। म्हें अकेला क्या करने सकता हू?—कुछ न्हीं।"

श्याम—"ठीक है बाबू साहब, जो कुछ करेंगे गणेशजी, दोनोंके मालिक।—सुनिये अटलबाबू, गण्डेरीबाबूको सिर्फ पक्के रोजगारी ही न समझियेगा। अंग्रेजी अच्छी नहीं आनेपर भी, ये अच्छे शिक्षित पुरुष हैं, और शास्त्र वगैरहमें तो इनका पूरा दखल है।"

अटल—"अच्छा। तब तो आप जैसे महान् पुरुषसे मिलकर बडी खुशी होनी चाहिये। भाषा तो आप बडी शुद्ध बोल लेते हैं।"

गण्डेरी—"भो'तसे इखबारका सिम्पादक लोगसे हमरा मेल-मुलाकात रे'ता है, किताब भी हिन्दीका भो'त पढा है, चन्दरकान्ता, लन्दनरहस, ओर भी भो'त—।"

इतनेमें विपिन बाबू आ पहुचे। ये जरा साहबी मिजाजके आदमी हैं, किसी समय विलायत जानेकी भी कोशिश की थी। पहनावेमें सफेद पैन्ट, काला कोट, लाल नैकटाई और हाथमें सब्ज रगका फैल्ट हैट

है। उज्ज्वल-श्याम वर्ण है, पतला-दुबला शरीर है, मूँछोंके दोनों किनारे उस्तरेसे छिले हुए हैं। श्यामबाबूने बड़ी उत्सुकताके साथ पूछा—"क्यों, क्या हुआ ?"

विपिन—"डिरेक्टर हो जायँगे, कहा तो है, पर शेयर सिर्फ दो ही हजारके लेंगे। तुम्हें, अटलको और मुझे परसोंका निमन्त्रण दिया है। यह लो चिट्ठी।"

अटल—"ओफ्-हो। इतने पिघले, भई कुछ सुनाओ तो सही ?"

श्याम—"कुछ समझमें नहीं आता। शायद फेलो डिरेक्टरोंको एक दफा ठोंक-बजाकर अजमाना चाहते हैं।"

अटल—"जाने दो, अब काम शुरू करो। मैं 'मेमोरन्डम्' और 'आर्टिकिल्स्'का मसविदा बना लाया हूं। श्यामबाबू, 'प्रौस्पेक्टस्' तो सुनाइये, कैसा है ?"

श्याम—"हाँ, सुन लीजिये ज़रा ध्यानसे। कुछ रद्दोबदल करना हो तो अभीसे—। श्री गणेशजी—

जय सिद्धिदाता श्रीगणेशजी

सन् १९१३ ई० की ७ वें कानूनके अनुसार रजिस्टर्ड

श्रीश्री सिद्धेश्वरी लिमिटेड

"मूलधन—दस लाख रुपया, १०) के हिसाबसे १००००० अंशोंमें विभक्त है। आवेदनके साथ प्रत्येक अंशके लिये २) देना पड़ता है। बाकी रुपया ४ किस्तोंमें तीन महीनेके नोटिससे आवश्यकतानुसार देना पड़ेगा।

अनुष्ठान-पत्र

"धर्म ही हिन्दुओंका प्राण है। धर्मको अलग रखकर इस जातिका कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं हो सकता। बहुतसे लोग कह देते हैं कि धर्मका फल परलोकमें मिलता है। यह आंशिक सत्य है। वस्तुतः धर्मवृत्तिके उपयुक्त प्रयोगसे इहलौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकारके फल प्राप्त होते हैं। इस कारण हाल-की-हाल चतुर्वर्ग-लाभके उपाय-स्वरूप इस विराट् व्यापारमें देशवासियोंका आह्वान किया जाता है।

"भारतके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध देव-मन्दिरोंकी कैसी बड़ी-बड़ी आमदनियाँ हैं, इस बातको सर्व-साधारण नहीं जानते। रिपोर्टोंसे मालूम हुआ है कि इस प्रान्तके केवल एक देव-मन्दिरकी दैनिक यात्रि-संख्याका औसत १५ हजार है। यदि आदमी-पीछे सिर्फ चार आना भी कर लगाया जाय, तो वार्षिक आय लगभग साढ़े-तेरह लाख तक पहुंचे! खर्च चाहे जितना भी हो, फिर भी काफी रुपया बचता है। परन्तु साधारण जनता इस लाभसे सर्वथा वञ्चित है।

"देशके इस महान् अभावको दूर करनेके लिये 'श्रीश्री सिद्धेश्वरी लिमिटेड' नामकी एक जौएन्ट स्टाक कम्पनी स्थापित की जाती है। धर्मप्राण शेयर-होल्डरोंके रुपयोंसे एक महान् तीर्थक्षेत्रकी प्रतिष्ठा की जायगी, और विशाल मन्दिर बनवाकर उसमें जाग्रत देवी प्रतिष्ठित की जायँगी। एक योग्य और अनुभवी मैनेजिंग-एजेन्टपर कार्य-निर्वाहका भार सौंपा गया है। किसी भी प्रकार अपव्ययकी सम्भावना नहीं है। शेयर-होल्डरोंको आशातीत दक्षिणा या डिविडेन्ड मिलेगा, और साथ ही वे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष प्राप्त कर धन्य होंगे।

"इस कम्पनीके डिरेक्टरगण —(१) अवसर-प्राप्त प्रवीण विचक्षण

डिप्टी-मजिस्ट्रेट रायसाहव श्रीमान् वा० तीनकौड़ी वार्जी। (२) प्रसिद्ध व्यवसायी और करोड़पती श्रीमान् सेठ गण्डेरीरामजी पटपरिया। (३) सालिसिटर्स दत्ता ऐन्ड कम्पनीके पार्टनर श्रीमान् बा० अटलविहारी दत्ता M A LL B, (४) प्रसिद्ध वैज्ञानिक मिस्टर बी० सी० चौधरी B SC, A S S (U S A), (५) कालो-पदाश्रित साधक श्रीमत् श्यामानन्दजी ब्रह्मचारी (ex-officio)—"

अटल बाबू बीच ही में बोल उठे—"विपिनको A S S का नया टाइटिल् कहासे मिल गया ?"

श्याम—"अजी, कुछ न पूछो। पचास रुपया खर्च करके, अमेरिका या कामस्कट्का, न मालूम कहासे ये तीन हरूफ मगाये हैं।"

विपिन—"वाह। मेरी क्वालिफिकेशन बिना समझे ही क्या यो ही मुझे डिग्री दे दी गई है ? डिरेक्टर बननेके लिये दो-एक पदवीका होना तो अच्छा ही है।"

गण्डेरी—"ठीक बात है, बाबू सा'व। भेख बिना भीख न्हीं मिलता। श्याम बाबू, आप भी अब धोती-ओती छोड़कर लगोटी पैहिए।"

श्याम—"मैं नागा सन्यासी थोड़े ही हू। मैं हूं शक्तिमन्त्रका साधक, मेरे लिये रक्ताम्बर चाहिये। घरमे तो मै गैरिक-वसन ही धारण करता हू, हां, आफिसमे पहनकर नहीं आता, इसलिये कि सब टकटकी लगाकर देखने न लगें। और कुछ दिन जाने दो, लोगोकी निगाह

पुरानी पडनेपर हर वक्त पहना करूँगा।—छोडो अब फाल्तू बातें, पढता हूँ, सुनो—

"मेसस ब्रह्मचारी ऐन्ड ब्रदर-इन-लाने इस कम्पनीकी मैनेजिङ्ग-एजेन्सी लेना स्वीकार कर लिया है, यह बड़े सौभाग्यकी बात है। उक्त कम्पनी मुनाफेपर सिर्फ २) पर-सेन्ट कमीशन लिया करेगी, और जब तक कि—"

अटल बाबू बात काटकर बोल उठे—"कमीशनका रेट बहुत ही कम रक्खा है; दस रुपया सैंकडा तो आसानीसे रक्खा जा सकता था।"

गण्डेरी—"क्या जरूरत है? श्याम बाबूकी परवरिस्त अपणेसे ई हो जायगी। कमीशनके भरोसे थोडे ही है, वा'ब्बा।"

"और जब तक कि कमीशन १००) मासिक न हो जाय, तब तक शेषोक्त रुपये बतौर ऐलाउन्सके लिया करेंगे।"

गण्डेरी—"सुणिये अटल बाबू, सुणिये, आप श्याम बाबूको क्या सिखलायेंगे?"

"हुगली जिलेके अन्तर्गत गोविन्दपुर ग्राममें श्रीश्री सिद्धेश्वरी देवी शताब्दियोंसे प्रतिष्ठित हैं। देवीका मन्दिर और उसके आस-पासकी देवोत्तर सम्पत्तिकी सत्त्वाधिकारिणी श्रीमती निस्तारिणी देवीको हालमें देवीने स्वप्न दिया है कि उक्त गोविन्दपुर ग्राममें अभी सर्व-पीठोंका समन्वय हुआ है, और माता अपने माहात्म्यके उपयुक्त सुबृहत् मन्दिरमें वास करना चाहती हैं। श्रीमती निस्तारिणी देवी अबला होने और उक्त दैवादेशके पालनमें स्वयं असमर्थ होनेके कारण, उक्त देवोत्तर-सम्पत्तिको मय मन्दिर, प्रतिमा, जमीन और जायदादके इस लिमिटेड कम्पनीको समर्पण करती हैं।"

अटल—"निस्तारिणी देवी इसमें कहांसे आ-धमकीं ?"

श्याम—"मेरी स्त्रीका नाम निस्तारिणी है। थोड़े दिन हुए, उन्हींके नामपर सब लिखा-पढ़ी कर दी है। मैं अब इन सब झमेलोंमें नहीं रहना चाहता।"

गण्डेरी—"बन्दोबस्त तो अच्छा ई किया है। आपकूँ कोई दोस नहीं देगा। निस्तार्णी देवीकूँ कुँण पिछांणता है ?—दाम क्या सिटल हुआ ?"

"अबसे तीर्थ-प्रतिष्ठा, मन्दिर-निर्माण, देव-सेवादि कम्पनी-द्वारा सम्पन्न होगा, और इसके लिये कम्पनीने सिर्फ १५०००) रुपयेमें तमाम जायदाद खरीदनेका वचन देकर साई भी दे दी है।"

गण्डेरी—"हद्द कर दिया, श्याम बाबू। जंगलके अन्दर पुराणा मिन्दर, छटाँक-भर जिमीण, जिसमें बाँस-ही-बाँस खड़ा है, उसका दाम पन्द्रा हजार।"

श्याम—"क्यों, ज्यादा क्या हुआ ? स्वप्नादेश, एकान्न पीठ, जाग्रत देवी,—ये सब क्या हैं ? 'गुड-विल'के देखे तो पन्द्रह हजार कुछ भी नहीं।"

गण्डेरी—"अच्छा, कोई शेर-होल्डर हाईकोटमें दरखास पेश कर देवे कि सपणा-अपणा सब झूँटा है, धोका देकर रुप्या लिया गया है,—तब ?"

अटल—"हाँ, है तो बात विचारनेकी। पर ये सब आधिदैविक

विषय शायद औरिजिनल साइडके जूरिस्-डिक्शनमें नहीं आते। कानून कहता है,—caveat emptor,—खरीददार होशियार। जायदाद खरीदते वक्त जाँच-पड़ताल क्यों नहीं की ?—कुछ भी हो, एक दफे एक्सपर्ट-ओपिनियन ले लेना चाहिये है।"

"शीघ्र ही नवीन देवालयका समारम्भ किया जायगा। साथ ही प्रशस्त नाट-मन्दिर, नौबतखाना, भोगशाला, भण्डार आदि आनुषङ्गिक गृहादि भी होंगे। फिलहाल दस हजार यात्रियोंके ठहरने लायक अतिथिशाला बनवाई जायगी। शेयर-होल्डर बिना भाड़ेके परिवार-सहित वहा वास कर सकेंगे। हाट, बाजार, थियेटर, बायस्कोप तथा अन्यान्य आमोद-प्रमोदका आयोजन यथेष्ठ-रीत्या किया जायगा। जो लोग दैवादेश वा औषध-प्राप्तिके लिये बलि देंगे, उनके लिये वैज्ञानिक व्यवस्था की जायगी। मतलब यह कि तीर्थयात्रियोंको आकर्षित करनेके सभी उपाय काममें लिये जायँगे। स्वयं श्रीमत् श्यामानन्द ब्रह्मचारी, देवीका सेवा-भार ग्रहण करेंगे।"

"यात्रियोंसे जो दर्शनीय और प्रणामी वसूल होगी, वह तो होगी ही, अलावा उसके और भी नाना उपायोंसे अर्थागम होगा। दूकान, हाट, बाजार, अतिथिशाला, महाप्रसाद-विक्रय इत्यादिमें बहुत ही ज्यादा आमदनी होगी। इसके सिवा by-product recovery की व्यवस्था रहेगी। देवीकी सेवामें चढ़े हुए फूलोंसे सुगन्धित तैलादि बनाये जायेंगे, और प्रसादी बिल्वपत्र तबीज़ोंमें भरकर तथा चरणामृत बोतलोंमें पैक करके बेचा जायगा। बलिमें चढ़ाये गये बकरोंकी खालसे उमदा किड-स्किन बनाया जायगा और ज़्यादा कीमतपर वह विलायतको भेजा जायगा। हड्डियोंसे बटन बनेंगे। गरज यह कि कोई भी चीज बरबाद नहीं की जायगी।"

गण्डेरी—"क्या! बकरा भी कटेगा!!—हम इसमे नहीं रहेगा, सीता-राम भजो। हमरा नाम काट दीजिये।"

श्याम—"आप खुद थोड़े ही चढा रहे हैं, इसमे क्या दोष है? नहीं तो फिर कुम्हड़ा चढानेकी व्यवस्था की जायगी।"

अटल—"कुम्हड़े मे से चमड़ा थोड़े ही निकलेगा। आमदनी घट जायगी।—कहिये वैज्ञानिकजी, कुम्हड़ेके छिलकेका किसी तरह सदुपयोग किया जा सकता है?"

विपिन—"कास्टिक-पटाश देकर बौयेल करनेसे शायद मेजिटेनिल 'ग्लू' बन सकता है। एक्सपेरिमेन्ट करके देखूँगा।"

गण्डेरी—"जैसा समझो, करो। हमकूँ क्या। हम तो थोड़ा रोज बाद अपना शे'र-येर बेच-बाच कर छुट्टी पा लेगा।"

"हिसाब लगाकर देखा गया है कि कम्पनीको सालमे कम-से-कम १२ लाखका फायदा रहेगा, और इस तरह बड़ी आसानीसे १००) परसेन्ट डिविडेन्ड दिया जा सकेगा। ३० हजार शेयरोंके लिये आवेदन प्राप्त होते ही allotment किया जायगा। शेयरके लिये जल्द-से-जल्द आवेदन कीजिये। अन्यथा यह सुनहरा मौका फिर हाथ न आवेगा।"

गण्डेरी—"लिख दीजिये, ढाई लाख रुप्याका शे'र बिक चुका है। एक लाखका हम लेगा, बाकी डेढ लाखका श्यामबाबू, अटलबाबू और विपिनबाबू ले लेगा—पिचास-पिचास हजारका।"

श्याम—"अच्छी कही! हम और विपिन पचास-पचास हजार

विषय शायद ओरिजिनल साइडके जूरिस्-डिक्शनमें नहीं आते। कानून कहता है,—caveat emptor,—खरीददार होशियार। जायदाद खरीदते वक्त जाँच-पड़ताल क्यों नहीं की?—कुछ भी हो, एक दफे एक्सपर्ट-ओपिनियन ले लेना चाहिये है।"

"शीघ्र ही नवीन देवालयका समारम्भ किया जायगा। साथ ही प्रशस्त नाट-मन्दिर, नौबतखाना, भोगशाला, भण्डार आदि आनुषङ्गिक गृहादि भी होंगे। फिलहाल दस हजार यात्रियोंके ठहरने लायक अतिथिशाला बनाई जायगी। शेयर-होल्डर बिना भाड़ेके परिवार-सहित वहाँ वास कर सकेंगे। हाट, बाजार, थियेटर, बायस्कोप तथा अन्यान्य आमोद-प्रमोदका आयोजन यथेष्ठ-रीत्या किया जायगा। जो लोग देवादेश या औषध-प्राप्तिके लिये धर्ना देंगे, उनके लिये वैज्ञानिक व्यवस्था की जायगी। मतलब यह कि तीर्थयात्रियोंको आकर्षित करनेके सभी उपाय काममें लिये जायँगे। स्वयं श्रीमत् श्यामानन्द ब्रह्मचारी, देवीका सेवा-भार ग्रहण करेंगे।"

"यात्रियोंसे जो दर्शनीय और प्रणामी वसूल होगी, वह तो होगी ही, अलावा उसके और भी नाना उपायोंसे अर्थागम होगा। दूकान, हाट, बाजार, अतिथिशाला, महाप्रसाद-विक्रय इत्यादिमें बहुत ही ज्यादा आमदनी होगी। इसके सिवा by-product recovery की व्यवस्था रहेगी। देवीकी सेवामें चढ़े हुए फूलोंसे सुगन्धित तैलादि बनाये जायँगे, और प्रसादी बिल्वपत्र सीसोंमें भरकर तथा चरणामृत बोतलोंमें पैक करके बेचा जायगा। बलिमें चढ़ाये गये बकरोंकी खालसे उमदा किड-स्किन बनाया जायगा और ज्यादा कीमतपर वह विलायतको भेजा जायगा। हड्डियोंसे बटन बनेंगे। गरज यह कि कोई भी चीज बरबाद नहीं की जायगी।"

गण्डेरी—"क्या! बकरा भी कटेगा!—हम इसमें नहीं रहेगा, सीता-राम भजो। हमरा नाम काट दीजिये।"

श्याम—"आप खुद थोडे ही चढा रहे है, इसमे क्या दोष है? नहीं तो फिर कुम्हडा चढानेकी व्यवस्था की जायगी।"

अटल—"कुम्हडे मे से चमडा थोडे ही निकलेगा। आमदनी घट जायगी।—कहिये वैज्ञानिकजी, कुम्हडेके छिलकेका किसी तरह सदुपयोग किया जा सकता है?"

विपिन—"कास्टिक-पटाश देकर बौयेल करनेसे शायद मेजिटेनिल 'शू' बन सकता है। एक्सपेरिमेन्ट करके देखूँगा।"

गण्डेरी—"जैसा समझो, करो। हमकूँ क्या। हम तो थोडा रोज बाद अपना शेर-येर बेच-बाच कर छुट्टी पा लेगा।"

"हिसाब लगाकर देखा गया है कि कम्पनीको सालमें कम-से-कम १२ लाखका फायदा रहेगा, और इस तरह बडी आसानीसे १००) पर-सेन्ट डिविडेन्ड दिया जा सकेगा। २० हजार शेयरोंके लिये आवेदन आते ही allotment किया जायगा। शेयरके लिये जल्द-से-जल्द आवेदन कीजिये। अन्यथा यह सुनहरा मौका फिर हाथ न आवेगा!"

गण्डेरी—"लिख दीजिये, ढाई लाख रुपयाका शेर बिक चुका है। एक लाखका हम लेगा, बाकी डेढ लाखका श्याम बाबू, अटल बाबू और विपिन बाबू ले लेगा—पिचास-पिचास हजारका।"

श्याम—"अच्छी कही! हम और विपिन पचास-पचास हजार

कहाँसे लावेंगे ? आप लोग तो वड़े आदमी हैं, आपकी दूसरी वात है।"

गण्डेरी—"वाह। हम क्या मूरिख है, जो हम सव रुप्या डालेगा और आप लोग मज़ा उडावेगा ? ऐसा नहीं होणे सकना, सवको झोकी उठाना पड़ेगा, श्यामवावू मतलव न्हीं समझा ? रुप्या कोई न्हीं देगा, सव उचन्तमे रहेगा। मनेजिङ्ग-एजिन्ट म्हाजन होगा।"

अटल—"समझे नहीं श्यामवावू ? हम सभी जैसे मैनेजिङ्ग-एजेन्ट्सूसे कर्ज लेकर अपने-अपने शेयरोंके रुपये कम्पनीको दे रहे हैं, फिर कम्पनी उन रुपयोंको मैनेजिंग-एजेन्ट्सूके पास अमानत रखती है। गाँठसे एक पाई भी किसीको नहीं देनी पडी, रुपयोंका जमा-खर्च सिर्फ वही-खातोंमे रहा।"

श्याम—"उसके वाद आखिर पडेगी किसके सिर ? कहीं हो गई कम्पनी फेल, तो वस, श्यामानन्द पर ही चोट है। मीटिंग काल करनेके वाकी रुपये कौन देगा ?"

गण्डेरी—"डरता क्यूँ हो ? शे'र-पीछे अभी तो दो रुप्या देणा होगा। ढाई लाखका शे'रके वास्ते सिरफ पचास हज़ार ही देणा होगा। पिरमियममे सव वेच देंगे—सुभीता देखेगा तो ओर भी शे'र थामे रहेंगे। मुनाफा भो'त मिलेगा। सिरदारमल ब्रोकरसे हम वन्दोवस्त कर लिया है। दो-चार दफे हम लोग आपसमे लेवा ई वेची करेगा,



"ऐसी गत सिन्सारमें"

हाथ बदलेगा, भाउमें तेजी आ जायगा। फिर सब कोई शेयर मांगेगा, भाउ पर कोई विचार नहीं करेगा। कबीरजीका एक दोहा है, सुनिये—

ऐसी गत सिन्सारमें, ज्यूँ गाडरका ठाट।
एक पड़ा जब गारमें, सबे जात तेहि बाट॥

एक भेड़ ज्हाँ खड्डे मे गिरा न्हीं, कि आँख मीचकर सब गिरने लगेगा।"

श्यामबाबूने एक गहरी साँस लेकर कहा—"भगवती ब्रह्ममयी। तुम्हीं जानो। मैं तो निमित्तमात्र हू। तुम्हारा काम है, तुम्हीं उद्धार कर दो, माता। इस अधम सन्तानको कहीं मार मत डालना।"

गण्डेरी—"श्यामबाबू, मिन्दर-विन्दरका तो कम्पणी जो करणा है, सो तो कीजिये ही। उसके साथमे एक घईका भी कारबार ओर खोल दीजिये। उसमे एकका दो होता है।"

अटल—"घई क्या ?"

गण्डेरी—"घई न्हीं जाणते हो आप ? घी हुआ असली घी, जो गाय-भैंसके दूधसे वणता है। और नकली जो है, सो घई के'लाता है। चरबी, चीणा-विदामका तेल वगैरा मिलाकर वणाया जाता है। पर-साल हम घईके काममे पचीस हजार लगाया था, उसमे साडे-चोवीस हजार मुनाफा रया।"

अटल—"उफ्! तब तो हजारो साँप मारने पड़े होंगे ?"

गण्डेरी—"अरे साँप कहासे मिलेगा। सब झूँटी बात है।"

अटल—"अच्छा, गण्डेरीजी। आप तो शाकाहारी है, तिलक लगाते हैं, भजन-पूजन भी करते हैं।—"

गण्डेरी—"ये तो करणा ई च'ये। हिन्दूके घरमे जनम लिया

है, ऊँचा कुल पाया है, ये सब बारबार न्हीं मिलना, समझा कि न्हीं ! हम रोज गीता और रामायण पढता है।"

अटल—"और फिर भी आपने ऐसा पापका रोजगार किया।"

गण्डेरी—"पाप। हमकूँ पाप क्यूँ होगा ? काम तो सब कासिम अली करता है। हम रे'ता है कलकत्तामे, घई बणता है हाथरस। हम न तो आँखसे देखता है, न नाकसे सूँगता है। हम तो सिर्फ म्हाजन है, रुप्या देकर खलास। रुप्याका व्याज और मुनाफाका आधा हिस्सा, बस, हमरा ताल्लुक तो इतणा ही भर है। हम रुप्या न्हीं देगा, आगला दूसरा म्हाजनमें ले लेगा। पाप होगा तो उसी साले कासिमको होगा। हमरा क्या ? जदि इसमे भी दोस लगे, तो हम पुण भी तो भो'त करता है। एकादसी, शिवरात्‌री, रामणोमीमे उपास, दान-खेरात भी करता है। आठ-आठ तो धरमशाला बणवा दिया है,—लिलुआमें, बालीमे, बैजनाथजीमे—"

अटल—"लिलुआकी धर्मशाला तो अशरफीलाल ठुनठुनवालेने बनवाई है न ?—"

गण्डेरी—"बणवाई है तो क्या ? ऐसे तो सभी उन्होंने बणवाई है, पर देख-रेख किसने की है, ठेकेदारको कुण लाया ? सब स'मान कुण खरीदवाया ? अस्सर्फी तो हमरा फूफाजीका लडका—भाई है। हमने सल्ला दिया, तभी तो उसने रुप्या लगाया है।"

अटल—"बहुत ठीक। रुपया लगाया अशरफीने, और पुण्य हुआ गण्डेरीजीको।"

गण्डेरी—"होगा क्यूं न्हीं ? दो-दो लाख रुपया हर जगेमे खर्च किया। जोडिये तो कितणा हुआ ? उसपर कमसे कम पाच रुप्या सैकडा दलाली रखिये, तो भी कितणा होता है। हम एक पैसा भी न्हीं लिया, सब छोड दिया। अस्सर्फीलालका पुण गर नोला लाखका हुआ, तो म्हारा भी तो अस्सी हजारका होणा चाहिये कि न्हीं ?"

अटल—"क्या खूब। पुण्यमे भी दलाली कटती है। जोडी तो खूब ही मिली है। जैसे ही हमारे श्यामबाबू, वैसे ही—"

गण्डेरी—"अटलबाबू, आप दो-चार इंग्रेजी किताब पढकर हमकूं धरम क्या सिखलायेंगे ? वकील-बालिस्टर लोग धरम क्या जाणें ? हम लोगका तमाम गिद्दीमे धरमादाका वास्ते हजारों रुप्या निकलता है। जैसा पैदा करता है, वैसा धरममे भी—। अच्छा, अब जाता है—'रेस' मे जाणा है। 'कन्ट्री गेरिल' घोडापर आज दो-चार सौ रुप्या लगा देगा।"

अटल—"मैं भी चला, श्यामबाबू। आर्टिकिलका मसविदा छोड चला हू, देख-दाखकर रखियेगा। प्रौस्पेक्टस् बढिया रहा। थोडा-बहुत बदलना है, सो बदल दिया जायगा। परसो फिर आऊँगा, नमस्कार।"

आगबाजारकी एक गलीके अन्दर तीनकौडी बाबूका मकान है। नीचेकी बैठकमे मकान-मालिक और निमन्त्रितगण बैठे हुए गप-शप उडा रहे हैं। साथ ही भीतरसे कब बुलावा आवे, इसकी प्रतीक्षा भी कर रहे हैं। अबेर तो बहुत हो गई है, फिर भी आज रविवार है, किसीको जल्दी नहीं है।

तीनकौडी बाबूकी अवस्था साठ वर्षके लगभग होगी। शरीरसे दुबले-पतले, रग न ज्यादा काला, न गोरा, दाढी बनी हुई है, मूँछें बडी-बडी, पर बेसिलसिलेकी होनेसे सुहावनी नहीं मालूम देतीं। जब तम्बाकूका धुआँ छोडते या बात कहते हैं, तो मूँछोंकी चपलतापर हसी आये बिना नहीं रहती। दैवपर आप उतना विश्वास नहीं रखते, फिर भी लाभकी आशासे, बहुत आग्रह किये जानेपर, कम्पनीमे शरीक हो गये हैं। परन्तु आज कालीघाटसे हाल ही मे स्नान करके लौटे हुए श्याम बाबूकी अभिनव मूर्ति देखकर कुछ आकृष्ट हुए हैं। श्याम बाबू आज रक्तवर्ण चेलवस्त्र पहने, गेरुआ रगका अलवान ओढे और पैरोंमे शेरकी खालका जूता डाटे हुए हैं। दाढी और सिरके बाल सज्जीमट्टीसे धुले और बिखरे हुए हैं, ललाटपर एक विशाल सिन्दूरका तिलक लग रहा है।

तीनकौडी बाबू हुक्का पीते हुए कह रहे थे—"देखिये, स्वामीजी, हिसाब ही असलमे व्यवसाय है। डेबिट-क्रेडिट अगर ठीक रहे, और बैलेन्स ठीक मिलता जाय, तो उस बिजनेसमे कोई भी खतरा नहीं।"

श्याम बाबू—"जी हाँ, बात तो असलमें यही है। इसीलिये तो आपको हम लोग चाहते हैं। आपको कभी-कभी आकर तकलीफ़ दिया करेंगे, हिसाबके मुतल्लिक सलाह लिया करेंगे—"

तीनकौड़ी—"अरे। इसमें तकलीफकी क्या बात है। मैं खुद आपका तमाम 'ऐकाउन्ट्स' ठीक कर दिया करूंगा। मीटिंग जरा जल्दी-जल्दी होनी चाहिये। डिरेक्टर्स्की बाबत तो कुछ ज्यादा खर्च पड़ ही जायगा, पर इससे फायदे बहुत रहेंगे। देखिये, ऑडिटर-फोडिटर मैं नहीं समझता। अरे, जब खुद ही अपने हिसाबको नहीं समझे, तो बाहरका एक नया छोकड़ा आकर क्या समझावेगा? हाँ, आजकल एक 'बुक-कीपिंग' और चल पड़ी है। असलमें वह एक तरहका गोरखधन्धा है, कोई समझ न सके, यही उसका उद्देश है। मैं तो इतना ही जानता हूं, और है भी असलमें इतनी ही बात, कि रोज कितने रुपये आये, कितने खर्च हुए, और बाकी बचे कितने। मैं जब ईचापुर-सबडिविजनकी ट्रेजरीके चार्जमें था, तब कालेजसे पास करके एक नया मुँछ-मुड़ा डिप्टी आया, मेरे पास काम सीखने। लड़का-सा था, कुछ भी नहीं समझता था, पर मारे घमंडके अकड़कर चलता था। छोकड़ेकी हिम्मत तो देखो, मेरे काममें ग़लती निकालनेकी गुस्ताखी! आखिर मुझे लिखना ही पड़ा कोल्डहम साहबको कि—हुजूर, आप लोग बादशाहकी जातिके हैं, आप लोगोंकी हम सब-कुछ सहेंगे, पर देशी मेढकोंकी लात हमसे बरदाश्त नहीं होगी। तब साहब खुद आये,

सब-कुछ देख-भालकर, छोकड़ेको एकान्तमें बुलाकर बहुत धमकाया। मेरी पीठ ठोककर हँसते हुए बोले—'वेल तीनकौड़ी बाबू, आप ठहरे बहुत दिनोंके पुराने सीनियर ऑफिसर, एक यंग 'चैप' आपकी क़दर क्या जाने?' उसके बाद मुझे भेज दिया नौगाँव गाँजा-गोलाके चार्जमें। खैर, जाने दो उस जिक्रको। देखिये श्याम बाबू, मैं बड़ा पक्का और कड़ा आदमी हूँ। 'जबरदस्त-हाकिम' के नामसे मेरी प्रसिद्धि थी। मन्दिर-वन्दिर तो मैं जानता नहीं, पर एक अधेला भी कोई इधर-से-उधर नहीं कर सकेगा। खूनको पसीना बनाकर मैंने पैसा पैदा किया है, वही रुपया आपको सौंप रहा हूँ। देखियेगा, कहीं—"

श्याम—"आप भी रायसाहेब, मजा करते हैं। भला ऐसा भी हो सकता है, आपका रुपया आप ही का रहेगा, और सौगुना बढ़ेगा। देखिये न, मैंने अपनी सारी पैतृक सम्पत्ति—पचास हजार रुपया—इसीमें लगा दी है। खैर, मेरी बात जाने दीजिये, मैं ठहरा सर्वस्व-त्यागी संन्यासी—धन-सम्पदासे मुझे कोई गर्ज ही नहीं—जो कुछ मुनाफा होगा, माताकी सेवामें ही खर्च करूँगा। पर इन विपिन और अटलजीको तो देखिये, दोनोंने पचास-पचास हजारके शेयर लिये हैं। गण्डेरीरामने एक लाखके शेयर खरीदे हैं, जिससे बढ़कर कोई चलता-पुर्जा व्यापारी नहीं। बिना मोटा मुनाफा सोचे क्या वह लेनेवाला था?'

तानकौड़ी—"अच्छा, अच्छा। यह तो खूब सुनाई। अब तो

भरोसा है कि ।—हाँ, एक दफे कोल्डहम साहबको कनसल्ट करें तो कैसा ?"

इतनेमें नौकरने आकर सवाद दिया—"चलिये, सब तैयार है।"

"अच्छा, अब उठनेकी इजाजत हो, आइये अटल बाबू, चलो जी विपिन।"

तीनकौडी बाबू सबको भीतर आँगनमें ले गये।

श्याम बाबूने कहा—"अरे। इतने करनेकी क्या जरूरत थी। रायसाहब, यह तो आपने राजसूय यज्ञ-सा कर डाला। बैठिये, आप भी बैठिये।"

तीनकौडी—"गठियासे तंग हू, क्या करू ? नहीं तो जरूर बैठता। आप लोग जीमिये, मैं तो सिर्फ थोड़ासा दलिया खाऊंगा।"

श्याम—"आपके लिये मैं एक तन्त्रोक्त कवच भिजवा दूगा, उसे बाँधियेगा।—"

तीनकौडी—"हाँ, स्वामीजी, एक बात तो भूल ही गया। आपके तन्त्र-शास्त्रमे ऐसी भी कोई प्रक्रिया है, जिससे मनुष्यकी मान-मर्यादा बढ सके ?"

श्याम—"जरूर है, होगी क्यो नहीं ? जैसे, कुलार्णवमे है—'अमानिना मानदेन'। अर्थात् कुल कुण्डलिनी जाग्रता होनेपर अमानी व्यक्तिको भी सम्मान देती हैं। क्यो, आपको उसकी जरूरत है क्या ?"

तीनकौडी—"ह ह। यह तो एक छोटीसी बात है। असलमे

बात यह है कि कोल्डहम साहबने कहा था, मौक़ा मिलनेपर लाट साहबसे मिलकर मुझे एक बड़ासा खिताब दिला देंगे। बार-बार रिमाइन्ड करना भी ठीक नहीं, इससे सोचा था, अगर तन्त्र-मन्त्रसे कुछ हो सके तो वैसा भी कर देखें। मानता तो नहीं हू, पर—"

श्याम—"मानना ही पड़ेगा साहब, मानेंगे क्यो नहीं ? शास्त्र कभी मिथ्या हो सकते हैं ? आप निश्चिन्त रहिये, इस विषयमें मैं अपनी सम्पूर्ण साधना नियोजित कर दूगा। हाँ, मिलना चाहिये सद्‌गुरु। बिना दीक्षाके ये सब काम नहीं होते। गुरु भी हर-कोई नहीं हो सकता।—रही खर्चकी, सो जहां तक होगा, मैं कममें काम निकालूगा।"

तीनकौड़ी—"अच्छी बात है, देखा जायगा।—अरे हाँ, कम्पनीके दफ्तरमें तो बहुतसे आदमियोकी जरूरत पड़ेगी, सो—मेरा एक सालीका लड़का है, उसके लिये कोई तजवीज़ लगाना। बेकार बैठा है, कुछ पढ-लिख जाता तो ठीक था, नालायक पढ़ता ही नहीं, क्या किया जाय ? बिगड़ा जा रहा है, इससे कहीं नौकरीसे लग जाय, सो भी अच्छा। लड़का काममे बड़ा होशियार, और स्वभाव-चरित्रका भी अच्छा है।"

श्याम—"आपका, खास सालीका लड़का है। विशेष कहनेकी जरूरत नहीं। मैं उसे मन्दिरका हेड पण्डा बना दूगा। फिलहाल पन्द्रह दरख्वास्तें आ चुकी हैं, जिनमे पाँच ग्रेजुएट हैं। पर आपके रिश्तेदारका 'क्लेम' सबसे ऊपर रहेगा।"

तीनकौड़ी—"एक अर्ज और है। हमारे यहा एक पुराना कांसेका घड़ियाल रक्खा है,—जरासी खोंप हो गई है, पर है निखालिस फूल। वह अगर मन्दिरके काममे आवे, तो ले लीजियेगा। सस्ते दाममे बेच दूँगा।"

श्याम—"वाह! उसे तो अवश्य ही लेना पड़ेगा। पुराने जमानेकी चीज मिलती कहाँ है?"

गुँडेरीरामकी भविष्यवाणी सफल हुई। विज्ञापनोके मारे और प्रतिष्ठाताओंकी महा-कोशिशसे सब शेयर बिक गये। लोग शेयर खरीदनेके लिये उत्सुक बैठे हैं, मार्केटमे तेजीके साथ लेवा-बेची चल रही है।

अटलबाबू बोले—"कहिये श्याम बाबू, अब तो अपने शेयर सब बेच देने चाहिये न? गडेरीने तो बहुत बड़ा हाथ मारा है।—आज रुख भी अच्छा है, टूनेपर पहुच चुका है। दो दिन बाद फिर कोई पूछेगा भी नहीं।"

श्याम—"बेचना चाहो, बेच दो। पर कुछ तो हाथमे रखना ही पड़ेगा, नहीं तो डिरेक्टर कसे रहोगे?"

अटल—"डिरेकरी आप ही कीजिये। मै तो अब इस झमटसे अलग होना चाहता हू। सिद्धेश्वरीकी कृपासे आपकी तो कार्यसिद्धि हो ही चुकी है।"

श्याम—"अभी तो शुरुआत ही है। मन्दिर मकानात, हाट बाजार अभी तो सभी-कुछ बनना बाकी है। तुम्हें अभीसे कैसे छोडा जा सकता है।"

अटल—"रहनेसे मुझे फायदा? दुधारी गैयाकी लात भी सही जाय। अब तो 'ब्रदर-इन-ला' कम्पनीका 'सीजन' है। हम लोगोंका यहीं खातमा समझिये।"

श्याम—"अरे तो इतनी जल्दी ही क्या है?—शामको तुम्हारे यहा आऊगा,—गण्डेरीरामको भी लेता आऊँगा।"

डेढ वर्ष बीत चुके। 'ब्रह्मचारी ऐन्ड ब्रदर-इन-ला' कम्पनीके आफिस-रूममे डिरेक्टरोंकी सभा बैठी है।

सभापति तीनकौडी बाबू टेबिलपर जोरोसे मुक्के जमाते हुए कह रहे थे—"ह—ह—हम जानना चाहते है।—रुपये सब गये कहाँ॥ मेरा तो घरमे टिकना ही दुशवार हो गया है—तमाम दुनियाँ आकर चीथे-खाती है। कोयलेवाला कहता है, 'मेरे पचीस हजार चाहिये'—इंटखोलेका ठेकेदार कहता है, 'बारह हजार दो'—और फिर छापेखाने-वाला है, शार्पर कम्पनी है, घोस ब्रदर्स है—न मालूम किस-किसका देना है, एक हो तो भुगतें। सभी कहते हैं, हाईकोर्ट तक नहीं छोडेंगे। मन्दिरका कहीं पता तक नहीं, कि किस दुनियाँमे



"ह—ह—हम जानना चाहते।"

घत रहा है।—इतने ही बीचमे दो लाख रुपये फुक गये॥ वह जुआचोर गया कहा, भगवाचस्त्र-वाला? उसे तो आफिसमें भी कभी नहीं देखता।"

अटल—"मि० ब्रह्मचारीका कहना है कि माताने उन्हें दूसरे काममें बुला लिया है, इधर उनका उतना उत्साह नहीं रहा। आज तो शायद मीटिंगमें आनेके लिये कहा है।"

विपिन—"इतने घबडा क्यों रहे हैं, साहब। चिट्ठा तो आपके सामने मौजूद है, देख लीजिये,—जमीन-खरीद-खाते, शेयर-दलाली-खाते, Preliminary expense (प्रारम्भिक खर्च), ईंट-बनवाई-खाते, establishment (कार्य-स्थापन), विज्ञापन-खाते, आफिस-खर्च-खा—"

तीनकौडी—"चुप रहो, छोकडे कहींके। चोरके भैया गंठकटा।—"

इतनेमे श्याम बाबू भी वहा आ पहुंचे। बोले—"बात क्या है? कुछ मालूम भी तो पडे?"

तीनकौडी—"बात है, हमारा सिर। हम हिसाब चाहते हैं, हिसाब॥"

श्याम—"इससे अच्छी और कौनसी बात हो सकती है। देखिये, हिसाब देख लीजिये। बल्कि एक दिन गोविन्दपुर चलकर अपनी आंखोंसे सब देख-भाल आइये।"

तीनकौडी—"बहुत ठीक। हम इस गठियाको लेकर उस जगलमे जाय, जिससे न मरें तो भी मर जाय। ये सब हम नहीं सुनना चाहते,—हमारे रुपये लौटा दो। कम्पनी तो मौतकी घडियाँ गिन रही है। शेयर-होल्डर लोग मार-मार काट-काट मचा रहे हैं।"

श्याम बाबूने दोनो हाथ तकदीरपर दे मारे, कहने लगे—"सब-कुछ जगन्माताकी इच्छापर निर्भर है। आदमी सोचता कुछ है, होता कुछ और है। अब तक तो मन्दिर समाप्त हो जाना चाहिये था। कई-एक अज्ञात-पूर्व कारणोंसे खर्च अधिक हो गया, जिससे रुपयोंका तोडा पड गया,—इसमें हम लोगोंका क्या कसूर हो सकता है? पर चिन्ताकी कोई बात नहीं, धीरे-धीरे सब ठीक हो जायगा। और एक Call के रुपये उग आनेपर सब कर्ज चुक जायगा, और काम भी धडाकेसे चल निकलेगा।"

गण्डेरीराम कहने लगे—"अब रुप्या कोई नहीं देगा। अपणा विसुवास जाता रया जी—"

श्याम—"कोई विश्वास न करे, तो लाचारी है। मैं दायित्वसे मुक्त हू,—माता जैसे समझें, अपना कार्य चलावें। मुझे बाबा विश्वनाथजी काशीके लिये खींच रहे हैं, वहीं जाकर आश्रय लूँगा।"

तीनकौडी—"तो क्या कहना चाहते हो, कम्पनी डूब गई !"

गण्डेरी—"बीस हाथ पाणीमें।"

श्याम—"अच्छा, रायसाहब, जब हमपर पब्लिकका विश्वास ही नहीं रहा, तो हम लोग मैनेजिंग-एजेन्सी छोड देते हैं। बाजारमें आपका नाम है, इज्जत है, लोग श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते भी हैं, आप ही मैनेजिंग-डिरेक्टर होकर कम्पनी क्यो न चलावें ?"

अटल—"है तो बात ठीक।"

तीनकौडी—"हाँ, मैं ही बदनामीका बोझ सिरपर लादूं, और घरका खाकर जगलकी भैंसें चराऊ ?"

श्याम—"बेगार क्यो भुगतने लगे ? मै ही इस मीटिंगमें प्रस्ताव करता हू कि—'रायसाहब श्रीमान् बाबू तीनकौडी बनर्जी महोदयपर, मासिक १०००) पारिश्रमिक देकर, कम्पनी चलानेका भार सौपा जाय। ऐसे योग्य कार्य-कुशल व्यक्तिका मिलना कठिन है। और हम लोगोंसे अगर कुछ भूल-चूक हो भी गई हो, तो उसके जुम्मेवार आप थोडे ही होगे ?"

तीनकौडी—"सो—सो—मै इस समय कोई निश्चित उत्तर नही दे सकता। सोच-विचारकर कहूगा।"

अटल—"अव दुविधा न कीजिये, रायसाहव। सिर्फ आप ही का भरोसा है।"

गण्डेरी—"हॉं, दुवधा कग्णा ठीक न्हीं, दुवधामे दोणूॅं गये, माया मिली न राम।"

श्याम—"अगर आज्ञा दें तो एक वात और कहू। मैं अच्छी तरह समझ चुका हू कि धन-सम्पदा ही साधनमे वाधक है। मैंने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर दी है, सिर्फ इस कम्पनीके सोलह सौ शेयर और वचे है। उन्हें म सत्पात्रको देना चाहता हू। आप ही इन्हे ले लें। प्रिमियम नहीं चाहता, आप खरीद-दाम पर ले लीजिये, सिर्फ ३२००) मे।"

तीनकौडी—'अव मैं कुछ नही लूँगा-दूँगा। तुम लोग मुझे फसाना चाहते हो।"

श्याम—"राधेश्याम, राधेश्याम। मै तो आपके अच्छेके लिये ही कह रहा हू। न हो, कुछ कम दीजिये—चौवीस सौ—दो हजार—हजार—?"

तीनकौडी—"एक दमडी भी नही।"

श्याम—"देखिये, ब्राह्मणके लिये ब्राह्मणका दान-प्रतिग्रह निषिद्ध है, अन्यथा आप जैसे महानुभावको मुझे यों ही दे देना चाहिये था।

आप थोडो-सी कीमत दे दीजिये—ले लीजिये। मान लो पाच सौ रुपये। Transfer form (ट्रान्सफार फार्म) मेरे पास तैयार है,—जरा देना विपिन।"

तीनकौडी—"मे अ-अ-अस्सी रुपया दे सकता हू।"

श्याम—"अच्छा सो ही सही। वहुत ही नुकसान रहा, पर माताकी ऐसी ही इच्छा है—"

गण्डेरी—"भो'त ही किफायतमे रया, तीनकौडी वावू।"

तीनकौडी वावूने जेवसे मनी-वैग निकालकर, हाल ही मे मिली हुई पेन्शनके रुपयोमेसे, आठ नोट निकालकर वडी सावधानीसे गिन दिये। श्याम वावूने उन्हे जेवमे रखकर कहा—"अच्छा, तो अव आज्ञा हो। घरपर सत्यनारायणकी पूजा है।—आपपर ही कम्पनीका तमाम भार रहा, यह निश्चिन्त हो चुका। शुभमस्तु।—माता सिद्धेश्वरी आपका मङ्गल करें।"

श्याम वावूके चले जानेपर तीनकौडी वावू हसकर वोले—"श्याम वावू है तो वडे चलते-पुर्जे, पर पेटके साफ है। कम्पनीका तमाम वोझ आखिर मुझपर आकर पडा। पॉच-छ महीनेसे गठिया वातने मुझे लगडा-सा वना रखा है, कुछ काम-काज नहीं देख सका, नहीं तो क्या कम्पनीकी हालत ऐसी हो जाती। खैर, अव कमर कसने

लगाना पडेगा, मैं लिफाफा-दुरुस्त काम चाहता हू, लगालेस तो मैं बिलकुल ही पसन्द नही करता।"

गण्डेरी—"आपकूं कुछ तिकलीफ न्हीं करणी पडेगी। कम्पिणी तो डूब गई। अब आपकी छुट्टी है।"

तीनकौडी—"क्या कहा! कम्पनी डूब गई!!—तो क्या हमारी तनखा—"

गण्डेरी—"हा हा! तणखा भी चीं'ये! किस्से लोगे तणखा? तीनकौडी वाबू, आप श्याम वाबूकी कारवाईको न्हीं समझा? नब्बे हज्जार रुप्या कम्पिणीको देणा है। दो गेज बाद लिकुइडिशन होगा। लिकुइडेटर सिक्रिन्ड काल वसूल करेगा, तब कर्ज पटेगा।"

तीनकौडी—"एँ!—क्या कह रहे हो! मैं अब एक पाई भी नहीं देनेका।"

गण्डेरी—"जरूर देणा पडेगा। गोरमिन्ट कान पकडके वसूल कर लेगा। आइन एसी ही चीज है, बाबूजी, समझा कि न्हीं।"

अटल—"आप अकेले थोडे ही देंगे। हर-एक शेयर पीछे दो रुपया देना पडेगा। आपके पास पहले २०० शेयर थे, और आज लिये श्याम बाबूसे १६००, कुल १८०० शेयरोंपर आपको ३६००) रुपया देना पडेगा। कर्ज चुकनेपर लिकुइडेशनका खर्च काटकर जो बचेगा, उसमेंसे थोडा-बहुत वापस मिल सकता है।"



"कुछ भी न्हीं ! कुछ भी न्हीं !"

तीनकौडी—"तुम लोगोंको कितना देना पडेगा।"

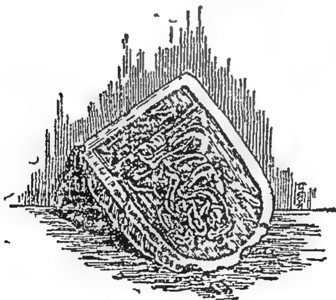
गण्डेरीरामने दोनों हातोंसे ठेंगा दिखाकर कहा—"कुछ भी न्हीं कुछ भी न्हीं। अरे, हम लोगका तमाम शेर श्याम बाबू ले लिय था, ओ-सब आज आपकूँ बेच दिया।"

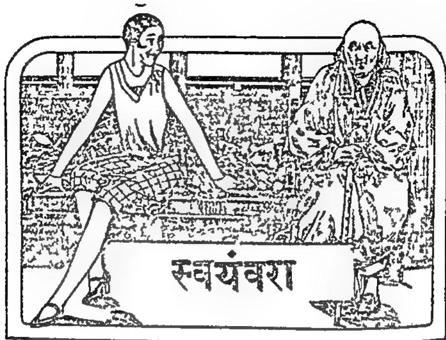
तीनकौड़ी—"चोर—चोर—सब चोट्टे हैं। मैं अभी विलायतको कोल्डहम साहबके पास चिट्ठी लिखता हूँ।"

अटल—"अच्छा, तो अब हम लोग चलते हैं। हम लोगोंके पास शेयर तो है ही नहीं, लिहाजा अब डिरेक्टर भी नहीं रहे। आप काम चलाइये। चलो जी गण्डेरीराम।"

तीनकौड़ी—"ऐं।।"

गण्डेरी—"राम-राम बाबूजी सा'ब।"





चटर्जी महाशयने पत्रा देखकर कहा—"रातको नौ बजके सत्तावन मिनटके बाद अम्बुवाची निवृत्ति है। उसके पहले यह मेह बन्द नहीं होनेका। अभी तो शाम ही है।"

विनोद वकीलने कहा—"तब तो बड़ी मुश्किल हुई, घर कैसे पहुंचा जाय ?"

मकान-मालिक बंशलोचन बाबू बोले—"पहले पानी तो थमने दो, फिर घरकी सोचना। फिलहाल यहीं खाने-पीनेकी व्यवस्था होने दो। ऊधो, ज़रा जा तो, भीतर कह आ, जा।"

चटर्जी बोले—"मसूरकी दालकी खिचड़ी और 'इलिस' मछलीकी भुँजिया।"

विनोद बाबूने तकियेको अपनी ओर खींचते हुए कहा—"अच्छा, यह तो हुआ, पर अब वक्त कैसे कटे? चटर्जी साहब, कोई कहानी कहिये।"

चटर्जी कुछ देर तो चुप रहे, फिर बोले—"पिछली साल, जब मैं मुंगेर रहता था, मुझे एक बाघिनसे पाला पड़ गया।"

विनोद बाबूने बीच ही में रोकते हुए कहा—"दुहाई चटर्जी साहब, बाघकी कहानी मत सुनाइये।"

चटर्जी ज़रा नाराज हो गये, बोले—"तो किसकी कहूं, बताओ? भूतकी या साँपकी?"

—"इस बरसातमें बाघ, भूत, साँप, कुछ नहीं खप सकता। कोई मुलायम-सी छाँटकर प्रेमकी कहानी सुनाइये।"

—"कहानी तो मैं कहता ही नहीं। जो कुछ कहता हूं, बिलकुल सची बातें होती हैं।"

—"अच्छी बात है, कोई बिलकुल सची प्रेमकी बात ही सुनाइये।"

नगेन बोल उठा—"बस हो चुका, चटर्जी साहब प्रेमकी बात सुनायेंगे!—कितनी उमर होगी चटर्जी-साहब, आपकी?—मुँहमे दाँत और कितने बाकी है?"

—"प्रेम क्या दाँतोंसे चबाकर खानेकी चीज है? अरे गधा, दाँतोंमें प्रेम नहीं होता, प्रेम होता है मनमें।"

नगेनने कहा--"मन तो सूखकर अमचूर हो गया है। 'प्रेम' का आप क्या जाने ? सब भूल-भाल गये होंगे। प्रेमकी बात तो तरुणोंसे पूछिये। क्यो भई ऊधो ?

--"तरुण क्या होता है ? सीधी बोली क्यों नहीं बोलता--'छोकड़े' कह 'छोकड़े। तीन बीसी उमर बीत चुकी, केदार चटर्जी प्रेमकी बात कुछ जानते ही नहीं, और तुम लोग जानते हो--भुक्खड़ छोकड़े कहींके।"

विनोद बाबू--"अरे जाने भी दो, क्यों झूठ-मूठ ब्राह्मणको तंग कर रहे हो,--सुनो भी तो, क्या बात है।"

चटर्जी कहने लगे--"वर्णोंमें श्रेष्ठ हुए ब्राह्मण। दर्शन कहो, काव्य कहो, प्रेमतत्त्व कहो, सब ब्राह्मणके माथेसे निकले है, और ब्राह्मणोमे श्रेष्ठ हुए चटर्जी। जैसे, बंकिम चटर्जी, शरत् चटर्जी--"

--"और ?"

--"और ये केदार-चटर्जी। क्यो नहीं कहूँ ? तुम्हारा डर पड़ा है क्या ?"

--"खैर, जाने दीजिये। आप कहानी शुरू कीजिये।"

चटर्जी साहबने कहना शुरू किया--"पिछली सालकी बात है, मुझे एक अनुपम सुन्दरी नारीसे पाला पड़ गया था।"

नगेन बोल उठा--"अभी तो आप कह रहे थे, बाघिनके पाले ?"

विनोदने कहा--"एक ही बात है।"

चटर्जी साहबने कहा—"अरे मूरख! बाघिनसे पाला पड़ा था मुंगेरमें, और यह जिकर है पंजाब-मेलका, टूण्डलाके इधर। खैर, किस्सा सुन लो!"—

पिछली साल माघके महीनेमें चरण घोषने अपनी छोटी लड़कीको टूण्डला पहुंचा आनेके लिये कहा,—उसका जमाई वहीं काम करता है। अच्छा ही हुआ, दूसरेके खर्चसे सेकेण्ड-क्लासमें सफर और लौटने वक्त एक दिन काशी-वास भी हो जायगा। लड़कीको तो निर्विघ्न पहुंचा आया। लौटते वक्त टूण्डला स्टेशनपर, देखूं तो, गाड़ीमें सूई रखने तककी जगह नहीं, आगरेसे लौटे हुए दुनिया-भरके अमरीकन यात्री फर्स्ट-सेकेण्ड क्लासकी तमाम बेञ्चें घेरे पड़े हैं। भाग्यसे जमाई रेल्वेके डाक्टर थे, इसीसे किसी तरह गार्डको कह-सुनकर उन्होंने मुझे एक फर्स्ट-क्लासके डब्बेमें ढकेलकर चढ़ा दिया। गाड़ी भी उसी वक्त छूट गई।

करीब तब सात बजे होंगे, पर मारे कुहरेके चारों तरफ कुछ सूझता नहीं था, गाड़ीके अन्दर भी धुंधला-सा दीखता था। कुछ देर तो खड़ा-खड़ा आंखें मींडता रहा, फिर धीरे-धीरे कमरेके भीतर जरा साफ-साफ दिखाई देने लगा।

देखते ही दंग रह गया। उधरकी बेञ्चपर असुरकी तरह मोटा-



" दूरसे बहुतसी मेमें देखी है "

ताजा-लम्बा एक साहब बुरी तरह मुँह फाडे आँखें मीचे चित्त पडा है, और बीच-बीचमे कुछ बडबडा रहा है। दोनों बेन्चोंके बीचमे ज़मीन पर एक और नाटा-सा मोटा साहब औंधे-मुँह पडा था, और उसके



"किन्तु ऐसे सामने-सामने—"

सिरहानेके पास एक खाली बोतल लुढ़क रही थी। इधरकी बेंचपर कोई नहीं था, पर उसपर कीमती बिछौने बिछे हुए थे, उसपर एक अजीब ढगकी पोशाक पडी थी,—शायद भालूके चमडेकी होगी,—और भी कई तरहकी चीजे बिखरी पडी थीं। गाडी चल रही थी, भागनेका कोई रास्ता न था। बेंचके उधर एक कुरसी-सी पडी थी, उसपर बैठकर दुर्गा-नाम जपने लगा। किसी तरह वक्त काटने लगा, साहब दोनों पडे ही रहे, मुझे भी ज़रा-जरा हिम्मत-सी आने लगी।

एकाएक बाथ-रूमका दरवाजा खुला और उसमेंसे एक अनुपम मूर्ति निकली। दूरसे बहुतसी मेमे देखी हैं, किन्तु ऐसे आमने-सामने देखनेका कभी मौका ही नहीं आया।

मुँह था चीनके करौंदा जैसा, ओठ क्या थे दो पकी मिर्चें थीं, सगमर्मर सरीखे कुँदे हुए दो हाथ थे। गरदन तक छटे हुए बाल थे, सिर्फ कानके पास सनकी तरह चमकते हुए लच्छेदार दो-चार बाल लटक रहे थे। पहनावेमे सिर्फ एक डेढ हाथका अंगौछा—

विनोद बाबू बोल उठे—"अंगौछा नहीं, चटर्जी साहब, उसको 'स्कार्ट' कहते हैं।"

—काट-फाट तो मैं जानता नहीं, बाबा।—मैंने अपनी आँखोंसे देखा है, अपने यहा जिस चारखानेकी रजाई बनती है, उसीका एक छोटासा टुकडा घुटनोंके ऊपर तक पहने थी,उसके नीचे कदलीस्तम्भके समान दो पैर उतर आये थे, मोजा पहने थी या नहीं—कुछ

मालूम ही नहीं होता था। 'शरीर-यष्टि' शब्द अब तक छापेके अक्षरोंमे ही पढ़ा था, अब अपनी आँखों देख लिया,—हाँ, दरअसल वह यष्टि (लकड़ी) ही थी, सिरसे लेकर छाती-कमर तक सब छिली हुई एकसी जान पड़ती थी, कहीं भी जरा ऊँचा-नीचा ऊबड़-खाबड़ नहीं था। 'सञ्चारिणी पह्नविनी लतेव' नहीं, बल्कि बिलकुल जलती हुई 'हवाई' (आतशबाजी) की सींक थी। देखकर बड़ी भक्ति हुई, माथेसे हाथ लगाकर बोला—"सलाम, मेम-साहब !"

खिलखिलाकर हँस पड़ीं। पकी मिर्चकी सधमेसे कुछ कची मकाके दानेसे दिखाई दिये। सिर हिलाकर बोलीं—"गुड् मॉर्निङ् !"

मेम-साहब नृत्यपरा अप्सराकी तरह चञ्चल हाव-भाव दिखाती हुई आकर बेञ्चपर बैठ गईं, मैं घबड़ा-सा गया,—कुरसी छोड़कर उठ बैठा। मेमने कहा—"सिट डाउन बाबू, डरो मत।"

देवीके एक हाथमें 'वराभय' था और दूसरेमें सिगरेट। मैंने समझा, देवी प्रसन्न हुई है, अब मेरा कोई क्या कर सकता है। अंग्रेजी तो अच्छी आती नहीं थी, हिन्दी-अंग्रेजी मिलाकर निवेदन किया—"गाड़ीमें कहीं भी जगह नहीं मिली, इसीसे अनधिकार घुस आया हूं, लेकिन गार्डका हुक्म लेकर, मेमसाहब कुसूर माफ करें।"

मेमने फिर अभय दिया, मैं भी फिरसे बैठ गया।

परन्तु पीछा न छूटा। मेम-साहब मेरे पास आकर बैठ गईं और दाँत निपोरकर मेरी तरफ टकटकी लगाये देखने लगीं।

अरे, इस केदार चटर्जीका साँपने पीछा किया है, बाघ पीछे दौड़े हैं, भूतने डराया है, लगूरने दाँत निकालकर घुड़की दिखाई है, पुलिस-कोर्टके वकीलने जिरह की है, लेकिन ऐसी दुर्दशा कभी नहीं हुई। एक तो साठ बरसकी उमर—रग उज्ज्वल-श्याम तो नहीं कहा जा सकता—फिर पाच दिनसे हजामत नहीं बनी थी, मुँह ऐसा हो गया था, जैसे कदमका फूल,—परन्तु इन सब बाधाओंको भेदकर लज्जा बाहर निकल आई और उसने मेरे कानों तक बैगनी कर दिया। मुझसे रहा न गया, बोला—"मेम सा'ब, क्या देखती हो ?"

मेम कहकहा मारकर हस उठी, बोली—"कुछ नहीं, नो ऑफेन्स। तुम कौन है बाबू ?"

मेरी इज्जतमें बट्टा लगा। मैं क्या कोई स्वाग था, या जानवर ? छाती फुलाकर सिर उठाकर बोला—"आइ केदार चटर्जी, नो जू-गार्डेन (चिड़ियाखाना)।"

मेम फिर होहो करके हँसने लगी, बोली—"बेङ्गौली ?"

मैंने गर्वके साथ उत्तर दिया—"इयेस सर, हाई कास्ट बेङ्गौली ब्राह्मिन।"

जनेऊको बाहर निकालकर बोला—"सी ?—आप कौन हैं, मैडम ?"

विनोद बाबू बोले—"छि चटर्जी-साहब, मेमका परिचय पूछा आपने। 'एटिकेट' मे इसको मनाई है।"

—"क्यों, पूछना क्यों नहीं ? मेमने जब मेरा परिचय लिया, तो म क्यों छोड देता ?—मेम बिलकुल गुस्सा न हुई, सब बतला दिया,—नाम जुआन जिस्टर, निवास-स्थान अमेरिका, इस देशमें पहले भी कई बार आ चुकी हैं, इन्डिया बड़े आश्चर्यकी चीज है।

मुझे कुछ हिम्मत-सी आ गई, मैंने उन दोनों साहबोंकी तरफ इशारा करके पूछा—"ये लोग कौन हैं ?"

मेम बेचारी बडी सीधी-सादी थी। बेञ्चपर पडे हुए लम्बे साहबकी तरफ कानी उँगली दिखाकर बोली—"दैट चंपी है टीमथी टोपर, मुकाम कॅलिफोर्निया, हमसे शादी करने माँगता है। ये दस करोडका मालिक है। और, ये जो जमीनपर सोता है, ये है क्रिस्टफार कोलम्बस ब्लाटो, ये भी हमको शादी करने मागता है, इसके पास भी दस करोड डालर है।"

मैंने गम्भीरताके साथ कहा—"कोलम्बसने अमेरिकाका पता लगाया था।"

मेमने कहा—"वह दूसरा आदमी है। ये लोग अमेरिकामें रहते हैं, लेकिन कुछ पता नहीं लगाने सके। वह देश एकदम सूख गया है—मेथिलेटेड स्पिरिटके अलावा कुछ नहीं मिलता। इसी वास्ते ये लोग देश छोडके 'पीयोर चीज'के वास्ते दुनियाँमें घूम रहे हैं।"

मैंने पूछा—"मालूम होता है, ये लोग बडे भारी स्पिरिचुआलिस्ट हैं ?"

मेमने कहा—"व्हेरी।"

इतनेमें लम्बा साहब आँखे खोलकर मेरी तरफ गुस्सासे देखता हुआ घूँसा दिखाकर बोला—"यू-यू, गेट आउट क्विक।" नाटेने भी एकाएक हाथ-पैर पटकना शुरू कर दिया।

मैं अपनी लकड़ीको मजबूतीसे पकड़कर ठक-ठक करके ठोंकने लगा। मेम-साहबने बिछौनेपर से अपने परदार स्लीपर उठाकर लम्बेके दोनों गालोंपर जमा दिये, फिर बड़े प्यारसे बोलीं—"यू पीग, यू पीग।" नाटेको एक लात मारकर बोली—"यू पिग, यू पिग।" दोनो उसी समय फिर मुँह बाकर सो गये। मेमने उनकी छातीपर एक-एक स्लीपर रखकर अपने स्थानपर बैठकर कहा—"कोई डर नहीं, बाबू।"

भरोसा ही क्या है? आरब्य-उपन्यासमें पढ़ा था, एक दैत्य किसी राजकुमारीको सन्दूकमें भरकर सिरपर लिये फिरता था। दैत्य जब सो जाता, तो राजकुमारी उसकी छातीपर एक कंकड़ रखकर दुनियाँ भरके राजकुमारोंको इकट्ठा करती और उनसे अगूठियाँ ऍठ लेती थी। मैंने सोचा, अब लिया इसने। यह मेम तो दो-दो दैत्योंपर सवार होकर घूम रही है, अभी निकालती है अपनी निन्यानवे अगूठियोंकी माला।

जिस बातसे डर रहा था, वही हुई। मेरे हाथमें एक चाँदी और ताँबेके तारकी गुहँमा अगूठी थी। मेमने सहसा उसपर नज़र डालकर कहा—"हाउ लवली। देखूँ बाबू जरा कैसी अँगूठी है?"

मैंने डरते-डरते हाथ आगे बढ़ा दिया, जैसे उँगलीकी हड्डीमें

नश्तर लगवाना हो। मेमने चटसे अँगूठी खोलकर अपनी उँगलीमे डाल ली, बोली—"ब्यूटि फू।"

हरे राम। यह तो मेरी त्रिसन्ध्या जप करनेकी अँगूठी है,—हाय हाय, इस म्लेच्छ लुगाईने उसे अपवित्र कर डाला। मेरी आँखोंमे आँसू डबडबा आये, पर कौतूहल भी खूब हुआ। बोला—"मेम-साहब, आपके पास और कितनी अँगूठियाँ हैं? ग्रैन्टी-नाइन?"

मेम-साहबने वक्षके नीचेसे एक टङ्क निकाला, उसमेंसे एक अजीब तरहका बकस खोलकर मुझे दिखाया। आँखोमे चकाचौंध-सा लगा। बहुतसे खाने बने हुए थे, किसीमे गलेका हार था, तो किसीमें कानोके ऐरन, तो किसीमे कुछ। एक अँगूठीकी ट्रे—जिसमे बीस-पचीस अंगूठियाँ थीं—मेरे सामने लाकर रख दी, और बोली—"जो जीमे आवे, उठा लो, बाबू।"

मैंने कहा—"ऐसा क्यों? मेरी अगूठी तो कुल-जमा सवा दोकी है। मैं आपको उसे प्रेजेन्ट करता हूँ, सावधानीसे रखियेगा, व्हेरी होऽली अँगूठी है।"

मेमने कहा—"यू ओल्ड डियर। लेकिन मैं अगर तुमारा उपहार लूँगी, तो मेरा उपहार भी तुमको वापस नहीं देना चाहिये।" यह कहकर एक चुन्नीकी अंगूठी मेरी उगलीमे डाल दी।

मैंने कहा—"थैंक्क यू मेम-साव, मैं आपका गुलाम हूँ,

फारगेट मी नोट्।" मन-ही-मन बोला—"डरो मत ब्राह्मणी, यह अँगूठी तुम्हारे ही लिये रही।"

गाड़ी इटावा आकर ठहरी। केलनारका खानसामा चाय, रोटी, मक्खन ले आया, और पूछने लगा—"टी हुजूर?" मेमने ट्रे रख दी। उसके बाद मेरी लकड़ी लेकर उससे लम्बे और नाटे दोनों साहबोंको जगाकर बोली—"गेट अप टिमी, गेट अप ब्लाटो।" वे जंगली सूअरकी तरह गुर्राते हुए न जाने क्या बड़बड़ा गये, कुछ सुनाई न पड़ा। अन्दाजसे समझ गया, अभी तक उनकी अवस्था ऐसी नहीं हो पाई है कि वे उठकर बैठ सकें। मेमने मुझसे पूछा—"चटर्जी, तुम पीओगे? कुछ परहेज तो नहीं है?"

अब तो बड़ी मुश्किल हुई, क्या करूँ? म्लेच्छ स्त्रीके हाथकी चाय—पर भुरभुरी खुशबू—जाड़ा भी काफी पड़ रहा था। शास्त्रमें चाय पीनेकी कहीं मनाई तो है नहीं। इसके सिवा रेलगाड़ी जैसे बृहत् काष्ठपर बैठकर शीत-निवारणके लिये 'औषधार्थे' यदि चाय पी जाय, तो यह निश्चय ही है कि उसमें 'दोष नास्ति'।

मैंने कहा—"मैडम रानी, जब तुम स्वयं अपने हाथसे चाय दे रही हो, तो पीऊँगा क्यों नहीं। पर,—रोटी रहने दो।"

चायसे मनके किवाड़ खुल जाते हैं, पीते-पीते बहुतसी ऐसी-वैसी

बातें मुहसे निकल पडती हैं। अश्वत्थामा जैसे दूधके अभावमें चावलका पानी पीकर आनन्दसे नाचते थे, उसी तरह हमारे देशके बेचारे ग़रीब भाई चाय ही से शराबका नशा जमा लेते हैं। बङ्किम चटर्जीने तरीवत (विधि) के साथ चाय पीना नहीं सीखा था, सर्दी-जुक़ाम होनेपर अदरक और नमक डालकर पीते थे,—इसीसे उनसे लिखा गया है—"वन्दी मेरे प्राणेश्वर "। आजकल चायके प्रतापसे देशमे भावों (हृदय-तरंगो) की बाढ आई है,—घर-घरमे चाय है, घर-घरमे प्रेम है। उस ज़मानेमे कवियोके बड़े ठाट थे,—उपवन रे, चाद र, मलय रे, कोकिल रे, तब कहीं पञ्चशर छूटेंगे। अब कोई झमट ही नहीं रहा,—चाहिये सिर्फ टूटी-मूठके दो प्याले, थोडासा फटा-पुराना मौमजामा, चीडकी बनी हुई एक टेबिल, दोनों तरफ तरुण और तरुणी, और बीचमें धुआं देती हुई चायकी डेगची। तकदीर बुलन्द थी, जो साठ वर्षकी उमर निकली,—बाल-बाल बच गया।

मेमसे पूछा—"अच्छा मेम-साहब, ये जो दोनों हुजूर लोट लगा रहे हैं, दोनों ही तो आपके 'पाणि-प्रार्थी' हैं। इनमेंसे आप किस भाग्यवानको वरण करेंगी ?"

मेमने कहा—"यह एक समस्या है। मैं अभी तक मनको स्थिर नहीं कर पाई हूँ। कभी सोचती हूँ, टॉम ही योग्य पात्र है, क़दका लम्बा, सुपुरुप मालूम देता है, मुझे चाहता भी बहुत है, पर शराब पीते ही उसका दिमाग़ खराब हो जाता है। और ये जो क्लाटो है, ज़रा

गट्टा-मोटा तो जरूर है, और उमर भी काफी हो चुकी है, पर मन आज्ञाकारी वहुत है—मन वडा नरम है। ज़रासी शराब पीते ही गे देता है। वडी मुसीवतमे जान है, दोनों-के-दोनों एक-से है, पीछ छोडनेवाला कोई नहीं। खैर, अभी तो कई घट वक्त मिलेगा, हवर पहुचनेसे पहले ही निश्चय कर लूंगी। अच्छा, चटर्जी, तुम्हें वताओ न,—इनमेंसे किसके साथ व्याह करना ठीक होगा।"

मैंने कहा—"मेम-साहव, आपने इनके स्वभाव-चरित्रका जैसा हाल सुनाया, उससे तो मालूम होता है, दोनों ही अत्यन्त सुपात्र है। परन्तु—ये जिस तरह वदहोश पडे है——"

मेम वोलीं—"ये तो कुछ नहीं है। थोडी देर वाद दोनों चगे हो जायगे।"

मैंने कहा—"अगर आपकी अपनी तवीयत खास तौरसे किसीपर न हो, तो आप अपने मा-वाप पर निश्चय करनेका भार दीजिये न ?"

मेमने कहा—"मेरे मा-वाप नहीं हैं, मैं खुद ही अपनी अभिभाविका हूँ। देखो चटर्जी, तुम्हींपर भार छोडती हूँ। तुम अच्छी तरह दोनोको देख-भाल लो। मुगलसराय उतरनेसे पहले ही अपना निर्णय मुझे कह देना। सोचा था, एक रुपया ऊपरको उछालकर चित-पट देखकर मन स्थिर कर लूं, पर तुम जब मौजूद हो, उसकी कोई जरूरत नहीं।"

है तो वडे मजेकी व्यवस्था। अपने आत्मीय-वन्धुओंके लिए

अब तक मेने बहुतसे लडकी-लडके ठीक कर दिये है, परन्तु ऐसा अद्भुत पात्र देखनेका भार आज तक कभी नहीं मिला। दोनो करोडपती है और दोनो ही पक्के शरावी। एक लम्बाईमें वडा है, तो दूसरा वजनमें पूरा। विद्या-बुद्धिका परिचय अब तक तो सिर्फ गुरोंना ही मिला है। उह, चूल्हेमे जाय! खुद मेमको ही जब कोई आपत्ति नहीं, तो हमें क्या, दोनोंमेसे किसी एकका नाम ले दूँगा। और अगर समझूँ कि मेम मेरी बात टालेगी नहीं, तो करूँगा,—"मा लक्ष्मी, सिर जब पहले ही मुडा चुकी हो, तो बाकी काम भी खत्म कर डालो। इन दोनो भावी पतियोंको मार-मार झाडू नरकस्थ कर डालो।"

बातें करते-करते साढे नौके करीब दिन चढ गया। आगे एक छोटीसी स्टेशनपर गाडी ठहरेगी, उस समय मेम और साहब लोग 'हाजरी' खाने रिफ्रेशमेन्ट-रूममे जायगे।—तबसे कुछ खयाल नहीं किया था, अब देखा तो, चाय पीनेके बाद मेमके ओठ फीके पड गये हैं। समझ गया, रंग कच्चा है। मेमने एक सोनेकी डिबिया खोली, उसमेसे निकला एक छोटासा चट्टा, एक लाल रगकी बत्ती, और एक पाउडरकी पोटली। लाल बत्तीको ओठोंसे रगडकर और नाकपर जरा पाउडर लगाकर मेमने अपने मुहकी मरम्मत कर ली।

गाडी ठहरी। मेमने कहा—"चटर्जी, मैं ब्रेकफास्ट खाने जाती हू। टीम और ब्लाटोको यहीं छोडे जाती हू, जरा निगाह रखना, कहीं जगकर दोनों मार-पीट न कर बैठें। अगर तुमसे न सम्हाले बनें, तो जजीर खींच देना।"

वाह, कैसा सीधा-सादा काम दे गई है। करीब डेढ घटं बाद कानपुरमे गाडी ठहरेगी, तब कहीं मेम-रानी इस डब्बेमे आवेंगी। तब तक मैं तो मरा। हाथके डडेको जरा अच्छी तरह सम्हालकर फिर दुर्गा-नाम जपने लगा।

लम्बा साहब उठ बैठा। जभाई ली, आँखें मीडीं, उँगलियाँ चटकाईं। मेरी तरफ एकबार घूरकर देखा, पर कुछ बोला नहीं। लडखडाता हुआ बाथ-रूममे चला गया।

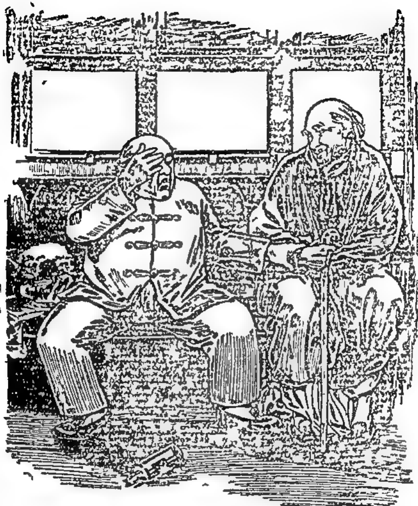
इतनेमे गट्टा साहब मेढककी तरह उछलकर चटसे मेरे बगलसे आकर बैठ गया। मैं डरके मारे चिल्लाना ही चाहता था, पर उससे पहले ही उसने मेरा हाथ हिलाकर कहा—"गुड मौर्निङ्ग सर, मैं हू क्रिस्टफार कोलम्बर ब्लाटो।"

मुझे जरा हिम्मत-सी आ गई, बोला—"सलाम हुजूर।"

—"मेरे पास दस करोड डालर हैं। हर मिनटमे मेरी आमदनी—"

—"हुजूर दुनियाके मालिक हैं, मैं जानता हू।"

ब्लाटोने मेरी छातीपर एक उँगली छुआकर कहा—"लुक हियर बाबू, मैं तुमको पाच रुपये बख्शीश दूँगा।"



"सिसक-सिसक कर रोने लगा"

—"क्यों हुजूर ?"

—"मिस जिल्टनको तुम्हें राजी करना ही पड़ेगा। मैंने तुम

दोनोकी सारी बातें सुन ली हैं। तुम्हींपर सब दारमदार है, तुम्हीं लडकीवाले हो। वो टीमथी टोपर, बडा पाजी आदमी है वो, उसकी तमाम जायदाद मेरे पास रहन रक्खी है। वो तो पक्का शराबी है, पौपर है, उसके साथ व्याह होनेसे मिस जिल्टर बेचारी कुढ-कुढके मर जायँगी।"

इतना कहकर ब्लाटो सिसक-सिसक कर रोने लगा। एक बोतलमें जरासी शराब बच रही थी, उसे मुहमें उडेलकर बोला—"बाबू, तुम दूसरा जनम मानते हो?"

—"जरूर।"

—"मैं पहले जनममें एक प्याला पपीहा था, और यह मेम थी एक रूपवती पनकौडी। हम दोनोंमें ”

इतनेमें बाथ-रूमका दरवाजा हिल उठा। ब्लाटो मुझे पांच उंगलियोंका इशारा करके चटसे अपनी जगहमें जाकर सो गया और लगा खुर्राटे भरने।

लम्बा साहब—मेम जिसे टिमी कहती है—बाथ-रूमसे निकलकर अपनी बेञ्चपर अकडकर बैठ गया। तब ब्लाटोने नींदसे जागनेका बहाना करके जभाई ली, आँखें मीडीं, और मेरी तरफ एकबार करुण-दृष्टिसे देखकर बाथ-रूममें घुस गया।

अब टिमीकी बारी आई। ब्लाटोके भीतर घुसते ही उसने पास आकर मेरा हाथ पकड लिया। मैं पहले ही से बोल उठा—"गुड मौर्निङ्ग सर।"

टिमीने मेरा पहुंचा बडी ज़ोरसे मरोड दिया।

—"उफ़!"

टिमीने कहा—"तुम्हारी हड्डिया पीस डालूँगा।"

डरते-डरते मैंने कहा—"इयस सर।"

—"तुम्हे कुचलकर 'जेली' बना दूंगा।"

—"इयस सर।"

—"मिस जुआन जिल्टरके साथ मैं व्याह करूंगा-ही-करूंगा। मैंने सब सुना है। अगर मेरी तरफ़से तुमने उसे नहीं कहा, तो तुम्हें फिर जीना नहीं होगा।"

—"इयस सर।"

—"मेरे पास अगाध सम्पत्ति है। पाँच होटल हैं, दस जहाजकी कम्पनियाँ, पचीस सूतरके कारखाने। ब्लाटोके पास क्या है? एक शराबकी भट्टी है—सो भी चोरी-चोरा, रुपये मेरे लगे हैं। ब्लाटो बडा कमबख्त, मतवाला, शराबी, गट्टा बदमाश "

ब्लाटो शायद गुस्सा होकर सब सुन रहा था।

एकाएक वह बाहर निकल पडा, और टिमीकी तरफ लपककर घूँसा उठाकर बोला—"कौन है कमबख्त, शराबी कौन है, गट्टा बदमाश कौन?—"

लोग समझते हैं कि गाना और गाली हिन्दीमें ही अच्छी लगती है। हिन्दी गालियोंमें प्रसाद-गुण बहुत ज्यादा है, यह मानना पडेगा।

परन्तु अगर निख़ालिस आवाज और डपट सुनना चाहो, तो विलायती गाली सुनो—ख़ासकर अमेरिकन। एक-एक लब्ज क्या है, तोपका गोला समझो, कानके भीतरसे जाकर दिलको दहलाता है। अंग्रेजी मुझे अच्छी आती नहीं, सब गालियोंका अर्थ तो मैं नहीं समझ सका, पर उससे जायका लेनेमें कुछ भी बाधा नहीं आई।

देखा, एक बातमें साहब लोग हम लोगोंसे बहुत कमजोर हैं,—वे वाक्‌युद्ध ज्यादा देर तक नहीं कर सकते। पूरे दो मिनट ख़तम भी न हो पाये कि हाथापाई शुरू हो गई। मैं किं-कर्त्तव्य-विमूढ होकर देखता रहा। गाडी तब कानपुरमें आकर ठहर चुकी थी, मुझे इसका पता भी नहीं।

दनदनाती हुई मेम-साहब भी आ पहुचीं। इस हाथी-कठुएकी लडाईको रोकना उनके बूतेसे बाहर था। बोलीं—"टिमी डियर, डोन्ट,—क्लाटो डारलिंग, डोन्ट,—प्लीज प्लीज़ डोन्ट।" कुछ नतीजा न निकला। मैं, मामला गडबडाते देख, गाडीसे उतरकर भागा।

फर्स्ट-सेकेण्ड क्लास सब खाली थे। डाइनिंग-कारमें बैठे सब खाना खा रहे थे। किससे कहूं? देखूँ तो, एक साहब सफेद फ्लालेनका पतलून डाटे प्लेटफार्मपर सीटी बजाता हुआ टहल रहा है। मैं हाँफता हुआ उसके पास पहुचा और जल्दी-जल्दी बोला—"कम सर, लेडीपर बडी भारी आफत है।" साहब एक जोरसे सीटी देकर मेरे साथ भागा।



"हाथापाई शुरू हो गई"

मेम तब मेरा डंडा लिये दोनोंको बिना किसी पक्षपातके पीट रही
। पर उन्हें इसकी ज़रा भी परवाह न थी, बराबर जूझ रहे थे।
गन्तुक साहबने मेमसे पूछा—"हैल्लो जुआन, क्या, बात क्या है ?"
सने झटपट बात समझा दी। साहबने टिमी और ब्लाटोको

रोकनेकी कोशिश की, पर वे उल्टे उसीपर टूट पडे। तब तो साहबका हाथ छूटा।

बाप रे बाप। पट्ठे ने ऐसे घूँसे जमाये कि दोनोंके होश गायब। टिमीका सिर छिटककर दरवाजेसे जा लगा—बेचारा बुरी तरह गिर पडा—चारों तरफ अँधेरा दिखाई देने लगा। और ब्लाटो—उसकी तो हालत ही विचित्र थी—गोबरका सा चोथ धप्पसे नीचे गिर पडा और बेञ्चके तले चित्त पड रहा। मामला बिलकुल ठंडा हो गया।

जरा सुस्ताकर मेमने मेरे साथ नये साहबका परिचय करा दिया—

"आप प्रसिद्ध मिस्टर निल बाउन्डर हैं, घूँसेबाजीमे बहुत ही दक्ष हैं,—और आप हैं मिस्टर चटर्जी, व्हेरी डियर ओल्ड फ्रेन्ड।"

साहबने मेरे चेहरेकी ओर देखकर कहा—"सम बियार्ड।"

मेम बोली—"दाढीसे क्या। आप बहुत ज्ञानी पुरुष हैं।"

साहबने मेरा हाथ पकडकर खूब जोरसे हिलाया, फिर कहा—"हा-डू-डू ? बहुत जोरका जाडा है—क्यों ?"

चटसे मेरे दिमागमे एक बात सूझ आई। मेम-साहबसे मैंने चुपकेसे कहा—"देखिये, मिस जुआन, इतनी गडबडीमे आप क्यो पडती हैं ? टिमी और ब्लाटो दोनो ही इस वक्त काबू हो गये है। मेरी राय

तो यह है कि आप इन विल साहबसे शादी कीजिए। बड़े अच्छे आदमी हैं।"

मेम बोली—"राइटो। मै अब तक इस नातको भूल ही गई थी। आइ से,—विल, मेरे साथ व्याह करोगे ?"

विलने कहा—"रादर। कौन कहता है कि नहीं करूंगा ? "

राधेश्याम! राधेश्याम। साहब-जात बड़ी बेहया होती है। विलको रोककर मैंने कहा—"ठहरो साहब, अभीसे ऐसा क्यो ? मै हू लडकीवाला—ब्राइड मास्टर। पहले तुम्हारा कुल-शील तो जान लूँ, उसके बाद अपनी राय दूँगा।"

विल कहने लगा—"मेरे बाबा मोची थे। मेरे बाप भी बचपनमे जूता गाँठा करते थे।"

मैंने कहा—"इससे कुलकी मर्यादा नष्ट नहीं होती। तुम्हारी आमदनी कितनी है ?"

विलने जरा हिसाब लगाकर कहा—"मिनटमे दस हजार, घंटेमे ? लाख। परन्तु चिन्ताकी कोई बात नही, मेरी मौसीके मरनेपर आमदनी और भी कुछ बढ़ जायगी। उनके पचीस तो बड़े-बड़े तालाब हैं—खारी पानीके, उनमे 'ह्वेल' (Whale) मछली किलबिलाया करती है।"

मैंने कहा—"रहने दो, अब ज्याद कहनेकी जरूरत नहीं, मै अपनी राय देता हू। जरा आगे बढ आओ, मैं आशीर्वाद दूंगा, रियेल हिन्दू स्टाइल।"



"ओठोंका सिन्दूर अक्षय बना रहे"

परन्तु धान और दूब कहा है ? खिडकी मे से मुँह निकालकर
बोला—"ए कुली, जल्दी थोडा घास छीलके लाओ, पैसा मिलेगा।"



" नाचना शुरू कर दिया "

अंग्रेज़ी आशीर्वाद तो मे जानता नहीं। कहा—"अगर आपत्ति हो, तो हम अपनी भाषामे बोलें ?"

—"जरूर, जरूर।"

साहनके सिरपर एक मुट्ठी घास छोडकर मैंने कहा—"जीते रहो ... न तो काफ़ी है ही, पुन भी होंगे, और लक्ष्मी तो मे यह सोच ...

हू। परन्तु खबरदार वेटा, ज़्यादा शराव-अराव न पीना, हाँ। नहीं तो ब्रह्मशाप लगेगा !" साहवने फिर एक वार मेरा हाथ पकडकर झकझोर डाला—वाँह झनझना उठी।

ममेसे कहा—"वेटी लक्ष्मी, तुम्हारे ओठोंका सिन्दूर अक्षय वना रहे। वीर-प्रसविनी वननेकी जरूरत नहीं, वेटी,—यह आशीर्वाद तो हमारी अवलाओंके लिये ही रिजर्व रहने दो। तुम अव गरीव काला-आदमियोंके दु:खका निमित्त न वनो,—दो-चार शान्त-शिष्ट कच्चे-वच्चे लेकर अपनी घर-गिरस्ती चलाओ।"

मेमने एकाएक अपना मुँह ऊचा करके मेरी उस पाँच दिनकी वढी हुई झाँटे-काँटेसी उठी हुई दाढीपर

विनोद वावू वोले—"अरे, छि छि।"

चटर्जी साहवने कहा—"हू। 'देवी-चौधरानी'मे ऐसा ही लिखा है, क्यों ?"

—"अच्छा चटर्जी साहव, पकी मिर्चका जायका कैसा रहा ?"

—"उसमे चरपराहट नहीं है। अरे, उनके यहा रिवाज ही ऐसा है, इसी तरह वे अपनी भक्ति-श्रद्धा जाहिर करती हैं, इसमें शरमानेकी कौनसी वात है ?"

चटर्जी साहव कहने लगे—'उसके वाद, देखूँ तो, लम्वा और नाटा, दोनो साहव अपना-सा मुह लटकाये उतर रहे हैं—दो कुली उनका असवाव उतार रहे है।"

गाडी छूट गई। निल और जुआनने हाथमें हाथ मिलाकर नाचना शुरू कर दिया। मैं आँख फाड-फाडकर देखने लगा।

जुआनने कहा—"चटर्जी, आज ऐसे आनन्दके दिनमे तुम इस तरह 'गलम' होकर बैठे मत रहो। हम लोगोके नाचमे शामिल होओ।"

मैंने कहा—"मादर लक्ष्मी, मेरे करिहामे गठियावात है। नाचनेके लिये वैदराजकी मनाई है।"

—"तो तुम गाना गाओ, नाचेंगे हम ही लोग।"

क्या करता,—यवनोके चगुलमे तो फस ही चुका था। एक रामप्रसादी गाना शुरू किया।

मुगलसराय तक तमाम रास्तेमे यही होता रहा, अन्तमे मुगल-सरायका स्टेशन आया। मेमने मुझसे कहा कि कलकत्ते पहुचते ही उनका व्याह हो जायगा, तीन दिन वाद मैं ग्रैन्ड होटलमे जरूर-जरूर आकर मिलूँ। वहुत-वहुत शेकहैन्ड, वहुत-वहुत अनुरोध। उसके वाद, फिर मै काशीकी गाडीमे जाकर वैठ गया। दूसरे दिन फिर कलकत्तेके लिये रवाना हुआ।

विनोदवावूने कहा—"क्यो चटर्जी साहव, घरवालीको ये सव वातें मालूम हुईं कि नहीं?"

—"क्यों, मालूम क्यो नहीं होतीं? पहले तो वे सती लक्ष्मी

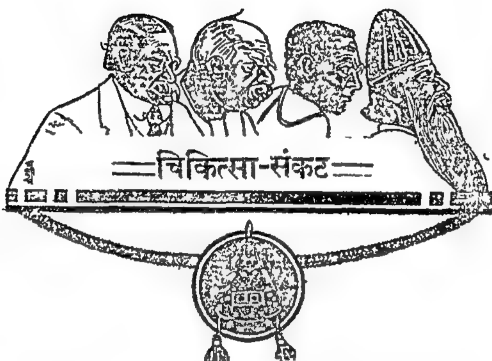
ठहरीं, दूसरे पचास वर्षकी अवस्था। तुम लोगोंकी नवीनाओंकी तरह नासमझ नहीं हैं, जो मारे अभिमानके बिखर पड़ें। घर लौटते ही मैंने सब बातें उनसे कह दीं थीं।"

—"सुनकर क्या, कहा क्या ?"

—"उसी दम एक उड़िया नाईको बुलवाया और कहा—'दे तो इस बूढ़ेकी, अच्छी तरह ठोडी छील दे।' उसके बाद फिर उस चुन्नीकी अगूठीको छीनकर उसे गङ्गाजलमें धोकर अपनी उगलीमें पहन लिया।"

—"बड़-भातका भोज कैसा रहा ?"

—"अरे, उस दुखड़ेका रोना अब मत सुनो। ग्रैन्ड-होटलमें जाकर पूछा, तो मालूम हुआ, वहा कोई नहीं है। एक खानसामेने कहा—"हाँ, थी तो सही, पर ब्याहके दूसरे ही दिन सुसरी भाग गई, साहब उसे ढूंढने गया है।"



चिकित्सा-संकट

दिन डूब रहा था। नन्ददुलाल बाबू हाग-साहबके बाजारसे ट्रामपर घर लौट रहे थे। वीडन स्ट्रीट पार करके गाडी धीरे-धीरे चलने लगी। सामने बैलगाडी थी। और जरासा आगे बढनेसे नन्ददुलाल बाबूके मकानकी गली आ जाती। इतनेमें देखा, बगलकी गलीसे उनके मित्र बङ्कू आ रहे हैं। नन्ददुलाल बडे खुश होकर बुलाने लगे—"ठहरो यार बङ्कू, मैं भी आ रहा हूँ।" नन्ददुलाल दोनो बगलोमे दो बडल लिये जल्दीमे चलती गाडीसे ज्यो ही उतरनेको हुए कि चटसे लागमे पैर हिलग जानेसे नीचे गिर पडे।

गाडीमे एक साथ शोर-गुल मच गया और धचसे गाडी खडी हो गई। कई यात्रियोने उतरकर नन्ददुलाल बाबूको उठाया। जो गाडीके अन्दर थे, उन्होने गरदन बाहर निकालकर सहानुभूति प्रकट की। "अरे रे रे, बडी चोट लगी है—थोडा गरम दूध पिला दो—दोनों ही पैर फट गये क्या ?" एकने स्थिर किया कि मृगी है। दूसरेने कहा, चक्कर आ गया है। किसीने कहा, शराबी है, किसीने कहा, गवार है, कोई कहने लगा, गई-गावका भूत है—भूत।

वास्तवमे नन्ददुलाल बाबूको कहीं भी चोट न आई थी, पर वहा कौन सुनता है।—"वाह! लगी कैसे नहीं है, खूब लगी है—भीतरी चोट है—दो महीने तक खाट सेनी पडेगी—घर जाकर मालूम होगा।" नन्ददुलाल बाबूने बार-बार हाथ जोडकर प्रार्थना की कि वास्तवमे उन्हें जरा भी चोट नहीं पहुची है। एक वृद्ध पुरुषने कहा—"देखो तो सही, भलेका जमाना नहीं है। आंखोके सामने देखा कि लगी है, फिर भी कहता है, नहीं लगी।"

इतनेमे बंकू बाबू आ पहुंचे, नन्ददुलाल आफतसे बचे। खेदखिन्न यात्रियोको लेकर गाडी भी चल दी।

बकूने कहा—"अरे, मुझे तो चक्कर-सा आ गया था। खैर घर तक अब पैदल जानेकी जरूरत नहीं।—ऐ रिक्शा—"

रिक्शा नन्ददुलाल बाबूको धीरे-धीरे घरकी तरफ ले चला, बकू पीछे-पीछे पैदल चले।

नन्ददुलाल बाबूकी उमर चालीस सालकी है, रग सावला, चेहरा गोलमटोल। उनके पिताने पटोंमें कमसरियटमें नौकरी करके बहुत रुपया पदा किया था। मरते समय व अपने इकलौते बेटे नन्ददुलालके लिये कलकत्तेमें एक बडा मकान, गाडियो असबाब और प्रोमेसरी नोटोंका एक बडा बडल छोड गये थे। नन्ददुलालका ब्याह कम उम्रमें ही हुआ था, पर एक ही साल पीछे उनकी स्त्रीका इन्तकाल हो गया, फिर उन्होंने विवाह नहीं किया। मां तो बहुत पहले ही मर चुकी थीं—, घरमें सिर्फ एक ही स्त्री थी—उनकी बूढी बुआ। वे भगवत्-सेवामें लगी रहती हैं, घरका काम-काज सब नौकर-चाकर ही देखने-भालने हैं। नन्ददुलाल बाबूको दूसरा विवाह करनेमें आपत्ति नहीं है, पर अभी तक हुआ ही नहीं है। इसका प्रधान कारण है—आलस्य। थियेटर, सिनेमा, फुटबाल-मैच, रेस और बन्धु-बान्धवोंका ससर्ग—इन्हीं बातोंमें मजेसे दिन बीत रहे हैं, विवाहकी फुरसत कहा? उसपर फिर क्रमश उम्र बढती ही जाती है, अब न करना ही ठीक है। गरज यह कि नन्ददुलाल भोले-भाले, बेचारे, अल्पभाषी, उद्यमहीन और आराम-तलब आदमी हैं।

शामके वक्त नन्ददुलाल बाबूके मकानपर नीचेवाले बडे कमरेमें यार-दोस्तोका काफी जमाव हुआ। खूब गप-शप उड रही है। नन्ददुलाल आज कुछ अस्वस्थ है, इसलिये फर्द ओढे लम्बे लेटे हुए हैं। मित्रोंने चाय और पापड खतम कर दिये हैं, अब पान और सिगरेटोंकी बारी है,—गप्पें तो चल ही रही हैं।

गोपी बाबू कह रहे थे—"ऊँ-हुक्! शरीरकी तरफसे इतनी लापरवाही मत रक्खो, नन्दजी। ऐसे जाडोंके दिनोंमें चक्कर खाकर गिर पड़ना,—ये अच्छे लक्षण नहीं हैं।"

नन्द बाबू—"चक्कर नहीं आया, सिर्फ पैरोंमें लाग हिलग—"

गोपी बाबू—"अरे, नहीं-नहीं। चक्कर तो आया ही था। शरीर भी थक गया है। पास ही में तो डाक्टर तफादार रहते हैं। इतना बड़ा फिजिशियन शहरमें दूसरा नहीं मिलेगा। जाओ न, कल सवेरे जाकर उनसे मिल तो आओ।"

बकू बोले—"मेरी रायसे तो एक बार नैपाल बाबूको दिखा देखते। ऐसा तजुर्बेकार होमिओपैथ मिलना मुश्किल है। मिजाज तो जरा तीखा जरूर है, पर बुड्ढा विद्वान् एक नम्बर है।"

षष्ठी बाबू चारो तरफसे ओढ-आढकर एक कोनेमें बैठे थे। सिरपर ऊनी कनटोपा था, गालोंपर डाढी और उसके ऊपर गुलूबन्द। वे बोले—"अरे बाप रे, ऐसे जाडे-पालेमें—और फिर कुवखत—कहीं ट्रामपर चढा जाता है? शरीर ठिठुर जानेपर तो पछाड खानी ही पडेगी। नन्दजीको अपना शरीर जरा गरम रखना चाहिए।"

निधिराम बोले—"नन्दू भइया, अपने इस मोटे रहन-सहनको छोडो। वही एक बाबा आदमके जमानेका तकिया है, पुरानी वाहियात बग्घी रख छोडी है और घोडा तो पक्षीराज है। अरे, इससे कहीं शरीर पनपता है? तुम्हारे यहा पैसेका क्या तोडा?

जरा कुछ शौकसे रहा करो,—भई, कुछ मौज उडाना भी सीखो ।"

आखिर निश्चित हुआ कि कल सवेरे नन्ददुलाल बाबू डाक्टर तफादारके मकान पर जायेंगे ।

डाक्टर तफादार M D M R A S मे-स्ट्रीटमे रहते हैं। बडा भारी मकान है, दो मोटरें है, एक लेन्डो गाडी। नामी डाक्टर है, काफी प्रैक्टिस है, लोग बुलाकर भी मुश्किलसे दर्शन पाते है। करीब डेढ घटे बगलके कमरेमे बैठ रहनेके बाद नन्ददुलालकी पुकार हुई। डाक्टर साहबके कमरेमे जाकर देखा, अब भी एक रोगीकी परीक्षा हो रही है। एक मोटे मारवाडी सज्जन उघाडे बदन खडे है। डाक्टरने फीतेसे उनकी तोदकी परिधि नापकर कहा—"दस, सवा इञ्च बढ तो गई।" रोगीने खुश होकर कहा—"नबज तो देखिये।" डाक्टरने रोगीकी कलाईपर नब्जके पास एक मोटर-कारका स्पार्किङ्ग-प्लग लगाकर कहा—"बडे मजेसे चल रही है।" रोगी बोला—"जबान तो देखिये।" रोगीने मुँह फाड दिया। डाक्टरने कमरेके दूसरी तरफ जाकर 'अपेरा ग्लास' से उनकी जीभ देखी, कहा—"थोडीसी कसर है। कल फिर आना।"

मारवाडी रोगीके चले जानेपर डा० तफादारने नन्ददुलालकी तरफ देखा, बोले—"वेल ?"

नन्ददुलालने कहा—"जो, बडी मुसीबतमे हू, इसीलिये आपके पास आया हू। कल अचानक टामसे—"

तफादार—"कम्पाउन्ड फ्रैक्चर ? हड्डी टूट गई है ?"

नन्ददुलाल बाबूने शुरूसे आखिर तक अपनी तबीयतका हाल कह सुनाया। दर्द नहीं है, बुखार नहीं आता, पेटकी गडबडी, सरदी, जुकाम हफनी कुछ भी नहीं। कलसे थोडीसी भूख घट गई है। रातको बुरे सपने आते है। मनमे भारी दहसत-सी बैठ गई है।

डाक्टरने उनकी छाती, पेट, सिर, हाथ, पैर और नब्ज़ देखकर कहा—"जीभ देखें।"

नन्ददुलाल बाबूने जीभ निकाल दी।

डाक्टरने कुछ मुँह टेढा करके कलम उठाई। प्रेसक्रिप्शन लिख चुकनेके बाद डाक्टरने नन्ददुलालकी तरफ देखकर कहा—"अब आप जीभ भीतर कर सकते है। इस दवाको रोज तीन बार पीजियेगा।"

नन्ददुलाल—"आपकी समझमे कैसा हाल है ?"

तफादार—"व्हेरी बैड।"

नन्ददुलालने डरते हुए कहा—"क्या हुआ है ?"

तफादार—"और भी कुछ दिन वाच किये विना ठीक-ठीक नहीं कहा जा सकता। पर सन्देह तो होता है Cerebral tumour with



''अब आप जीभ भीतर कर सकते हैं''

strangulated ganglia है। ट्रिफाइन करके सिरकी खोपडी छेदकर आपरेशन करना होगा, और गरदन चीरकर नर्वका जुट्ट छुडाना पडेगा। शार्ट सार्किट हो गया है।"

नन्दटुलाल—"जिन्दगी तो बनी रहेगी न ?"

तफादार—"दहदका मत खाइये, नही तो आगम नहीं कर सकूगा। सात दिन बाद फिर आइयेगा। माई फ्रेण्ड मेजर गोसांईके साथ एक कन्सल्टेशनकी तजवीज करूंगा। दाल-भात न खाइयेगा। एग फ्लिप-बोनमैरो सूप, चिकेन स्टू वगैरह खाना। शामको जरा बर्गन्डी खा सकते हैं। बर्फ-जल खूब पीजियेगा।—हा, बत्तीस रुपये। थैंक्स यू!",

नन्ददुलाल बाबू लडखडाते हुए चल दिये।

शामको बकू बाबूने आकर कहा—"अरे, मैंने तो तभी मना किया था—उसके पास मत जाओ। बेटा मारवाडियोंके पेटपर हाथ फेरकर खाता-कमाता है। हु', खोपडीपर आपरेशन करेगा।"

षष्ठी बाबू—"हमारे मुहल्लेके तारिणी कविराज (वैद्य) को क्यों नहीं दिखलाते ?"

गोपी बाबू—"नहीं-नहीं, अगर दर-असल ही नन्ददुलालके सिरमें कोई उलट-फेर हो गया हो, तो उस हथौडिये वैद्यका काम नहीं। होमिओपैथ ही अच्छा है।"

निबिराम—"मेरी बात तो कोई सुनेगा नहीं। डाक्टरी तुम्हारे मनमें न जंचे, तो थोडी-बहुत वैद्यकी सीखो। दरवानजीने लोटा-भर छानी है। कहो तो जरा ले आऊँ।"

आखिर होमिओपैथिक इलाज कराना ही निश्चित रहा।

दूसरे ही दिन खूब तड़के नन्दुलाल बाबू नेपाल डाक्टरके मकानपर पहुँचे। रोगियोंकी भीड़ तब तक शुरू नहीं हुई थी, थोड़ी ही देर पीछे उनकी बारी आई। एक खूब लम्बे-चौड़े कमरेमें जमीनपर फर्श बिछ रहा था। चारों तरफ पुस्तकोंके ढेर लगे हुए थे। किताबोंकी दीवालोंके बीच कहानीके सियालकी तरह वृद्ध नेपाल बाबू बैठे हैं। मुँहमें हुक्काकी नली लगी हुई है, घर-भर धुआँसे धुँधला हो गया है।

नन्ददुलाल बाबू नमस्कार करके खड़े रहे। नेपाल डाक्टरने तीखी निगाहसे देखकर कहा—"बैठनेकी जगह है तो।" नन्ददुलाल बैठ गये।

नेपाल—"साँस चलती है?"

नन्द—"जी?"

नेपाल—"इसलिये पूछ रहा हूँ कि रोगीकी अन्तिम घड़ी आ जानेके बाद ही लोग मुझे बुलाया करते हैं।"

नन्ददुलालने विनयके साथ कहा—"मैं ही रोगी हूँ।"

नेपाल—"डकैतोंके हाथसे निकल बड़े जल्दी आये तुम?—खैर, तुम्हें क्या हुआ है, बताओ?"

नन्ददुलाल बाबूने अपनी कथा कह सुनाई।

नेपाल—"तफादारने क्या कहा?"

नन्द—"कहा, तुम्हारे सिरमें ट्यूमर है।'

नेपाल—"तफादारके सिरमें क्या है, जानते हो? गोबर। और टोपीके भीतर सींग, जूतेके अन्दर खुर, पतलूनके अन्दर पूँछ।—कैसा लगती है?'

नन्द—"दो दिनसे तो बिलकुल ही नहीं लगती।"

नेपाल—"नींद आती है?"

नन्द—"नहीं तो।"

नेपाल—"सिरमें दर्द है?"

नन्द—"कल शामको था।"

नेपाल—"बाईं तरफ?"

नन्द—"जी हाँ।"

नेपाल—"या दाईं तरफ?"

नन्द—"जी हाँ।"

नेपाल कड़ककर बोले—"ठीक-ठीक जवाब दो।"

नन्द—"जी हाँ, ठीक बीचमें—"

नेपाल—"पेटमें ऐंठा होता है?"

नन्द—"हाँ, उस दिन हुआ था। निधिया काबुली मटर ले आया था, उसीके खानेसे—"

नेपाल—"पेटमें ऐंठा होता है या पीर होती है? ठीक-ठीक बताओ?"

नन्ददुलाल घबरा-से गये, बोले—"गुड़-गुड़ गुड़-गुड़ करता है।"

डाक्टरने पहले तो कई-एक मोटी-मोटी किताबें निकालकर देखीं, फिर कुछ देर विचार कर बोले—"हूँ। एक दवा देता हूँ, ले जाओ। पहले शरीरमेंसे ऐलोपैथिक जहरको निकाल भगाना होगा। पाँच



"गुड़-गुड़ गुड़-गुड़ करता है"

वर्षकी उम्रमे मेरे खूनमे नालायकोंने दो ग्रेन कुनैन घुसेड दी थी, अभी तक शामको सिर ठनकता रहता है। सात दिन बाद फिर आना। तब असली इलाज चलेगा।"

नन्ददुलाल—"क्या, बीमारी क्या है ?"

डाक्टरने भौंहे चढाकर कहा—"बीमारी जानकर क्या तुम्हारे चार हाथ निकल आयेंगे ? अगर मैं कहूँ कि तुम्हारे पेटमे differential calculus हुआ है, तो क्या समझोगे तुम ? भात न खाना, दोनो वक्त रोटी खाना, मास-मच्छीकी बिलकुल मनाई है, सिर्फ मूगकी दालका जूस लेना। नहाना बन्द, गरम पानी थोडा-थोडा पी सकते हो। तमाकू न पीना, धुआँसे दवाकी तासीर मारी जायगी। सोच क्या रहे हो, हमारी आलमारीकी दवाएँ नष्ट हो गई होगी। नही-नही, हमारी तमाकूमे 'सलफर थर्टी' मिला रहता है। फीस क्या है, यह भी बता देना पडेगा क्या। देखते नहीं, दीवालपर नोटिस लटक रही है,—बत्तीस रुपये। और दवाकी कीमत चार रुपया।"

नन्ददुलाल बाबू रुपया देकर विदा हुए।

निधिरामने कहा—"क्यो यार, फिजूल पैसा बरबाद करते हो ? इससे तो पाँच बार बाक्समे बैठकर थियेटर देखते तो अच्छे रहते। अरे वह नेपाल। बुड्ढा पूरा ठग है, बेचारे नन्दू भइयाको

भला आदमी जान उसने भोदू बना लिया। पडता कहीं मेरे पाले बच्चू, तो देख लेता कितना वडा होमिओ-फाक है वह। एक घूटमे अगर उसकी आलमारी-समेत तमाम दवाइयोको न पी लिया, तो कहना कोई कहता था।"

गोपी—"आज आफिसमे जिक्र हो रहा था कि एक कोई वडा हकीम फर्रुखावादसे आया है। वडा-भारी नामी हकीम है। राजा-महाराजा सब उसीसे अपना इलाज कराते हैं। एक दफे उन्हे दिखा देखते तो अच्छा था।"

पत्नी—"ऐसे जाडे-पालेमे हकीमी दवा? बाप रे, बाप! शरबत पिला-पिलाकर मार डालेगा। उससे तो तारिणी कविराज अच्छे हैं।"

आखिर कविराज (वैद्य) का इलाज करना ही तय हुआ।

दूसरे दिन सवेरे ही नन्ददुलाल बाबू तारिणी कविराजके मकानपर हाजिर हुए। कविराजजीकी उम्र लगभग साठ बरसकी होगी, शरीरके दुवले और दाढी-मूँछें सफाचट। तमाम देहपर तेल लगाकर एक आठ हाथकी धोती पहने कुरसीपर घुटने समेटकर बैठे हुए हैं, हाथमे हुक्का है, बडी दिलचस्पीके साथ उसे पी रहे हैं। इसी हालतमे प्रतिदिन रोगियोको देखते है। कमरेमे एक तख्त है, जिसपर

तिलौंई चटाई और कई मैले तकिये रक्खे हुए हैं। दीवालसे सटी हुई दवाईकी दो आलमारियाँ रक्खी हुई हैं।

नन्ददुलाल बाबू नमस्कार करके तख्तपर बैठ गये। कविराजजीने पूछा—"कहिये बाबू सा'ब, कहासे आना हुआ आपका ?"

नन्ददुलाल बाबूने अपना नाम और पता बता दिया।

तारिणी—"रोगीको बीमारी क्या है ?"

नन्ददुलाल बाबूने समझाया, वे खुद ही रोगी हैं, और अपना सारा हाल कह सुनाया।

तारिणी—"खोपडीमे छेद कर दिया है क्या ?"

नन्द—"जी नहीं, नेपाल बाबूने कहा पथरी रोग है, इससे फिर मैंने नश्तर नही लगवाया।"

तारिणी—"नेपाल ? कौन है वह, क्या करता है ?"

नन्द—"आप नहीं जानते उन्हे ? चोरबगानके नेपालचन्द्र राय, M B, F T S—बड़ा-भारी होमिओपैथिक डाक्टर है।"

तारिणी—"अरे, उस नेपलियाकी कह रहे हो क्या ? तो साफ-साफ कहते क्यो नही। वह डॉकदर कबसे हो गया ? अरे, मुहल्लेमें ऐसे अच्छे कविराजके रहते हुए तुम छोकरोंके पास क्यो जाते हो ?"

नन्द—"जी, मित्रोने कहा कि पहले डाक्टरको दिखाकर उनकी राय लेनी चाहिये, शायद नश्तर-फश्तर लगाना पड़े।"



"होती है, तुम्हें मालूम नहीं पड़ती होगी !"

तारिणी—"जयन्ती बाबूको जानते हो ? गुल्नाके वकील जयन्ती बाबू ?"

नन्ददुलालने सिर हिलाया।

तारिणी—"उनके मामाको उरुस्थम्भ हुआ था। सिविलसर्जनने पैर काट डाला। तीन दिन तक बेहोशी रही। होश आनेपर बोले,—'मेरी टाँग कहाँ है ?—बुलाओ तारिणी सेनको।'—दिया एक तोला च्यवनप्राश। फिर क्या हुआ, बताओ तो ?"

नन्द—"फिरसे पैर निकल पडा क्या ?"

"अरे, ओ नालायक केवला, देख-देख, बिल्ली तमाम 'छागलाद्य घिर्त खाये डालती है"—कहते हुए कविराजजी बगलके कमरेकी ओर दौडे। थोडी देरमे लौटे, और उसी तरह अपनी कुरसीपर बैठ गये। बोले—"देखूँ, जरा नाडी तो देखूँ। बस, वही है, जो मै सोच रहा था। कभी बहुत ज्यादा बीमार पडे थे ?"

नन्द—"बहुत दिन पहले, टाइफौयेड हुआ था एक बार।"

तारिणी—"ठीक पकडा है। पाँच बरस पहले न ?"

नन्द—"करीब साडे सात वर्ष हुए होंगे।"

तारिणी—"एक ही बात है, पाँच ड्योढे साडे-सात। सुबह कै होती है ?"

नन्द—"जी नहीं।"

तारिणी—"होती है, तुम्हें मालूम नहीं पडती होगी। नींद आती है ?"

नन्द—"अच्छी तरह नहीं आती।"

तारिणी—"कैसे आयेगी। ऊर्ध्व हुआ है न। दाँतोंमे दर्द होता है ?"

नन्द—"जी नहीं।"

तारिणी—"होता है, तुम्हे मालूम नही पडता। खैर, कोई चिन्ताकी बात नहीं। सब आराम हो जायगा। मैं दवा दे रहा हू।"

कविराजजीने आलमारीसे एक शीशी निकाली, और उसकी गोलियोंसे कहने लगे—"अरे, उछले मत, ठहर-ठहर।" "हमारी सब जीवित दवाएँ है, बुलानेपर सुन लेती है। तीन दिनकी दवा दी है, सुबह-शाम एक-एक गोली खाना। अब तीन दिन पीछे आना। समझे ?"

नन्द—"जी हाँ।"

तारिणी—"पत्थर समझे। अभी अनुपान बताना है सो ? खट्टे नीबूके रस और शहदके साथ मिलाकर खाना। चावल मत खाना। अरुई, ओल, ये सब उबालकर खाना। नमक तो छूना ही मत। 'मागुर' मछलीका झोल जरा चीनी मिलाकर राँधकर खा सकते हो। गरम पानी ठडा करके पीना।"

नन्द—"बीमारी क्या है ?"

तारिणी—"बीमारी है,—जिसको कि उदरी कहते है। ऊर्ध्व-श्लेष्मा भी कहा जा सकता है।"

नन्ददुलाल बाबू कविराजजीकी दर्शनी और दवाके दाम चुकाकर उदास चित्तसे घर चले आये।

निधिरामने कहा—"क्यों भाई साहब, आयुर्वेदकी ख्वाहिश मिटी कि नहीं ?"

गोपी—"नहीं जी, इन सब फालतू इलाजोंसे कुछ नहीं होना-जाना। चलो, कहीं जाकर आब-हवा बदल आवें।"

बकू—"मैं तो कहता हूं, भाई साहब ब्याह-थाह करके घरमें स्त्री ले आवें। फिर सारा झगड़ा ही निबट जायगा। इस तरह छड़ीदा रहना ही बीमारीकी जड़ है।"

नन्ददुलाल चीं-चीं करते हुए बोले—"हुं, स्त्री। आज हूं, कलकी खबर नहीं। इस उमरमें एक नन्हीं-सी बहू लाकर दलदलमें और फँस जाऊं।"

निधिरामने कहा—"भाई साहब, एक मोटर खरीदो, सच्ची। दो दिन हवाखोरी करो, देखो चंगे होते हो कि नहीं। सेवेन सीटर हॉड्सन्। भगवान्की कृपासे हम भी तो पाँच जने हैं।"

षष्ठी—"अच्छा तो कह चुके ?—मेरी समझसे तो मोटर रखना और ब्याह करना दोनों एक ही बात है। घरमें लाना तो सहज है, पर मरम्मतका खर्च जुटाना परेशानी है। आज टायर

फटा तो कल स्त्रीके पेटमें शूल होने लगा, परसों बैटरी खराब हुई तो तरसों लड़केको ठंड लगके बुखार आ गया। अरे, ऐसी भूल न कर बैठना, नन्ददुलाल। जेरबार होना पड़ेगा। इस जाड़े-पालेमें कहां तो रजाईमें घुसकर सोना चाहिये, सो तो नहीं, सारी रात कांय-कांय टांय-टांय।"

निधिराम—"चचा हमारे जैसे हिसाबी आदमी हैं, वे तो किसी खून मोटी-ताजी रोऐंवाली भालूकी लड़कीसे ब्याह करते तो अच्छा रहता। रजाई और कम्बलोंका खर्चा तो बचता।"

गोपी—"जहां सौ, वहां सवा सौ। कल सवेरे हकीम साहबके यहां और हो आओ। फिर जैसा होगा, देखा जायगा।"

नन्ददुलाल बाबू इसपर राजी हो गये।

हाजिक-उल्-मुल्क मिन लुकमान नूरउल्ला गजनफरुल्ला अल हकीम यूनानी, लोअर चितपुर रोडमें ठहरे हुए हैं। नन्ददुलाल जब तीसरे मंजलेपर पहुंचे, तो लुंगी और जाकिट पहने, बड़ासा रंगीन रूमाल कंधेपर डाले एक आदमी उनके पास आया, और बोला—"आइये बाबू साहब। मैं हकीम साहबका मीर मुन्शी हूं। बीमारी क्या है, लिखकर बतलाइये। मैं हुजूरको इत्तिला दे दूंगा।"

नन्द—"बीमारीकी ही तो जांच करानी है।"

मुन्शी—"तो भी, कुछ तो कहिये। ना-ताक़ती, बुख़ार, पिल्ही, चेचक, बवासीर, रतौंध—"

नन्द—"अरे, नहीं-नहीं। ये सब कुछ नहीं।—मेरा जी घबडाता है।"

मुन्शी—"अच्छा। आखिर कहोगे तभी तो मालूम पड़ेगा। दिल तड़पना। मोहर लाये हो?"

नन्द—"मोहर?"

मुन्शी—"जी, हकीम साहब चाँदी नहीं छूते। नजराना दो मोहर। न हो तो मैं देता हूं। पैंतालीस रुपये, और दो रुपये बट्टे के, रेशमी रूमाल दो रुपयेका। दरबारमे जाकर पहले हुजूरको 'बन्दिगी जनाब' कहियेगा, फिर रूमालपर मोहर रखकर सामने नजर कीजियेगा।"

मुन्शी नन्ददुलाल बाबूको तालीम देकर दरबारमे ले गया। एक बड़े कमरेमे गलोचा बिछा हुआ है, एक तरफ मसनदके सहारे हकीम साहब नलीदार हुक्केका लम्बा नल मुहमे दिये धूम्र पान कर रहे हैं। उम्र लगभग पचपन, बाल घुंघराले, और मूछे खूब बारीक छंटी हुई है। छाती तक लटकती हुई लम्बी दाढीका शुरूका भाग सफेद है, बीचका लाल या कत्थई और अन्तका बैंगनी। पहनावेमे साटनका चूड़ीदार पाजामा, कीमखापकी चपकन और सिरपर जरीदार ऊंची टोपी या ताज है। सामने धूपदानमे मुसब्बर और रूमी मुस्तगी



"हड्डी पिलपिला गई है"

पक रही है। बगलमें पीकदान, पानदान, इत्रदान वग़ैरह रक्खे
ए हैं। चार-पांच मुसाहिब घुटने टके हुए बैठ हैं और हकीम

साहवकी हर वातपर 'क्या वात है' 'कमाल है' 'करामात है' कहते जाते हैं। कमरेके एक कोनेमे वैठा हुआ एक रूखे वालवाला दढियल आदमी सितार हाथमे लिये भनभनाता और साथ ही विकट अङ्गभङ्गी करता जाता है।

नन्ददुलाल वावूने वडे अदवके साथ वन्दगी करके मोहर नजर की। हकीम साहवने कुछ मुसकरा कर इत्रदानमेसे जरासी रूई उठाकर नन्ददुलालके कानमे लगा दी।

मुन्शीने कहा—"क्या शिकायत है, हुजूरसे कहिये आप।"

नन्ददुलाल वावूने अपना पूरा-पूरा हाल हकीम साहवसे कह सुनाया। हकीम साहवने ऋषभ-स्वरमे कहा—"जरा सिर लाना।"

नन्ददुलालकी छाती धडक उठी, घवडा गये। मुन्शीने आश्वासन दिया—"डरते क्यों हैं, साहव। जनावको अपना सिर दिखलाइये।"

नन्ददुलालका सिर मसककर हकीम साहवने कहा—"हड्डी पिलपिला गई है।"

मुन्शी—"समझ गये साहव, माथेकी हड्डी विलकुल नरम हो गई है।"

हकीमजीने अपनी तिरगी दाढीपर उँगलियाँ फेरते हुए कहा—"सुर्मा सुर्ख।"

एक आदमीने लाल-लाल चूरन-सा लाकर नन्ददुलालकी आँखोंके पलकोंपर लगा दिया। मुन्शीने समझाया—"इससे आँख ठढी रहेगी, नींद आयेगी।"

हकीमजी फिर बोले—"रोगन बब्बर !"

मुन्शीने आवाज दी—"ऐ हज्जाम, उस्तरा लाओ ।"

नन्ददुलाल बाबू "हैं-हैं । अरे-अर । क्या करते हो !" कहते ही रह गये, नाईने चटसे उनकी चाँदपर दो इञ्चके बराबर चौकोन स्थान छील दिया । एक दूसरे आदमीने उसपर बदबूदार परलेप लगा दिया । मुन्शी बोला—"घबडाइये नहीं बाबू साहब, यह बब्बर शेरके माथेका घी है । बहुत कीमती है । माथेकी हड्डी मजबूत हो जायगी ।"

नन्ददुलाल बाबू कुछ देर तो यों ही बेहोश-से बैठ रहे । फिर होशमें आकर जल्दीसे वहासे भागे । मुन्शीने पीछे-पीछे दौडते हुए कहा—"मेरी बखशीश ?" नन्ददुलाल एक रुपया फेंककर तावडतोड नीचे उतरे और लपककर गाडीमें बैठकर कोचवानसे बोले—"हाँको ।"

शामको मित्रोंने आकर देखा, बैठकका दरवाजा बन्द है । नौकरने कहा—"आज बाबूजीकी तबीयत बहुत खराब है । मुलाकात नहीं होगी ।" सब-के-सब उदास होकर लौट गये ।

सारी रात बिछौनेपर पडे-पडे छटपटाते रहे, अँधेरे ही चार बजे उठकर नन्ददुलाल बाबूने कडी प्रतिज्ञा की कि अब मित्रोंकी

सलाह न मानेंगे, अपना इलाज खुद ही अपनी बुद्धिसे करायेंगे।

सवेरे आठ बजे नन्ददुलाल घरसे निकले, और टैक्सी (किरायेकी मोटर) पर सवार होकर बोले—"सीधा चलो।" मनमे निश्चय कर लिया था कि जहा 'मीटर'मे एक रुपया चढा कि टैक्सी छोड देंगे, और आस-पास जो कोई डाक्टर या वैद्य मिलेगा, उसीका इलाज करायेंगे,—फिर चाहे वह ऐलोपैथ हो या होमियोपैथ, कविराज हो या वैद्यराज, झाडफूँक-वाला ओझा हो या हकीम, मद्रासी हो या चाँदसीका डाक्टर,—चाहे कोई भी हो।

बऊबाजार तक जाकर टैक्सी छोड दी। गलीमे घुसते ही एक साइनबोर्ड नजर पडी, उसपर लिखा था—"डाक्टर मिस वी० मल्लिक।" नन्ददुलाल बाबूका 'मिस' शब्दपर लक्ष्य नहीं गया, नहीं तो शायद हिचकिचाते। सीधे भीतर पहुचे, और दरवाजेपर लटकते हुए परदेको हटाकर कमरेके अन्दर दाखिल हुए।

मिस विपुला मल्लिक उस समय कहीं बाहर जानेकी तैयारीमे कधे पर की सेफ्टीपीन सम्हाल रही थीं। नन्ददुलालको देखकर मुलायम स्वरमे बोलीं—"क्या चाहते हैं आप?"

नन्ददुलाल बाबू पहले तो सहम गये, फिर तकदीरपर भरोसा करके सोचने लगे,—उँह, जाने दो सबको, लेडी डाक्टरकी ही सलाह लूँगा। बोले—"बडा परेशान होकर आपके पास आया हू।"

मिस मल्लिक—"पीरें शुरू हो गई हैं?"

नन्द—"पीर तो नहीं मालूम होती।"

मिस—"फर्स्ट कनफाइनमेन्ट है?"

नन्द—"जी?"

मिस—"पहला ही गर्भ है क्या?"

नन्ददुलाल कुछ सहम-से गये, बोले—"म अपने इलाजके लिये आया हू।"

मिस मल्लिकने आश्चर्यमे आकर पूछा—"अपने लिये? क्या शिकायत है?"

सारा इतिहास सुन चुकनेके बाद मिस मल्लिकने स्वास्थ्यके बारेमे दो-चार प्रश्न किये, फिर बोलीं—"आपका नाम मैं पूछ सकती हू?"

नन्द—"श्री नन्ददुलाल मित्र।"

मिस—"घरमे और कौन-कौन है?"

नन्ददुलालने समझाया—"मेरी स्त्री बहुत दिन हुए मर चुकी है, घरमें एक बूढी बुआजीके सिवा और कोई नहीं है।'

मिस—"काम-काज क्या करते है?"

नन्द—"काम-काज तो कुछ नहीं करता। जमींदारी है।'

मिस—"मोटर-कार है?"

नन्द—"नहीं, पर खरीदनेकी मनमें है।"

मिस मल्लिकने और भी अनेक तरहके प्रश्न किये, फिर ओठोपर



विपुलानन्द

उसके बाद, एक दिन नन्ददुलाल बाबूने अपनी बुआजीको काशी रवाना कर दिया और बाजारसे बहुतसी चीजें ख़रीद डालीं। घी, चीनी, आटा, दही, मछली, मटन, सन्देश, रसगुल्ला वग़ैरह-वग़ैरह।

मित्रोंको खूब ही खिलाया। नन्ददुलाल बाबूने जरीपाडकी महीन धोती पहनी, उसपर रेशमी कुरता डाटा, और बड़ी शरमा-शरमीके साथ सबको खुश किया।

मिसेज विपुला मित्र अब पतिके सिवा और किसी रोगीका इलाज नहीं करतीं। हाँ, नन्ददुलाल बाबू अब भले-चंगे हैं। मोटर-कार खरीद ली गई है। अफसोस सिर्फ इतना ही है कि शामको जो मित्र-मण्डलीकी मजलिस जमा करती थी, वह अब नहीं जमती।



भूतोंके बीहड़में

शिबू भट्टाचार्य पेनिटी गाँवमे रहता है। एक स्त्री, तीन गायें, इक-मंजिला पक्का मकान, छब्बीस घर जजमान, थोडीसी ब्रह्मोत्तर जमीन, कुछ रैयत,—बस, इसीमे आनन्दसे उसकी गुजर हो जाती है। शिबूकी उमर है बत्तीस सालकी। बचपनमे थोडा-बहुत स्कूलमे लिखना-पढना सीखा था, और बादमे बापसे थोडीसी सस्कृत पढ ली थी, बस, इतना ही उसकी

सम्पत्ति और जजमान-रक्षाके लिये काफी था। पर मनमे उसके न सुख था, न शान्ति। उसकी स्त्री नृत्यकालीकी उमर लगभग पचीसकी होगी, सुडौल भरा हुआ बदन है, खरखरा स्वभाव। पतिकी सेवा-टहलमे वह कोई बात उठा न रखती, पर शिबूको उस सेवामे रस ढूँढे न मिलता। जरासी बातपर पति-पत्नीमे खूब लडाई ठन जाती। पाँच मिनट तक बक-झक करनेके बाद शिबूकी तो साँस फूलने लगती, पर नृत्यकालीकी जबानने जहा दौड शुरू की, तो फिर ठहरना किसे कहते हैं? हर बार शिबूकी ही हार होती। स्त्रीको वशमे न रख सकनेके कारण मुहल्लेके लोगोने शिबूके कायर, नामर्द, भडुआ, महरा आदि नाम रख छोडे थे। घरमे और बाहर, सब जगह इस तरह लाञ्छित होते रहनसे शिबूकी अशान्तिकी सीमा न थी।

एक दिन नृत्यकालीने अफवाह सुनी कि उसके पतिमे चरित्र-दोष भी घुस पडा है। उस दिनकी वारदात हद तक पहुच गई,—नृत्यकालीकी झाडूने शिबूकी पीठ झाड दी। शिबू बेचारने क्रोधसे, क्षोभसे, बडी मुश्किलसे आँसोका पानी रोककर किसी तरह रात बिताई, और दूसरे दिन तडके ही उठकर छ बजेकी गाडीसे कलकत्तेको रवाना हो गया।

स्यालदह स्टेशनसे सीधे कालीघाट पहुचकर शिबूने अनेक उपचारोसे पाँच रुपयेकी पूजा चढाकर मन्नत की—"हे काली माता!

चुड़ैलको हैजा-वैजा कराकर किसी तरह खींच लो, मइया। मैं एक जोड़ी बकरा चढ़ाऊँगा। अब तो बरदाश्त नहीं होता। इस ग़रीबको कोई राह दिखा दो माता, जिससे फिरसे अपनी गिरस्ती बना सकूँ। उस चुड़ैलके कोई बाल-बच्चा भी तो नहीं हुआ, यह भी तो देखना चाहिये तुमको। दुहाई है माता। मुझे बचा लो।"

मन्दिरसे लौटकर शिबूने एक बड़ा दोना भरकर तेलकी मिठाई, आध सेर दही और आध सेर इमरती खाई। उसके बाद तमाम दिन उसने चिड़ियाखाना, अजायबघर, हाग साहबका बाजार, हाईकोर्ट आदि देखनेमें बिताया। शामको विडन स्ट्रीटके होटल-डि-अर्थोडाक्समें जाकर एक प्लेट 'करी', दो प्लेट 'रोस्ट फाउल' और आठ 'डेविल' खाकर जलपान किया। फिर रात-भर थियेटर देखकर सबेरेकी गाड़ीसे पेनिटी लौट गया।

परन्तु काली माताने उलटा ही समझा। घर आते ही शिबूको हैज़ाके दस्त शुरू हो गये। डाक्टर आये, वैद्य आये, पर नतीज़ा कुछ न निकला। आठ घंटे रोगके कष्ट सहकर, स्त्रीको पैरों पड़ाकर, हजार आँसू रुलाकर, शिबूने इस लोकसे प्रस्थान किया।

गाँवमें अब शिबूका मन न लगा। उसी रातको वह गंगा पार हुआ। पेनिटीके उस पार कोन्नगर है। वहांसे वह उत्तरकी

तरफ क्रमश रिसडा, श्रीरामपुर, वैद्यबाटीकी हाट, चाँपदानीकी चटकल (जूट-मिल) होता हुआ—और भी आगे, दो-तीन कोसकी दूरीपर—एक बीहडमे पहुचा, जहा भूतोका अड्डा है। बीहड बहुत दूर तक फैला हुआ, सुनसान और भयावना था। किसी समय यहा ईंटखोला था, इसलिये जमीन समतल न थी, कहीं गड्ढे थे, तो कहीं ऊंचे टीलेसे बन गये थे। बीच-बीचमे कहीं-कहीं ग्वार-पाठा, घेंटू, जगली ओल, बबूल आदिके पेड खडे थे। शिबूको स्थान बहुत पसन्द आया। एक बहुत दिनके पुराने ईंटके पजायेके पास एक लम्बा ताडवृक्ष सीधा खडा था, दूसरी तरफ एक सूखा बेलका पेड टेढा-मेढा त्रिभङ्गी बना खडा था। शिबू उस बिल्ववृक्ष पर ब्रह्मदैत्य होकर वास करने लगा।

जो लोग स्पिरिचुअलिज़्म या प्रेततत्त्वसे जानकारी नहीं रखते, उन्हे यह बात सक्षेपमे समझाई जाती है। आदमी मरनेपर भूत होता है, यह सबने सुना ही होगा। परन्तु इस थ्योरी (सिद्धान्त) के साथ स्वर्ग, नरक, पुनर्जन्म आदिका कैसे सम्बन्ध बैठता है? वास्तवमे तथ्य इस प्रकार है —नास्तिकोंके आत्मा नहीं होती। वे मरनेपर अम्लजन (Oxygen), उद्जन (Hydrogen), यवक्षारजन (Nitrogen) आदि गैसोंमे परिणत हो जाते है। साहब लोगोंमे जो आस्तिक हैं, उनके आत्मा तो है, पर पुनर्जन्म नहीं होता। वे मरनेके बाद भूत होकर पहले तो एक बडे 'वेटिंग-रूम' मे इकट्ठे होते हैं। वहा कल्प-वासके बाद उनका अन्तिम फैसला होता है। फैसला

सुनाये जानेके वाद कुछ भूत तो अनन्त स्वर्गमे भेज दिये जाते हैं और शेप सव अनन्त नरकमे जाकर आश्रय लेते हैं। साहव लोग जीवद्दशामे जिस स्वाधीनताका उपभोग करते है, भूतावस्थामे उसका अधिकाश छिन जाता है। विलायती प्रेतात्मा विना 'पास' के 'वेटिङ्ग-रूम' नहीं छोड सक्त। जिन लोगोंने Seance देखा है, वे जानते हैं कि विलायती भूत उतारना कितना कठिन काम है। हिन्दुओंके लिए दूसरी व्यवस्था है, क्योकि हम लोग पुनर्जन्म, स्वर्ग, नरक, कर्मफल, स्वया हृपीकेश, निर्वाण, मुक्ति सव कुछ मानते हैं। हिन्दू मरकर पहले भूत होता है, और जहा-तहा स्वाधीनता-पूर्वक वास कर सकता है,—आवश्यकतानुसार इहलोकके साथ कारोवार भी कर सकता है। यह एक वडी-भारी सहूलियत है, परन्तु यह अवस्था ज्यादा दिनों तक नहीं रहती। कोई-कोई तो दो-ही-चार दिन वाद ही पुनर्जन्म प्राप्त कर लेते हैं, किसी-किसीको दस-वीस वर्ष भी लग जाते है, और कोई-कोई वहादुर तो दो-तीन शताब्दी तक विता देते हैं। भूतोको कभी कभी चेञ्ज या हवा वदलनेके लिये स्वर्ग और नरकमे भेजा जाता है। यह उनके स्वास्थ्यके लिए अच्छा है, क्योकि स्वर्गमे वडी मौजसे रहते हैं, और नरकमे जाकर—पापोका क्षय हो जानेके कारण—सूक्ष्म शरीर खूव हलका छरछरा हो जाता है, इसके सिवा वहा वहुतसे अच्छे-अच्छे आदमियोसे मुलाकात करनेका भी सौभाग्य प्राप्त होता है। परन्तु जिनको भाग्यवश 'काशी-लाभ' होता है, अथवा नेपालमे

पशुपतिनाथ या स्वयम्भू वामनके दर्शन हो जाते हैं,—अथवा जो अपने पापोंका बोझ हृषिकेश पर लादकर निश्चिन्त हो सकते हैं,—उनके लिए 'पुनर्जन्म न मिलने'—सीधी मुक्ति है।

दो-तीन महीने बीत गये। शिबू उसी बेलके पेडपर रहता है। पहले-पहल कुछ दिन तो नये स्थानमें नई अवस्थामें खूब मज़ेसे बीते, पर अब शिबूको चारों तरफ जरा सूना-सूनासा मालूम पड़ने लगा। नृत्यकालीका मिजाज जरा तीखा जरूर था, पर वह उसे चाहती अवश्य थी,—शिबू अब नस-नसमें इस बातका अनुभव कर रहा है। एक बार सोचा—'उह, छोड़ो इस पचड़ेको, चलो, लौट चलो पेनिटीको, वहीं अड्डा जमायेंगे।' फिर सोचा—'लोग कहेंगे, देखा बेटेको, भूत होकर भी लुगाईका आँचल न छोड़ सका।—बेहुदा। अब तो यहींपर किसी मन-पसन्द उपदेवीकी टोह लगानी चाहिये।'

फागुनके महीनेके आखिरी दिन हैं। गङ्गाके मुहानेपर सन-सन दक्खिनी हवा चल रही है। सूर्यदेव पानीमें गोता खाते हुए अभी तुरन्त ही डूबे हैं। घेंटूफूलकी सुगन्धसे मैदान महक रहा है। शिबूके बेलके पेडपर नई पत्तियाँ लग गई हैं। कुछ दूरपर अकौआकी झाड़ीमें कुछ पके फल फटाफट फट गये, बहुतसी रुई मकड़ीके कङ्कालकी तरह चमकती हुई हवामें उड़कर शिबूकी देहपर गिरने लगी। एक पीले

रंगकी तितली शिबूके सूक्ष्म शरीरको भेदकर उड़ती हुई चली गई। एक काला गुबरैला भर्र-भर्र करता हुआ शिबूकी प्रदक्षिणा करने लगा। पास ही बबूलके पेडपर कौओंकी एक जोडी बैठी हुई है। कौआ गरदन सहला रहा है और काकिनी आँखें मुँदकर गद्गद स्वरसे बीच बीचमे 'क-अ-अ-क' कर रही है। एक मेढकी हाल ही नींदसे जगकर धीरे-धीरे पैर रखती हुई बेलके पेडके कोटरसे निकल आई, और शिबूकी तरफ आँखें फाड-फाडकर ऐसे देखने लगी, मानो शिबू उसके सामने कोई चीज ही नहीं। झींगुरोंका एक झुण्ड सन्ध्याकी महफिल जमानेके लिये बाजेके तारोंमे स्वर मिला रहा था, सङ्गत ठीक बैठ जानेपर वे सब-के-सब समस्वरसे चिक्-चिक्-चिक्-चिक् बोल उठे।

शिबूके यद्यपि रक्त-मासका शरीर न था, परन्तु मरनेपर भी स्वभाव कहां जाता ? शिबूका मन सन-सन करने लगा। जहा हृत्पिण्ड था, उस जगह धडक्-धडक् होने लगा। याद उठ आई, उस बीहडके पास एक छोटीसी नहरके किनारे एक पेडपर एक पिशाचिन रहती है। शिबूने उसे कई बार शामको नहरमे मछली पकडते देखा है। उसका नीचेसे लेकर ऊपर तक सारा शरीर सफेद कपडेसे ढका रहता है, सिर्फ एक बार उसने ढके हुए मुँहको खोलकर शिबूकी तरफ देखा था और मारे शरमके दाँतों तले जीभ दबा ली थी। पिशाचिनकी उमर कम न थी, क्योंकि उसके गाल बैठ गये है, और सामनेके दो दाँत भी



"मारे शरमके दाँतों तले जीभ दबा ली थी"

नदारद है। उसके साथ हँसी-दिल्लगी तो चल सकती है, पर मुहब्बत होना,—यह तो नामुमकिन है।

एक भूतिनी भी कई बार शिनूकी निगाहसे गुजर चुकी है। वह एक अँगोछा पहनती और उससे सिर ढककर बाल बखेरे हुए बगुलाकी तरह लम्बे-लम्बे पैर रखती हुई, हाथकी हँडियामेंसे गोबरका पानी



"गोबरका पानी छिड़कती हुई चली जाती है"

छिडकती हुई चली जाती है। उसकी उमर ऐसी कुछ ज़्यादा नहीं मालूम होती। शिबूने एक बार उससे मसखरी करनेकी कोशिश भी की थी, पर भूतिनी क्रोधित बिल्लीकी तरह गुर्रा उठी, आख़िर शिबूको मारे डरके वहांसे चम्पत ही होते बना।

शिबूका मन सबसे ज़्यादा चुराया था एक डाकिनीने। 'भूतोंके बीहडके पूरबकी ओर गंगाके किनारे खोरी-ब्राम्हनीका जो छोडा हुआ घर था, कुछ दिन हुए, उसी टूटे-फूटे खण्डहरमें उसने अड्डा जमाया है। शिबूने उसे सिर्फ एक ही बार देखा है, और देखते ही उसपर मोहित



"राजूरकी डालीसे चबूतरा बुहार रही थी"

हो गया है। डाँकिनी उस समय एक खजूरकी डालीसे चबूतरा बुहार ६
रही थी। पहनावेमें फकत एक सफेद धोती थी, बस। शिबूको देखकर क्षण-भरके लिये घूँघट खींचकर खिलखिलाकर हँस देती और तुरन्त ही हवामें विला जाती। कैसे दाँत हैं। कैसा मुँह है। कैसा

रंग है। नृत्यकालीका रग था गुलाबजामुन-सा, पर इस डाकिनीका रंग है गुलाबजामुनके भीतरकी सुफेदी-सा।

शिवूने लम्बी सांस लेकर गाना शुरू किया —

"अहा, श्रीराधा और चन्द्रावली
किसको छोड़ूं, दोनो भली—"

सहसा पासके ताडवृक्षकी चोटीसे एक तीव्र कण्ठकी आवाज उठी —

"च र र र र र
अरे भजुआके वहिनिया भगलूरे चिटिया
केकारासे सदिगा हो केकरासे—हो-ओ-ओ-ओ—"

शिवू चौंककर बोला—"ताडपर कौन है रे ?"

उत्तर मिला—"करिया प्रेत हूं।"

शिवू—"काला भूत ? उतर तो आओ, बेटा।"

सिरपर मुरेठा था, काला स्याह चेहरा, गिरगिटकी तरहका एक जीवात्मा सडाकसे नीचे उतर आया, और जमीनसे सिर लगाकर प्रणाम करके बोला—"गोड लागीं, वर्हमदेउजो।"

शिवू—"जीते रहो बेटा। जरा तमाकू पिला सकता है ?"

करिया प्रेत—"चिलम बाय ?"



"सड़ाकसे नीचे उतर आया"

शिवू—'तमाकू ही नहीं है तो चिलमकी भली चलाई। कहींसे खोज-खाजके ले आ।"

प्रेत ऊपरको चढ़ा चला गया। थोड़ी ही देरमे वैद्यबाटीके बाजारसे तमाकू, टिकिया और चिलम लाकर आग सुलगाई, और चिलम भरकर शिवूके हाथमे दे दी। शिवू एक अरुईके डठलपर चिलम बिठाकर मजेसे पीता हुआ बोला—"अच्छा, तो—तू आया कब ? अपना सब हाल-चाल तो सुना।"

करिया परेतने जो इतिहास सुनाया, उसका सार यह है।—उसका देश है छपरा जिला। देशमे किसी समय उसके जोरू, जमीन, गाय भैंस, खेत सब-कुछ था। उसकी स्त्री मुगरी बडी कर्कशा और बदमिजाज थी, बनती भी उससे कम थी। एक दिन पडोसी भजुआकी बहनके बारेमे पति-पत्नीमे खूब तकरार हुई। स्त्रीकी पीठपर कसकर एक लट्ठ जमाकर पतिदेवता देश छोडकर कलकत्ता भाग आये। यह तीस बरस पहलेकी बात है। कुछ दिन बाद समाचार आया, मगरीको चेचक हुई थी, मर गई। मगरीका मालिक फिर देश न गया, और न उसने दूसरा ब्याह ही किया। कई जगह नौकरी करता हुआ अन्तमे वह चाँपदानीकी मिलमे कुलीके कामपर भर्ती हुआ, और कुछ ही वर्षोंमे सरदार बन गया। कुछ दिन पहले एक लोहेकी बीम 'हाफिज' यानी क्रेनसे ऊपर उठाते वक्त उसके सिरपर चोट लगी। उसके बाद महीने-भर अस्पतालमे पडा रहा। फिलहाल

आप पश्चत्व प्राप्त करके प्रेतके रूपमे इसी ताडवृक्ष पर विराज रहे हैं।

शिबू एक लम्बी दम लगाकर कन्धिया परेतके हाथमें चिलम देना ही चाहता था, इतनेमें जमीन मे से फूटके फूटे वर्तनकी-सी एक आवाज़ आई—"कहिये, भाई साहब, चिलममे कुछ बचा है?"

वलके पेडके पास जो ईंटोंका पजाया था, उस मे की कैठ ईंटें खिसक पडीं, और उसकी सँधि मे से घुटनोंके बल एक मूर्ति निकल आई। मोटा और ठिगना शरीर था, बडे हुक्केके नारियलपर दोनों तरफ मूँछें निकल आनेसे जैसा होता है, वैसा मुँह था। चाँद गजी थी, गलेमे रुद्राक्षकी माला थी, बदनपर घुडीदार मिरजई, पहनावेमे रेशमकी धोती, पैरोमे तालतलाकी चट्टियाँ थीं। आगन्तुकने शिबूके हाथसे चिलम लेकर कहा,—

"ब्राह्मण है?—दण्डवत महाराज। कुछ सम्पत्ति थी, यहींपर गडी है। इसीसे यक्ष होकर चौकी द रहा हूँ। ज्यादा कुछ नहीं,—ये ही दो-चार-पाँच सौ होगे। सब रेहनके तमस्सुक है, भइया।—इस्टाम्पदार कागजोपर लिखे हुए,—नकदी रुपया एक भी न पाओगे। खबरदार, उधर नजर न डालना—हाथोमे हथकडी पड जायँगी, थू थू।"

शिबूको 'मेघदूत' थोडा-बहुत याद था। उसन बडे सम्मानके साथ पूछा—"महाशय, क्या आपने कालिदासका—"



"सब रेहनके तमस्सुक है, भइया !"

यक्ष—"अरे वह तो मेरा साढ़ू है। कालिदासने मेरे ममिया-ससुरकी लड़कीसे शादी की थी। छोकड़ा हिजलीमें निमकीका गुमाश्ता था,—उसे मरे तो बहुत दिन हो गये। तुमने उसका नाम कैसे जान लिया, भाई ?"

शिबू—"आपको यहां आये कितने दिन हुए ?"

यक्ष—"मुझे आये ? हे—हैं—। मुझे यहां रहते हो गये

आज—ये समझो तुम—साढ़े तीन कोडी बरस तो भी हुए होंगे। कितने आये, देखे, कितने चले गये, सो भी देखे। अरे तुम तो उस दिन आये हो, चींटोंको भगाकर—तीन दफे ठोकर खाकर—पेड़पर चढ़े थे। सब देखा है मैंने। तुम्हें गानेका शौक मालूम होता है,—अच्छा है, अच्छा है। हाँ, अगर गानेकी कला सीखना चाहते हो, तो मेरे शागिर्द बन जाओ, समझे भइया। अब जरा गलेकी आवाज फट-सी गई है, फिर भी 'लटा हाथी बिठोरा-सा।' समझे।"

शिबू—"श्रीमान्‌का भूतपूर्व परिचय पूछ सकता हूं ?"

यक्ष—"खूब कही। मेरा नाम था नादेरचन्द मल्लिक, पदवी वसु, जाति कायस्थ, निवास रिसड़ा, हाल साकिन इस पजायेके भीतर। साबिक पेशा दरोगागीरी, इलाका रिसड़ासे लेकर भद्रेश्वर तक। जार्न टी साहबका नाम सुना है ? हुगलीके कलक्टर थे,—बड़े ही महरबान थे मुझपर। इलाके-भरके तमाम इख्तियारात मुझे ही दे रक्खे थे। लोग नादेर मल्लिकके नामसे घबड़ाते थे।"

शिबू—"श्रीमान्‌के परिवारमें कौन-कौन थे ?"

यक्षने एक गहरी उसास लेकर कहा—"सब सुख क्या तकदीरमें बदा होता है, भइया। घर-गिरस्ती सभी कुछ थी, पर श्रीमतीजी थीं पूरी खूंखार। क्या कहूं साहब, मैं ठहरा नादेर मल्लिक,—कम्पिनीकी दीवानी, फौजदारी, निजामत अदालत जिसकी मुट्ठीमें थी,—मेरी ही पीठपर जमा दी एक कमरे इंधनकी लकड़ी। उसके

बाद भाग गई मायकेको। ३२४ धारामें डाल देता, पर क्या करता, छीछालेदरके डरसे गिरफ्तारीका परवाना नहीं निकाला। पर जाती कहा? गुरु, धर्म, सब मौजूद हैं। सन् सैंतालीसकी सालमें जो ताऊन फैली, उसमें सुसरी फौत ही हो गई। घर-गिरस्तीमें फिर मन ही नहीं लगा। जार्ज टी साहबके विलायत चले जानेपर मैंने भी पेन्शन ले ली, और एक शौककी 'जात्रा'* खोल दी। उसके बाद परमायु खतम हो जानेपर यहा आकर अड्डा जमाया है। लड़के-बाले नहीं हुए, न सही, इसका मुझे बिलकुल रज नहीं। मैं करू रोजगार, और न जाने किस अभागेका बेटा भूतसे आदमी बनकर मेरे घर जन्म लेता और मेरी जायदादका वारिश बन बैठता,—भइया, यह तो मुझसे न सहा जाता। अब बड़े मजेमें हू, अपनी जायदादकी खुद रखवाली कर रहा हू, गङ्गा-किनारेकी हवा खाना, और बम्-बम् करना, बस। खैर, मेरा हाल तो सब सुन चुके, अब अपना किस्सा कहो?"

शिबूने अपना सारा इतिहास सुना दिया। सुनानेके बाद करिया परेतका भी परिचय करा दिया।

यक्षने कहा—"सभी साथियोका एक-ही-सा हाल मालूम होता है। पुरानी बातें याद करके दिलको रज पहुचाना फिजूल है,—अब जरा गाना-बजाना होने दो। पखवाज नहीं है,—कुछ रगत तो आयेगी

* बिना सीन-सीनरीका नाटक या नाटक मण्डली।

नहीं। अच्छा, पेटपर ही थप्पिया जमाऊँगा। ऊ-हुहू—ढब-ढब कर रहा है। बेटा सत्तूखोर, जरा चिकनी कड़ी मट्टी तो ले आ कहींसे,—रख दे यहीं, बीचमें। बस, ठीक है।—चौताल समझते हो? छ मात्रा, चार ताल और दो खाली। लो, बोल सुनो —

धा धा धिन ता कत् तागे,
धिन ता तेरे केटे गदि घेने धा—

'धा' पर सम है। धिन ता तेरे केटे गदि घेने धा। 'धा' के बिगड़ते ही सब गुड़ गोबर हो जाता है।—गला रुका आता है। बेटा करिया भूत, एक चिलम तमाकू और भर ला, भई।"

उद्योगी पुरुषके लिये लक्ष्मीकी प्राप्ति अनिवार्य है। बहुत अनुनय-विनय करनेके बाद डाँकिनी शिबूके साथ रहनेको राजी हो गई। पर अभी तक वह बोलती नहीं है, घूँघट भी नहीं खोला, सिर्फ इशारेसे ही राय जाहिर की है। आज भौतिक पद्धतिसे शिबूका ब्याह है। सूर्यास्त होते ही शिबूने तमाम देहमें गङ्गाजीकी मिट्टी पोतकर स्नान किया, गायके गोंदसे जनेऊ माजा, काँटेदार पौधेके झुरासे बाल काढे और चोटीसे एक बिल्वफल बाँध लिया। तमाम बीहड़ घूमकर बड़ी परेशानीके साथ बहुतसे धँटूफूल, गोगची, कुछ पके जङ्गली शरीफे और बेल इकट्ठे किये। उसके बाद शामको सियारोंका

'कनसार्ट' (Concert) शुरू होते ही वह सीगी-वाहनीके घरकी तरफ चल दिया।

उस दिन शुक्ल पक्षकी चतुर्दशी थी। घरके बरामदेमें अरईके पत्तेके आसनपर डाकिनीके सामने बैठकर शिवूने मन्त्र पढनेकी तय्यारी करते हुए उत्सुकताके साथ कहा—"अब घूंघट उघाडनेकी जरूरत है।"

डाकिनीने घूंघट हटा लिया। शिवू चौंक पडा। डरते-डरते बोला—"ऐं! तुम नृत्यकाली हो?"

नृत्यकाली बोली—"हाँ रे, लोगटा! सोचा होगा, मरकर मेरे पञ्जेसे बच जायगा। भूतिन और पिशाचिनोंके पीछे-पीछे घूमनेमें बडा मजा आता है, क्यों?"

शिवू—"यहां आई कैसे?—हैजा हुआ था क्या?"

नृत्यकाली—"हैजा हो दुश्मनको। क्यों, घरमें क्या मिट्टीका तेल नहीं था?"

शिवू—"इसीसे चेहरा उजला-सा मालूम देता है, तपनेसे सोनेकी चमक बढ जाती है। मिजाज भी कुछ नरम पडा या नहीं?"

शुभकर्ममें बाधा पड गई। बाहर यह काहेका शोर हो रहा है? जैसे शकुनि गृद्धिनियोंका एक झुण्ड छीना-झपटी, मारा-काटी, फाडा-फाडी कर रहा हो। सहसा उल्काकी तरह दौडती हुई भूतिनी और पिशाचिनी आ पहुंचीं, और लगीं जोरसे शोर मचाने और दरवाजा धकेलने।

[भूत नाकके स्वरमें बोलते हैं, और उनकी सारी बातें ज्योंकी त्यों लिखनेमें चन्द्रबिन्दुओंकी काफी जरूरत पड़ती। इसलिये छापेखानेके देवताओंकी सुविधाके लिये चन्द्रबिन्दु (ँ) छोड़ देते हैं। पाठकगण इच्छानुसार दिठा लेंगे।]

पिशाचिन—"अपना खसम मैं तुझे कैसे दे दूँ री ?"

भूतिनी—"अरे, मर बुढ़िया, वह तो तेरे नातीकी उमरका है।"

पिशाचिन—"ओफ़्फ़ोह! वाह री मेरी गौनेकी दुलहिन ?"

भूतिनी—"चल हट, मच्छीमार बुढ़िया, मैं तो उसकी दो जनम पहलेकी बहू हूँ।"

पिशाचिन—"जा-जा, गोबर-पाथिनी, मैं तो उसकी तीन जनम पहलेकी बहू हूँ।"

भूतिनी—"मर जा छिनाल, उधर डाँकिनी मरी रूल-मुँहेको लेकर चलनी बने।"

तब पिशाचिनने गड़बड़ाकर मन्त्र पढ़ा, और दरवाजा बन्द करके बोली—"पहले तेरी ही गरदन तोड़ूँगी, फिर डाँकिनी मरीको खाऊँगी।"

फिर क्या था, काटना-नोंचना गुत्थम-गुत्था शुरू हो गया। अकेली नृत्यकालीसे ही पार पाना मुश्किल था, अब तो दो जनमकी दो श्रीमती और आ धमकीं। गिरू हाथमें जनेऊ लेकर इष्टमन्त्र जपने लगा। नृत्यकाली मारे गुस्साके फूलने लगी।

इतनेमें नेपथ्यमें चक्रकी आवाज सुनाई दी —

"गजो, क्या सुनती वेमनसे
सोच रही हो क्या वशो-ध्वनि आई काननसे ?
वशो नहि यह, रही लोमडी बोल वहाँ निःशङ्क।
रात-बिरात निकल मत घरसे, कुलमें लगे कलङ्क।"

यक्षने दरवाजेके पास आकर कहा—"वाह, भाई साहब, यहा क्या हो रहा है ? इतना शोर-गुल काहेका है ?"

करिया परेत चिल्लाया—"ए वर्हम पिचास, अरे दरवाजा तो खोल।"

शिबूके होश फाख्ता हो गये।

बडा-भारी एक धक्का लगा, पर मन्त्रसे कीला हुआ हुडका न खुला, दरवाजा भी न टूटा। तब करिया परेतने जोरेसे उत्पाटन-मन्त्र पढना शुरु किया —

"मारे जूजुआन—हेइआ
और भी थोडा—हेंइआ
परवत तोडो—हेंइआ
चले इञ्जन—हेइया
फटे वयटल—हेइआ
खबरदार—हा-फिज्।"

खडखडाता हुआ घरका दरवाजा, हुडका, छप्पर, दीवाल, सब आसमानमें उडा चला गया और दूर जाकर गिरा।

डाँकिनी अर्थात् नृत्यकालीको देखकर यक्षने कहा—"अरे, ये तो श्रीमतीजी हैं, यहा कैसे ? ब्रह्मदैत्यके साथ ! छि छि—हया-शरम सब चाट चुकीं ?" डाँकिनी घूंघट खींचकर मिटपिटाकर एक किनारेसे बैठ गई।

करिया परेत बोला—"का रे मुंगरो, तोहक शरम नाहीं लगत या ?"

इसके बाद जो ऊधम शुरू हुआ, उसकी याद करते ही कलमकी स्याही सूख जाती है। शिबूकी तीन जनमकी तीन स्त्रियाँ और नृत्यकालीके तीन जनमके तीन पति,—इन डबल त्र्यहस्पर्शके योगसे भूतोंके बीहड़में एकसाथ जलस्तम्भ, दावानल और भूकम्प शुरू हुआ। भूत, प्रेत, दैत्य, पिशाच, ताल, बेताल इत्यादि जहा-कहीं जितने भी देशी उपदेवता थे, सब तमाशा देखने आये। स्पूक, पिक्सि, नोम, गबलिन आदि मुंछ-मुडे विलायती भूत बंसी बजा-बजाकर नाचने लगे। जिन, जन्द, आफ्रिद, मारीद वग़ैरह लम्बी दाढ़ीवाले फादली भूतोंने भी नाच शुरू कर दिया। और चिड्, चंड्, फैंचड्ड इत्यादि मङ्गुले चीनी भूत भी कलाबाज़ी खाने लगे।

राम राम राम। 'जय हाडी-कन्या चण्डी, आज्ञा दो, माता।' कौन इस उत्कट दाम्पत्य समस्याका समाधान करेगा ? मेरा बूता नहीं। भूत-जाति हिम्मत हारनेवाली नामर्द कौम नहीं है,—अपने हक़की कौड़ी-कौड़ी धरवा लेगी। पुरुषका पुरुषत्व, नारीका नारीत्व,

दूसरी श्रेणीमें हैं :—

मिस्टर गुहा	राजनीतिज्ञ
निताई बाबू	सम्पादक
प्रोफेसर गुंई	अध्यापक
रूपचन्द	व्यापारी
लूटविहारी	इन्सालुवेन्ट
गैंडालाल	गेंडातलायका सरदार
तिवारी	जमादार

इत्यादि

तीसरी श्रेणीमें हैं :—

मिस्टर गुप्ता	विशेषज्ञ
सुरेशचन्द्र	नये ग्रेजुएट
निरेशचन्द्र	नये ग्रेजुएट
दीनेशचन्द्र	क्लार्क

इत्यादि

चौथी श्रेणीमें हैं :—

पाँचू मियाँ	मजदूर
गनेश्वर	मास्टर
कँगालीचरण	निठल्ला

और भी बहुतसे आदमी

पहली श्रेणीकी बातचीत

मिस्टर ग्रेग—"हैलो महाराजा, आपने भी क्रास ज्वाइन किया है ?"

हमराव सिंह—"हाँ, माजरा क्या है, जरा देखनेको तबीयत चल गई। अच्छा, ये जगद्गुरु हैं कौन ?"

ग्रेग—"मुझे कुछ नहीं मालूम। कोई कहता है, इनका नाम वेन्डरल्यूट है, अमेरिकासे आये हैं, कोई कहता है, प्रोफेसर फ्राङ्कन्स्टाइन यही हैं। फादर ओ'ब्रायनने उस दिन कहा था, यह devil himself स्वयं शैतान है। इसपर भी रवेरेन्ड फिम्स कहते है, आप संसारके निरुत्तम पुरुष हैं, एक superman है। एक कमप्लिमेन्टरी टिकट आगया था, सो तमाशा देखने चला आया हूं।"

मिस्टर ह्वावलर—"मुझे भी एक मिला है।"

हमराव सिंह—"अच्छा! हमने तो रुपये देकर खरीदा है, सो भी बडी मुश्किलसे। शायद जगद्गुरु जानते है कि आप लोगोंके सीखनेकी कोई बात नहीं, इसीसे कमप्लिमेन्टरी टिकट दे दिया है।"

खुदीन्द्रनारायण—"सुना है, ये बंगाली हैं, विलायतसे रंग बदलकर आये हैं। अच्छा, बोलशेविक तो नहीं हैं ?"

चमराव अली—"नहीं-नहीं, ऐसा होता तो गवर्मेन्ट इसे कभीकी

बन्द कर देती। मुझे मालूम होता है, जगद्गुरु तुर्किस्तानसे आये हैं।"

हावलर—"खैर, अब मालूम हो जायगा, कौन हैं।"

दूसरी श्रेणीकी बातचीत

निताई बाबू—"जगद्गुरु ठहरे कहा हैं, मालूम है ? जरा इन्टरव्यू करने जाना है।"

मिस्टर गुहा—"सुना है, बङ्गाल-क्लबमे ठहरे हैं।"

रूपचन्द—"नहीं नहीं, मैं जानता हू, पगैयापट्टीमे कमरा लिया है।"

लटबिहारी—"अच्छा, वे जो महाविद्याकी क्लास खोल रहे हैं, उसमें बात क्या है ? बचपनमे तो पढा था—काली, तारा, महाविद्या—"

प्रोफेसर गुंई—"अरे, वह विद्या नहीं। महाविद्या—यानी सब विद्याओकी सिरताज, जिसके प्राप्त होनेपर मनुष्यमे असीम शक्ति आ जाती है—सबपर प्रभुत्व प्राप्त होता है।"

रूपचन्द—"यहा तो, देखता हू, हजारो आदमी लेक्चर सुनने आये हैं। सभीको यदि प्रभुत्व प्राप्त हो जाय, तो सेवक कौन बनेगा ?"

गैंट्टालाल—"इसकी क्यो चिन्ता करते हैं ? आप हुक्म दीजिये, हम और तिवारी दोनो दोस्त मिलकर सबको भगाये देते है। कुछ पान-तमाखूके लिये दे दीजियेगा—"

तिवारी—"नहीं-नहीं, अभी झमट मत खड़ा करो,—साहब लोग बैठे हुए हैं।'

तीसरी श्रेणीकी बातचीत

नरेश—"आपने भी शायद इसी वर्ष पास किया है? किस लाइनमें जानेका इरादा है?"

निरेश—"अभी तक तो निश्चय नहीं किया। इसीलिये तो महाविद्याकी क्लासमें दाखिल हुआ हूं,—शायद कोई रास्ता निकल आय। अच्छा, इस कोर्स-आफ्-लेक्चर्सकी व्यवस्था की किसने?"

सरेश—"क्या मालूम साहब। कोई कहता है, विलायतके किसी दयालु करोडपतिने जगद्गुरुको भेजा है। फिर यह भी सुनते हैं कि यूनिवर्सिटी ही छिपी तौरसे इसका खर्च चला रही है।"

मिस्टर गुप्ता—"यूनिवर्सिटीके पास रुपये कहां हैं? खैर, कोई भी रुपया दे, पर व्यर्थ अपव्यय हो रहा है। ऐसे लेक्चरोंसे देशकी उन्नति नहीं हो सकती। इसके लिए कैपिटल (मूलधन) चाहिये, व्यापार चाहिये।"

दीनेश—"तो फिर आप यहां क्यों आये? और ये सब राजा-महाराजा जो क्लास अटेन्ड कर रहे हैं, सो किस लिये? अवश्य ही कोई लाभकी आशा है। मुझे देखिये न, मामूली-सी तनख्वाह पाता

हू, लेकिन तो भी कर्ज लेकर लेक्चर-फी जरूर जमा करा देता हू। शायद कोई तरक्की हो जाय।"

सुरेश—"जगद्गुरु आयेंगे कब ? घंटा तो बीत गया।"

चौथी श्रेणीकी बातचीत

गवेश्वर—"कहो जी पांचू मियाँ, यहा कैसे ?"

पांचू मियाँ—"बाबूजी, रुपया रोजपर अब गुजर नहीं चलती। इसीसे थरिया-लोटा वेचकर एक टिकट खरीद लिया है, शायद कोई रास्ता निकल आवे, हाँ, तो आप लोग इतने पीछे क्यों बैठे है हुजूर ? सामने जाकर बैठिये—बाबू लोगोके साथ।"

कंगालीचरण—"डर लगता है।"

गवेश्वर—"अरे हम लोग बडे मजेमे हैं—एक तरफ। हाँ, सुनो, अगर तुम्हे कहीं समझमे न आवे, तो हमसे पूछ लेना।"

× × × ×

[घंटेकी ध्वनि। जगद्गुरुका प्रवेश। सिरपर सोनेका मुकुट, मुँहपर मुँहपोष (नकाब) और देहपर गेरुए रगका ढीला अँगरखा है। आनेके साथ ही ऊपरकी पोशाक उतार डाली। सिर मुडा हुआ, देहपर तेल, पहनावेमें एक लँगोटी, दाएँ हाथमें अमीष्ट और अभयदान, और बाएँ हाथमें सेंध मारनेका यन्त्र है। फटाफट तालियाँ बजने लगीं।]

हमराव—"चेहरा बड़ा भद्दा है। मिस्टर मैंन पहचानते हैं इन्हें ?"

मैंन—"कुछ-कुछ पहचाने-से लगत तो ह।"

जगद्गुरु—"हे छात्रगण, तुम लोगोंको आशीर्वाद देता हू, जगज्जयी होओ। मैं जो विद्या सिखाना चाहता हू, उसके लिए बड़ी साधनाकी जरूरत है,—तुम लोग एक दिनमें मत्र नहीं समझ सकते। आज मैं सिर्फ भूमिका मात्र करूगा। हे बालकगण, तुम लोग मन लगाकर सुनो,—जहाँ कुछ शका मालूम हो, मुझसे निर्भय होकर पूछ लेना।—"

प्रोफेसर—"मैं strongly (जोरोंसे) इसका विरोध करता हू—जगद्गुरु क्यो हम लोगोंके लिये 'बालकगण—तुम लोग' इत्यादि शब्दोंका प्रयोग करेंगे, क्या हम लोग स्कूलके लड़के है ? यह एक respectable gathering (प्रतिष्ठित पुरुषोंकी सभा) है। यहा महाराजा हमराव सिंह और नवाब चमराव अली जैसे प्रतिष्ठित पुरुष मौजूद हैं। पद और प्रतिष्ठाका विचार न सही, पर उमरका तो कम-से-कम ख़याल होना ही चाहिए। हममेंसे कितने ही ऐसे हैं, जिनकी अवस्था साठसे ऊपर पहुच चुकी है।"

हावलर—"यह आप लोगोंकी नेटिव (देशी) भाषाका दोष है। जगद्गुरु विदेशी आदमी है, 'आप' और 'तुम' में कुछ फर्क नहीं समझते। और 'बालक' शब्द तो कुछ नहीं, अंग्रेजीका 'ओल्ड बॉय' समझो।"

खुदीन्द्र—"जब कि यहाकी भाषा नहीं आती, तो अंग्रेजीमे क्यों नहीं बोलते ?"

गुई—"खैर, कुछ भी हो, मैं विरोध करता हू।"

मिस्टर गुहा—"मैं इस विरोधका समर्थन करता हू।"

जगद्गुरु—(हसते हुए) "वत्स, उतावली मत करो। मैं यहाकी भाषा अच्छी तरह जानता हू। हिन्दुस्तानी, अंग्रेजी, फारसी, जापानी ये सभी मेरी मातृभाषा हैं। मैं प्रवीण पुरुष हू, दस-बीस हजार वर्षसे लोगोको यही महाविद्या सिखा रहा हूं। तुम लोग मेरे स्नेहपात्र हो, इससे 'तुम' कहनेका अधिकार मुझे है।"

लटविहारी—"जुरूर है। आप हम लोगोंको 'तुम—तू' जो तबीयतमे आवे, कहिए। मैं इन सब छोटी-छोटी बातोकी परवाह नहीं करता। मगर, अन्तमे कहीं चकमा न दीजिएगा।"

जगद्गुरु—"बचा, मैं कोई भी चीज देता नहीं, सिर्फ सिखाता हू। कुछ भी हो, तुम लोगोको देखकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई है। ऐसे सब अच्छे-अच्छे लडके होकर,—सिर्फ शिक्षाके अभावसे उन्नति नहीं कर पाये हो।"

मिस्टर गुप्टा—"फालतू बातें छोडकर कामकी बात बताइये।"

जगद्गुरु—"हे छात्रगण, महाविद्या बिना जाने मनुष्य सुसभ्य और धनी नहीं हो सकता, और न प्रतिष्ठा ही पा सकता है,—उसकी जिन्दगी लकडी चीरने और पानी भरनेमे ही बीत जाती है।

परन्तु यह याद रखना चाहिए कि साधारण विद्या और महाविद्या ये दोनों एक चीज नहीं है। तुम लोगोंने हिन्दीकी तीसरी पोथीमे पढ़ा होगा —

"विद्या-धन अरु धननमे, एतो अन्तर जान।
चोर न चोरी कर सके, बाढ़ करते दान॥"

यह बात साधारण विद्याके वास्ते लागू हो सकती है, न कि महाविद्याके लिये। महाविद्या सिर्फ अपने खास आदमियोंको—सो भी बड़ी सावधानीसे—सिखाई जाती है। अधिक प्रचार होनेसे विशेष हानिकी सम्भावना है। विद्वान्-विद्वानमे सघर्ष होनेपर बातोंका जमा-खर्च होकर ही रह जाता है, किन्तु महाविद्वानोंमे परस्पर भिड़न्त हो जाय, तो फिर सबका चकनाचूर ही समझो। इसकी साक्षी यूरोपका युद्ध है। अतएव महाविद्वानोंको एक साथ मिलकर ही काम करना चाहिये।"

हावलर—"मैं इस लेक्चरका विरोध करता हू। इस देशके लोग अभी महाविद्या प्राप्त करनेके योग्य नहीं हुए हैं। और हमारे महाविद्वान्गण देशी महाविद्वानोके साथ मिलकर चल भी नहीं सकते। झूठमूठ व्यर्थको एक अशान्ति और फैल जायगी।"

प्रेस—"बस, बैठ जाओ, हावलर। भला महाविद्या सीखना क्या इस देशके लोगोंका काम है? हाँ, अगर लेक्चर सुनकर लोग लोकप्रवाहमे पड़कर इस विषयमे कुछ उछल-कूद मचा लें, तो बुराई

क्या है ? जरा अभी दूसरी तरफ़ distraction होना (ध्यानका वटना) देशके लिये आवश्यक हो गया है।"

हावलर—"साधारण विद्या इस देशमे जब पहले-पहल चलाई गई थी, तब हम लोग उसे एक खिलवाड समझते थे। अब तो देख ही रहे हो, सम्हालना मुश्किल हो रहा है। जबर्दस्ती टेक्स्ट-बुकोसे यहा-वहासे काट-छाट करनेपर भी सम्हाले नहीं सम्हालना।"

सुदीन्द्र—"मिस्टर हावलर ठीक कह रहे हैं। मुझे भी यह बात अच्छी नहीं मालूम होती।"

चमराव अली—"अच्छे-बुरेका तो सरकार विचार करेगी। • हाँ, महाविद्या अगर सीखनी ही हो, तो मुसलमानोके लिए अलहदा—"

हमराव—"ऑर्डर, ऑर्डर।"

जगद्गुरु—"साधारण विद्याका मामूली ज्ञान बिना हुए महाविद्यामे अच्छी व्युत्पत्ति नहीं होती। पाश्चात्य देशमे इन दोनो विद्याओका मणि-काञ्चनका-सा योग है। इस देशमे महाविद्वान् हैं ही नहीं, सो बात नहीं—"

गॅट्टालाल—"हु—हू। गुरुजी मुझे ताड गये।"

रूपचन्द—"अरे जा, तुझे कौन जानता है ? मेरी तरफ देख रहे हैं।"

जगद्गुरु—"असलमे बात यह है कि मूर्ख लोग महाविद्याका प्रयोग अपनी इज्जत-आवरूको बचाते हुए नहीं कर सकते। पाश्चात्य

देश इस विषयमे बहुत ही उन्नत है। जरीदार मखमलकी मियानमे जैसे तलवार छिपी रहती है, उसी प्रकार महाविद्याको विद्यासे ढके रहना चाहिये। महाविद्याका मूल सूत्र ही है—'पकड़ा न जाय'।"

प्रोफेसर गुँई—"आप ये सब क्या भद्दी बातें कह रहे हैं?"

बहुतसे—"शेम, शेम।"

जगद्गुरु—"वत्स, लज्जित मत होओ। तुम्हारे ही किसी पण्डितने कहा है—'एका लज्जा परित्यज्य त्रिभुवनविजयी भव।' यदि महाविद्या सीखना चाहते हो, तो सत्यकी नग्नमूर्ति देखकर डरो मत, डरनेसे काम नहीं चलेगा। हाँ, क्या कह रहा था, सुनो।—इस महाविद्याको जब पहले-पहल आदमी सीखता है, तो वह अनाडी शिकारीकी तरह इस विद्याका अपप्रयोग करता है। जहा जाल बिछानेसे कार्य-सिद्धि हो सकती है, वहा वह कुश्ती लडकर शेर मारना चाहता है। सम्भव है, दो-चार शेर मर भी जायँ, पर शिकारी भी आखिर घायल हुए बिना नहीं रहता। विद्या-गुप्तिके अभावसे ही इस विपत्तिका सामना करना पडता है। मनुष्य जब और थोडा चालाक हो जाता है, तो वह जाल बिछाना शुरू करता है और खुद छिपा रहता है। परन्तु चार-छ शेर जहा जालमे फसे कि और सब समझ जाते हैं, फिर उधर फटकते भी नहीं, लुके-छिपे उसकी पोल खोलने लगते हैं, और शिकारीका भी रोजगार बन्द हो जाता है। जाल ऐसा होना चाहिये, जिसे कोई पकड न सके। महाविद्याको भी उसी तरह गुप्त रखना चाहिये।

तुममेंसे बहुतसे ऐसे होंगे, जो स्वयं नहीं समझते कि क्या कर रहे हैं, किन्तु केवल संस्कारवश महाविद्याका प्रयोग करते रहते हैं। इससे कभी भी उन्नति नहीं हो सकती। दूसरेके सामने प्रकट करना निषिद्ध है, किन्तु खुद अपनेसे भी छिपाये रखना महाविद्यामें जंग लगाना है! खूब सोच-समझ कर फलाफलका विचार करके महाविद्याका प्रयोग किया जाता है, ऐसे नहीं।"

प्रो० गुँई—"हूं बड़ी पेचीली बातें।"

लूटविहारी—"अजी, कुछ नहीं। जगद्गुरु इसमें नई बात कौनसी बता रहे हैं। प्रैक्टिस मुझे सब मालूम है, सिर्फ थ्योरी सीखनेको जरा समय नहीं मिला।"

गुहा—"इतने दिनोंसे थे कहां?"

लूटविहारी—"ससुराल। परसों ही तो खलास हुआ हूं।"

गुहा—"ऊं-हुक्, तुमसे कुछ न होगा। तुम तो पकड़ाई दे गये।"

लूटविहारी—"आपसे कहनेमें क्या हर्ज। दोनों ही महाविद्वान् हैं—अन्तरङ्ग मौसेरे भाई।"

हमराव—"ऑर्डर, ऑर्डर।"

गुहा—"अच्छा, गुरुदेव। महाविद्याके सीखनेसे क्या हमारे देशके सभी भाइयोंकी उन्नति हो जायगी?"

जगद्गुरु—"देखो, संसारकी ये जो धन-सम्पदा देख रहे हो, उसकी एक सीमा है, उससे अधिक नहीं बढ़ाई जा सकती। सबको

यदि बराबरका हिस्सा मिले, तो किसीका भी पेट न भरे। जो चीज बिना किसी रुकावटके सबके काम आ सकती है, उसकी गणना सम्पत्तिमें नहीं है। अतएव संसारकी व्यवस्था यह ठहरती है कि कुछ ही आदमी भोग भोगेंगे, और बाकीके सब उन्हें मदद देंगे। बस, थोड़ेसे महाविद्वान् चाहिये, और बाकी झुंड-के-झुंड महामूर्ख।"

सुवीन्द्र—'सुनते हैं महाराजा ? यही तो हम कहते आते हैं, शुरूसे। अरिस्टोक्रेसीके बिना समाज टिकेगा किसपर ? और लोग हमें ही उल्टा मूर्ख बताते हैं—अयोग्य कहते हैं। हे !"

जगद्गुरु—'गलत समझे, वत्स। तुम्हारे पूर्वपुरुष ही महा-विद्वान् थे, तुम नहीं। तुम तो सिर्फ अतीत-अर्जित विद्याका भोग करते हो। तुम्हारे आस-पास महाविद्वान लोग घात लगाये बैठे हैं। यदि उनके साथ जूझना न सीखा, तो शीघ्र ही झुंडमें जा गिरोगे।"

प्रो० गुई—"साफ-साफ कहिये न, महाविद्या है क्या चीज़ ?"

तीसरी श्रेणीसे—"सर, बता दीजिए सर। घटा बजनेमें अब ज़्यादा देर नहीं है।"

जगद्गुरु—"अच्छा तो कहते हैं, सुनो। महाविद्यापर मनुष्यका जन्मसिद्ध अधिकार है, लेकिन इसे मांज-घिसकर पालिश करके सभ्य-समाजके योग्य बना लेना चाहिये। क्रमोन्नतिके नियमानुसार महाविद्या निम्न स्तरसे उच्चतर स्तरमें पहुंच चुकी है। आँखोंके सामने जबर्दस्ती छीन लेना डकैती है—"

छात्रगण—"यह तो महापाप है, नहीं चाहिये, नहीं चाहिये।"

जगद्गुरु—"देशके लिये जो डकैती की जाती है, उसका नाम है वीरता—"

छात्रगण—"नहीं-नही, यह हम लोगोंसे नहीं हो सकती।"

हालदर—"Bally rot"

जगद्गुरु—"खुद छिपे रहकर छीन लेनेको चोरी कहते हैं—"

छात्रगण—"छि—छि, हम लोग ऐसा काम नहीं कर सकते।"

लूटविहारी—"कहो जी, गट्टालाल, तुम कैसे चुप बैठे हो? हाँ-ना कुछ तो कगे।"

जगद्गुरु—"भले आदमी बनकर छीन लेना और फिर पकड़े जाना जुआचोरी है—"

छात्रगण—"राम-राम कहो, तोवा-तोवा, थू—"

गुट्टा—"क्यों भई, लूटविहारी, आँखें क्यों मींच ली हैं?"

जगद्गुरु—"और, जिससे ढोल बजाकर छीना जा सके, फिर भी आखिर तक अपनी इज्जत-आबरू कायम रहे,—लोग जयजयकार करते रहें—वह महाविद्या है।"

छात्रगण—"जगद्गुरुकी जय! बस, हम सब यही चाहते हैं, यही।"

गुँई—"परन्तु 'छीन लेना' शब्द यहाँ कुछ आपत्तिजनक है।"

लूटविहारी—"आपके मनमें पाप है, इसीसे आपको खटका मालूम

दे रहा है। 'छीन लेना' पसन्द न हो, तो 'चकमा देना' कहिये।"

गुँई—"कौन हो तुम, बेहया? तुममें जरा भी conscience नहीं?"

जगद्गुरु—"वत्स, 'छीन लेना' तो रूपकमात्र है। साफ शब्दोंमें इसके मानी होते हैं—ससारके मगलके लिए लोगोंको समझा-बुझाकर कुछ ऐंठ लेना।"

लूटविहारी—"मेरे तो एक ही ससार (गिरस्ती) है। कहींसे कुछ ऐंठ-ऊठकर लाता हूँ, तब कहीं बडी मुश्किलसे गुजर होती है। नवाब साहबका बल्कि—"

हमगब—"ऑडर, ऑर्डर।"

गुई—"देखिये जगद्गुरु, मुझसे विवेक-विरुद्ध काम न होगा, परन्तु आपने जो कहा—'ससारके मगलके लिये', यह मुझे बहुत ही अच्छा लगा है। भगवानसे प्रार्थना है कि—"

लूटविहारी—"महाशयजी, भगवान बेचारेको हर घडी घसीटना ठीक नहीं,—वे बिगड बठेंगे।"

निताई—"अच्छा, यह तो बताओ, सभी अगर महाविद्या सीख लें,—तो?"

जगद्गुरु—"अरे, इसकी कुछ परवाह मत करो। तुम लोगोंमेंसे हरएक अगर जी-जानसे कोशिश करे, तो भी, सिर्फ दो-ही-चार पार उतर सकते हैं।"

सरेश—"सर, जरा टेस्ट कर लीजिये न।"

जगद्गुरु—"अभी परीक्षा लेनेसे कोई विशेष लाभ न होगा। विशेष साधनाकी जरूरत है।"

निरेश—"कुछ थोडेसे मार्क भी नहीं मिलेंगे ?"

जगद्गुरु—"मिलेंगे क्यों नहीं, कुछ थोडे-बहुत तो मिल ही जायगे, पर उससे अभी कमा-खा नहीं सकते।"

निरेश—"तो फिर अभी हम लोगोंको कुछ-कुछ होम-एक्सरसाइज ही दीजिये।"

जगद्गुरु—"घरमे तो ठीक नहीं होगा, वत्स। अभी तुम लोग बिलकुल नादान हो। पहले कुछ दिन दल बाँधकर महाविद्याकी चर्चा करो।"

खुदीन्द्र—"ठीक कह रहे हैं आप। आइये महाराजा साहब, आप, हम और नवाब साहब, तीनो मिलकर एक एसोशियेसन खोल दें।"

प्रो० गुँई—"मुझे भी शामिल कीजियेगा,—मैं स्पीच लिख दिया करूँगा।"

मिस्टर गुहा—"निताई बाबू, भइया, भी तुम्हारे साथ हू।"

लटबिहारी—"मैं, अकेला ही सौ हू। हाँ, अगर रूपचन्द बाबू मेहरबानी करके साथ ले लें तो।"

रूपचन्द—"खबरदार, दूर रहना तुम।"

लटबिहारी—"अच्छा। तुम सरीखे सैकडो बड़े आदमी देखे है।"

गट्टालाल—"हमे किसीकी परवाह नहीं,—क्यो जी तिवारी ?"

मिस्टर गुप्टा—"अजी चिन्ता किस बातकी है, सरेशबाबू, निरेशबाबू। मैं टेकूनिकल क्लास खोल रहा हू, उसमे भरती हो जाइये। 'तरल अलना' (माहौर), गुलाबी बीडी, घडी-मरम्मत, पतग-मरम्मत, दाँत-बँधाई, सूप-बँधाई—सब सिखा दूँगा।"

दीनेश—"गुरुदेव, चुपकेसे ज़रा एक प्रार्थना कर सकता हू ?"

जगद्गुरु—"कहो वत्स !"

दीनेश—"देखिये, मै बिलकुल अनाथ हू, मेरे ऊपर बडाबूढ़ा कोई नहीं। महाविद्याका ज़रा कोई आसान तरीक़ा—बस, ज्यादा कुछ नहीं, लाख-एक रुपया हो जाय—अगर मेहरबानी करके इस ग़रीबको बता दें।"

जगद्गुरु—"बच्चा, तुम्हारे रग-ढग तो अच्छे नहीं मालूम होते। महाविद्वान् दूसरोको ही आसान तरीक़ा बताते हैं,—खुद उसपर भरोसा नहीं करते।"

दीनेश—"टिकटके रुपये भी पानीमे गये। इससे तो डरबीके टिकट ले लेता, तो कुछ दिन आशा-आशामे तब भी कटते।"

गवेश्वर—"मेरा क्या होगा, प्रभु ? कोई भी तो शामिल नहीं करता।"

जगद्गुरु—"तुम लडके तैयार करो। उन्हे सिखाओ,—महाविद्या सीखे जो, मोटर-गाड़ी चढे सो।"

पाँचू मियाँ—"मेरे लिये क्या किया, धर्मावतार ?"

जगद्गुरु—"तुमने यहाँ आकर अच्छा नहीं किया, वत्स। तुम्हारे गुरु रूससे आयेंगे, अभी जरा तसल्ली रक्खो।"

गुहा—"दस हजार रुपयेका चन्दा उगा सकते हो ? यूनियन खोलकर ऐसा रोदा लगाऊँगा कि झटसे तुम लोगोंकी पचगुनी मजदूरी हो जायगी।"

मिस्टर मैच—"खबरदार, मेरी जूट-मिलकी सरहदके भीतर न आना।"

गुहा—(चुपकेसे) "तो आपके मकानपर जाकर मिलूँ क्या ?"

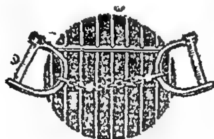
कंगालीचरण—"देव, मैं एक बात पूछ सकता हूँ ?"

जगद्गुरु—"तुम्हें अब क्या चाहिये ? कह डालो तुम भी ?"

कंगाली—"अगर कहीं महाविद्या पकड़ी गई, तो फिर क्या हालत होगी ?"

जगद्गुरु—(मुसकराते हुए वेदीसे नीचे उतर आये।)

घण्टा-ध्वनि और कोलाहल।



कविवर श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर

—की—

शुरूसे आज तककी सम्पूर्ण कहानियोंका संग्रह

"गल्प-गुच्छ"

के नामसे कई भागोंमें प्रकाशित होगा। पहला भाग छप रहा है। द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ भाग क्रमशः प्रकाशित होंगे।

श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुरने अपने सम्पूर्ण ग्रन्थोंका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करनेका अधिकार केवल "विशाल-भारत" को ही दिया है। इसलिये उनकी और-और पुस्तकें भी यहींसे प्रकाशित होंगी।

हिन्दी-अनुवादके विषयमें
कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुरका
अधिकार-पत्र

Agreement between Dr Rabindranath Tagore and Mr Ramananda Chatterjee, Re Translation, Printing and Publishing of Rabindranath's Bengali works in Hindi

To Mr Ramananda Chatterjee,

91, Upper Circular Road, Calcutta

This is to put on record the agreement arrived at between us that —

1 You are to have the sole right to translate or cause to be translated into Hindi and to print and publish any or all of my published works in Bengali in consideration of your paying me in yearly instalments, by the second week of every January, a royalty of 20 per cent on the published price of each and everyone of such Hindi publications

2 You will be at liberty to translate or cause to be translated into Hindi all my published works in Bengali as referred to above and you will have the right to publish such Hindi translations in one or more editions which you consider necessary, subject to my right to royalty as hereinbefore stated

3 That in respect of any Hindi translation of any of my works heretofore made and published with or without my

permission I hereby give you full power and authority to negotiate or deal with the publishers in such way as you may think fit and if in any case you should be able to realise any money from them on my behalf you will pay me same *deducting 5 per cent thereof which you shall be entitled to* retain for your trouble

4. I do hereby declare that to the best of my knowledge there is no valid and binding agreement now subsisting between myself and anyone else for the publication of any Hindi translation of my works in Bengali If any such agreement should come to light hereafter I undertake to do all I can legally to revoke the same

the 4th May, 1929 Sd RABINDRANATH TAGORE

6, Dwarkanath Tagore St,
Calcutta

साधारण जनताका मासिक पत्र

आपका साथी (Comrade)

वार्षिक मूल्य ६)



सम्पादक—बनारसीदास चतुर्वेदी   सञ्चालक—रामानन्द चट्टोपाध्याय

'विशाल-भारत' आपका गुरु नहीं, उपदेशक नहीं, वह आपका साथी है। वह इस बातका दावा नहीं करता कि वह किसी भी तरहसे साधारण जनतासे ऊँचा है। देखिये, पूज्य प० महावीरप्रसादजी द्विवेदी अपने पत्रमें क्या लिखते हैं —

"आप अपने पत्रका सम्पादन बड़ी योग्यतासे कर रहे है। उसमें मनोरंजन और ज्ञान-वर्धनकी यथेष्ट सामग्री रहती है। आपको बधाई !"

'भारतमें अंग्रेजी राज्य'के लेखक श्रीयुत सुन्दरलालजी अपने पत्रमें लिखते हैं —

"यह बड़े दु:खकी बात है कि शिक्षित हिन्दी-भाषा-भाषियोंको या तो पत्र पत्रिकाएँ पढनेकी आदत नहीं, या जो पढ़ते हैं उनमेंसे अधिकांशकी रुचि काफी गिरी हुई है। यहा तक कि दुर्भाग्यवश हिन्दीके अधिकांश पत्र-पत्रिकाएँ भी उसी पतित रुचिको सन्तुष्ट करनेका प्रयत्न करती हैं, और जो थोड़े बहुत लोग अच्छा साहित्य पढ़ते भी है, वे अंग्रेजीमें पढ़ते हैं। 'विशाल भारत' इस समय हिन्दीके उन इने-गिने पत्रोंमेंसे है, जो सुशिक्षित से सुशिक्षित मनुष्यके लिये उपयोगी और जो उच्च से उच्च रुचि

रखनेवालोंको भी रुचिकर हो सकता है। मेरी रायमें 'विशाल-भारत' की सफलता हिन्दी पढ़नेवालोंकी रुचिकी उच्चताका एक पैमाना है।"

डा० सुधीन्द्र बोस, एम० ए०, पी-एच० डी० (अमेरिका) लिखते हैं —" 'विशाल-भारत' अत्यन्त महत्वपूर्ण पत्र है। उसका दृष्टिकोण उदार है। 'विशाल-भारत' अपने ढंगका एक निराला ही पत्र है। हिन्दुस्तानमें इसके कम-से-कम १० लाख पाठक होने चाहिये, अमेरिकामें तो इस तरहके उच्चकोटिके पत्रको दस लाख पाठक जरूर मिल जाते।"

श्री वियोगी हरि लिखते हैं —" 'विशाल-भारत' देखकर-मनोमुकुल प्रफुल्ल हो गया। अपने ढंगका यह पत्र हिन्दी-साहित्यमें निस्सन्देह प्रथम और अनुपम है।"

श्री लक्ष्मीधर वाजपेयी लिखते हैं —' 'सभी बातोंमें 'विशाल-भारत' हिन्दी-संसारमें अद्वितीय है।"

"आज" लिखता है —"लेखोंके विषयोंका चुनाव देखकर विश्वास होता है कि 'विशाल-भारत' का हिन्दी-संसारमें एक विशेष स्थान होगा, जिसकी पूर्तिकी आवश्यकता थी। चित्रोंका चुनाव भी विशेषता-युक्त है।"

"प्रताप" कहता है —" 'विशाल-भारत' हिन्दीके वर्तमान मासिक पत्रोंमें सबसे निराला निकला। लेखोंका चयन और सम्पादकीय विचार सुन्दर और विद्वत्तापूर्ण हैं। हिन्दीमें राजनीति-प्रधान एक ऐसे मासिक पत्रकी आवश्यकता थी, और वह आवश्यकता इस पत्रने पूरी कर दी।"

"त्याग-भूमि" लिखती है —" 'विशाल-भारत' सुरुचि, सुन्दरता, प्रौढ़ता और स्वच्छतामें हिन्दीके सर्वश्रेष्ठ पत्रोंसे टक्कर ले लेता है। विषयोंकी विविधतापर राष्ट्रीयता और युग-धर्मकी छाप है। रंगीन चित्रोंकी उत्तमता, सुरुचि आदिके सम्बन्धमें तो कहना ही क्या है? लेखोंके चुनावमें यहाँसे वहाँ तक बनारसीदासजीकी आत्मा प्रतिबिम्बित दिखाई पड़ती है।"

"कर्मवीर" लिखता है :—" 'विशाल-भारत' हमें अपनी उसी विशालताका पुन स्मरण दिलाता है—हमारी आत्म-विस्मृतिको ठोकर लगाकर कहता है—'आत्मान विद्धि'। सभी लेख जानकारीसे भरे, सुरुचिपूर्ण और स्फूर्तिदायक हैं।"

"तरुण राजस्थान" कहता है —"भारतके भिन्न-भिन्न भाग—महाराष्ट्र, गुजरात, तैमिल तथा बगाल आदिमें साहित्य, सगीत, कला, शिक्षा, विज्ञान आदिकी उन्नतिके लिये होनेवाले प्रयत्नोंको हिन्दी-जगत्‌के सम्मुख लाने, प्राचीन भारतीय उपनिवेश—जावा, सुमित्रा आदिके विषयमें जनतामें ज्ञान फैलाने एव आधुनिक फिजी मारिशश आदि उपनिवेशोंके साथ मातृभूमिके सम्बन्धको दृढ करने, भारतवर्षकी सच्ची आत्मा—ग्रामीण जनताकी उन्नतिके लिये उद्योग करने, भूले हुए साहित्य-सेवियोंकी स्मृति-रक्षार्थ प्रयत्न करने, भारतीय युवक-आन्दोलनको प्रोत्साहन देने और महिला-समाजकी शक्ति-भर सेवा करनेके विशाल उद्देश्यको लेकर इस ('विशाल भारत') का जन्म हुआ है।"

मगानेका पता.—

"विशाल-भारत" पुस्तकालय,
९१, अपर सरकूलर रोड,
कलकत्ता।